Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 47 • 25 अगस्त - 31 अगस्त, 2025 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 23-08-2025 • पेज 24 • ₹ 10 रुपये

क्रोध

क्रोध मांहे हलफलिया,
जांणे भाड मां सूं चिणो उछलियो।

क्रोध में व्यक्ति ऐसे उछलता है जैसे भाड़ से चना।

– आचार्यश्री भिक्षु

परिग्रह बन सकता है भय का कारण : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

स्वयं को ही भोगना होता है अपना कर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 22

Address Here

त्याग से करें परिग्रह का परिसीमन : आचार्यश्री महाश्रमण

भारत सरकार द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 105वें जन्मोत्सव पर जारी स्मारक सिक्के का हुआ विमोचन

कोबा, गांधीनगर।
17 अगस्त , 2025

कोबा स्थित प्रेक्षा विश्व भारती के वीर भिक्षु समवसरण में अध्यात्म जगत के महासूर्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम पर आधारित अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अध्यात्म शास्त्र में अपरिग्रह की बात कही गई है। पदार्थों के बिना जीवन चलाना कठिन है और साधना के लिए त्याग तथा संयम की आवश्यकता होती है। साधु के लिए तो अपरिग्रह महाव्रत है। अकिंचन साधु अपने पास न तो रुपया–पैसा रखता है और न ही एक इंच जमीन का मालिक होता है। यही साधु की अपरिग्रह साधना है। कपड़े, पात्र आदि कुछ धर्मोपकरण रखे जा सकते हैं, पर उनमें भी मोह या आसक्ति नहीं होनी चाहिए। यही साधु का आकिंचन्य है। जो अकिंचन बन जाता है, वही वास्तव में दुनिया का बड़ा व्यक्ति कहलाता है। जिसके पास परिग्रह और ममत्व है, वह भले ही संसार की दृष्टि में अच्छा हो, पर अध्यात्म की दृष्टि से ऊँचा नहीं माना जाता। जब पदार्थ और उसके साथ मूर्च्छा दोनों मिल जाते हैं तो परिग्रह पक्का हो जाता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि जो लोग परिग्रह रखते हैं और पदार्थों में मोह व ममत्व रखते हैं, वे परिग्रही कहलाते हैं। परिग्रह के लिए व्यक्ति हिंसा, हत्या, लूटपाट तक कर बैठता है। यदि व्यापार में पारदर्शिता, ईमानदारी और सत्यवादिता हो तो वह भी पवित्रता की श्रेणी में आ सकता है। पर जहाँ लोभ, मोह और मूर्च्छा होती है, वहाँ व्यक्ति झूठ बोल देता है, छल–कपट कर लेता है, चोरी कर लेता है और यहाँ तक कि हत्या तक कर देता है। इस प्रकार परिग्रह हिंसा का कारण बन जाता है। जैसे 'अहिंसा परमो धर्मः' कहा जाता है, वैसे ही एक दृष्टि से 'अपरिग्रहः परमो धर्मः' भी कहा जा सकता है।

गृहस्थ जीवन में धन रखना आवश्यक होता है, परंतु यह भी देखना चाहिए कि धन अर्जन का साधन शुद्ध है या अशुद्ध। न्याय, नीति और नैतिकता से अर्जित धन ही वास्तविक अर्थ है। अन्याय या अनीति से कमाया गया धन केवल अर्थाभास है। व्यक्ति को अर्थाभास से बचने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में प्रामाणिकता और ईमानदारी आ जाए तो वह भी कुछ अंशों में अपरिग्रह की साधना है।

जैन श्रावक के बारह व्रतों में पाँचवाँ व्रत है – इच्छा परिणाम व्रत और सातवाँ व्रत है – भोगोपभोग परिमाण व्रत। धन होने पर भी व्यक्तिगत भोग में संयम रखना चाहिए। पहले धन अर्जन में अनैतिकता न हो – यह इच्छा परिणाम, और फिर धन अर्जन के पश्चात् भोग में संयम रखना तथा अर्जित धन के प्रति मोह व ममत्व को घटाना या समाप्त करना – यह अनासक्ति है।

मंगल प्रवचन के पश्चात् जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान के तत्वावधान में भारत सरकार द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 105वें जन्मोत्सव पर जारी स्मारक सिक्के का विमोचन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति बच्छराज दुगड़, जैन विश्व भारती अध्यक्ष अमरचन्द लुंकड़, अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य सुनील सिंघी एवं जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

(शेष पेज 21 पर)

संवत्सरी महापर्व

संवत्सरी के पावन अवसर पर गत वर्ष में हुई ज्ञात अज्ञात भूलों हेतु बारम्बार खमतखामणा

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 अगस्त - 31 अगस्त, 2025

अध्यात्म में स्थापित होकर लें नश्वर शरीर का उत्कृष्ट लाभ : आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के त्रिदिवसीय 18वें राष्ट्रीय अधिवेशन का हुआ आयोजन

कोबा, गांधीनगर।
16 अगस्त, 2025

आगमवेत्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि जैन तत्त्व विद्या में शरीर के पाँच प्रकार बताए गए हैं — औदारिक शरीर, वैक्रिय शरीर, आहारक शरीर, तैजस शरीर और कार्मण शरीर। अध्यात्म का दर्शन यह है कि आत्मा और शरीर दोनों अलग-अलग हैं। दोनों मिक्स हो सकते हैं, परन्तु दोनों का अस्तित्व, सत्ता अलग-अलग होती है। हमारी पूरी दुनिया में दो ही तत्त्व हैं — जीव और अजीव। सिद्ध भगवान विशुद्ध जीव हैं। पुद्गलास्तिकाय जैसे पदार्थ, पाटा आदि विशुद्ध अजीव हैं। प्राणी जैसे मनुष्य, कीड़े-मकौड़े आदि जीव-अजीव का मिश्रित रूप हैं। इस प्रकार तीन चीजें हो जाती हैं — शुद्ध जीव, शुद्ध अजीव और जीव-अजीव का मिश्रित रूप।

पाँच शरीरों में से हर मनुष्य के पास कम से कम तीन शरीर तो होते ही हैं — हाड़, मांस, खून से बना यह स्थूल शरीर औदारिक शरीर कहलाता है। यह शरीर दृश्य है। दूसरा सूक्ष्म शरीर तैजस शरीर और तीसरा सूक्ष्मतर शरीर कार्मण शरीर। व्यक्ति का जीवन पूरा होता है तो औदारिक शरीर तो यहाँ छूट जाता है, परन्तु तैजस और कार्मण शरीर अगले जन्म में भी साथ जाते हैं। कोई-कोई मनुष्य के साथ वैक्रिय शरीर भी हो सकता है और कोई-कोई साधु-संत पुरुष के पास आहारक शरीर की स्थिति भी हो सकती है। पाँच शरीर में तीन शरीर औदारिक, वैक्रिय और आहारक स्थूल शरीर हैं।

औदारिक शरीर की एक विशेषता यह है कि मनुष्य को केवल ज्ञान होगा तो इस शरीर से ही होगा और जीव मोक्ष में जाएगा, वह इस शरीर को धारण करने वाला ही जाएगा।

'आयारो' में इस शरीर (औदारिक) के बारे में कहा गया है कि इस रूप को, इस शरीर को देखो — यह कैसा है? इसका भेद होने वाला है, यह शरीर नष्ट होने वाला है, विनाशधर्मा है, अनित्य, अशाश्वत है। आत्मा शाश्वत है, आत्मा अछेद्य है, अकाट्य है, अभेद्य है। आत्मा इतनी बड़ी है कि पूरे लोक में फैल सकती है। एक कुंथु जैसे प्राणी के छोटे से शरीर में भी वही आत्मा संकुचित हो जाती है। वही कुंथु यदि मरकर हाथी के रूप में पैदा हो तो कुंथु की आत्मा हाथी के शरीर में फैल जाएगी। आत्मा में संकोच और विकोच करने का सामर्थ्य होता है।

शरीर विनाश को प्राप्त होता है — इस स्थिति को जानकर व्यक्ति यह सोचे कि शरीर रुग्ण हो सकता है, शरीर की शक्ति का ह्रास हो सकता है तो मैं इस शरीर से धर्म की, अध्यात्म की साधना कितनी कर सकता हूँ और कैसे कर सकता हूँ? गृहस्थ जीवन में भी मोक्ष की ओर कैसे गति, प्रगति की जा सके। इसके लिए जितना व्यक्ति ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना करेगा, वह मोक्ष की ओर आगे बढ़ेगा। नव तत्त्वों को समझने का प्रयास करना चाहिए और कषायों को कृश, प्रत्तनु करने का प्रयास करना चाहिए। संवर और निर्जरा की साधना अच्छी होगी तो व्यक्ति मोक्ष की ओर भी आगे बढ़ सकेगा।

'तेरापंथ प्रबोध' की आख्यानमाला के क्रम को आगे बढ़ाने के पश्चात् 'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम' का मंचीय कार्यक्रम हुआ। टीपीएफ का 18वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन प्रारंभ हुआ। इस संदर्भ में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीशकुमारजी ने भावाभिव्यक्ति दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत माण्डोत, मुख्य न्यासी एस. के. सिंघी ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुख्यमुनि श्री ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि अपनी बुद्धि का उपयोग जिन धर्म के आसेवन में करें। श्रद्धा संपन्न बनें, ज्ञान संपन्न बनें, चारित्र संपन्न बनें।

आचार्य प्रवर ने इस संदर्भ में पावन आशीष प्रदान करते हुए कहा कि ज्ञान पर आवरण होता है तो व्यक्ति अपने अच्छे-बुरे की पहचान भी नहीं कर पाता। कई लोगों में ज्ञान का बहुत अच्छा विकास होता है। पढ़ने वाले योग्यता के साथ डिग्री भी प्राप्त कर लेते हैं। ज्ञान में तर्क होना चाहिए और अनुशासन में सतर्क होना चाहिए। टीपीएफ बौद्धिक लोगों का संगठन है। यह समाज की एक शक्ति है। प्रोफेशनल लोग अपने कार्य के साथ धार्मिकता के क्षेत्र में भी अपना विकास करें और आगे भी अच्छा कार्य करते रहें।

ऋतु चौरड़िया को 'टीपीएफ गौरव' अलंकरण प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ के महामंत्री मनीष कोठारी ने किया।

परिग्रह बन सकता है भय का कारण : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
18 अगस्त,, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि परिग्रह परिग्रही व्यक्ति के लिए महान भय का कारण बनता है। जहाँ परिग्रह है, वहाँ भय भी जन्म ले सकता है।

धन की उपलब्धि के बाद यह भय मन में आ सकता है कि कहीं धन छीना न जाए। इस प्रकार परिग्रह के साथ मूर्च्छा और भय दोनों का संबंध जुड़ जाता है।

आचार्यश्री ने फरमाया कि परिग्रह तीन प्रकार का होता है—शरीर, कर्म और पदार्थ। शरीर के प्रति मोह हो तो शरीर भी परिग्रह का रूप ले लेता है। कर्म से आसक्ति परिग्रह कहलाती है। पदार्थों के प्रति मोह भी परिग्रह है। जब तक परिग्रह, मोह और आसक्ति का त्याग नहीं होगा, तब तक आत्मा की प्रगति मोक्ष की दिशा में नहीं हो सकती। साधु यदि जप और ध्यान करता है, तो वह उत्तम है; लेकिन उससे भी बड़ा साधन है—परिग्रह और मोह का त्याग। इसी कारण अपरिग्रह का नियम साधु के जीवन की महान साधना है।

आयारो में कहा गया है कि परिग्रह और मूर्च्छा अनेक जीवों के लिए महान भय का कारण बन जाते हैं। साधु यदि रुपये-पैसे, भौतिकता और शरीर के मोह से बचकर रहे, तो वही उसकी सबसे बड़ी साधना है। भौतिकता संसार और जन्म-मरण के बंधन की ओर ले जाती है, जबकि आध्यात्मिकता मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करती है।

दीक्षा लेकर संयम, तप और अध्यात्म का जीवन जीने वाला साधु राजा और देवताओं के लिए भी वंदनीय बन जाता है। परिग्रह त्यागने वाला वंदनीयता को प्राप्त करता है, जबकि परिग्रह से आसक्त रहने वाला वंदनीयता से वंचित रह जाता है। इसलिए साधु के लिए परिग्रह का त्याग अनिवार्य है।

मंगल प्रवचन के उपरांत गुरुदेव ने तेरापंथ प्रबोध आख्यानमाला के क्रम को आगे बढ़ाया। आचार्यश्री के मंगल प्रवचन व आख्यान के उपरान्त साध्वीवर्या साध्वी श्री सम्बुद्धयशाजी ने भी समुपस्थित जनता को उद्बोधित किया। अहमदाबाद के पूर्व मेयर गौतमभाई शाह ने आचार्यश्री के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

साधना के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण सूत्र है अनासक्ति का भाव : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
13 अगस्त , 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, ज्योतिपुंज, युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जो व्यक्ति आसक्ति में प्रवृत्त होता है, पदार्थों के प्रति राग व मोह का भाव रखता है, वह व्यक्ति बार-बार दुःख को प्राप्त होता है।

आसक्ति बंधन का कारण है और आसक्ति से मुक्ति की साधना जीव के मुक्ति का साधन है। साधना के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है कि अनासक्ति का भाव रखो। भोजन करना है तो अनासक्ति का भाव रखो, अमनोज्ञ की ज्यादा निंदा भी नहीं करनी चाहिए। प्रशंसा आदि से बचने का प्रयास करना चाहिए। अमनोज्ञ पदार्थ आ जाए तो उसमें भी समता का भाव रखना चाहिए। जहाँ कहीं भी आसक्ति का भाव आता है, व्यक्ति बंधन के जाल में जकड़ता जाता है।

साधु के जीवन में तो संयम की साधना रहनी ही चाहिए, गृहस्थ जीवन में भी संयम, सादगी व अनासक्ति का अभ्यास करते रहना चाहिए। व्यवसाय आदि में नैतिकता रखो, हिंसा से बचो, नशे से बचो, सांप्रदायिक असहिष्णुता मत करो आदि ये नियम धर्म से जुड़े हुए हैं। अणुव्रत में संयम और नैतिकता की बात होती है। प्रेक्षाध्यान में भी वीतरागता की बात है - न प्रियता, न अप्रियता, न राग, न द्वेष। राग-द्वेष मुक्त रूप से देखना। धर्म और अध्यात्म की साधना राग-द्वेष मुक्ति की साधना है, अनासक्ति की आराधना है। अनासक्ति रहने पर ही इन्द्रियों का संयम रह सकता है। पाँचों इन्द्रियों का संयम रखना बहुत अच्छी साधना है। अनासक्ति में रहते हुए व्यक्ति कभी परम सुख को भी प्राप्त कर सकता है।

पावन पाथेय के उपरान्त शांतिदूत आचार्यश्री ने आचार्यश्री तुलसी द्वारा रचित 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यानमाला के क्रम को आगे बढ़ाया।

(शेष पेज 21 पर)

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का भव्य उद्घाटन समारोह

टी दासहल्ली।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद टी. दासरहल्ली द्वारा प्रथम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का भव्य उद्घाटन जैन संस्कार विधि से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। संस्कारक राकेश दूधोड़िया एवं विकास बाँठिया ने मंगल भावना यंत्र स्थापित कर जैन संस्कार विधि से विभिन्न मंगल मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम का संपादन करवाया।

दूसरे चरण में मंचीय कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र एवं विजय गीत से हुई। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने किया। परिषद अध्यक्ष कन्हैयालाल गांधी ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि तेयुप दासरहल्ली का यह प्रथम डायग्नोस्टिक सेंटर समाजजन के स्वास्थ्य एवं जनमानस के कल्याण में मील का पत्थर सिद्ध होगा। संयोजक राकेश दक एवं सह-संयोजक मुकेश चावत के श्रम की सराहना करते हुए उन्होंने सभी प्रायोजक परिवारों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

उद्घाटन कर्ता शायर देवी ने परिषद को मानव सेवार्थ गतिविधियों में प्रेरक एवं स्थायी कार्यों के लिए शुभकामनाएं दीं। जय तुलसी फाउंडेशन के मुख्य न्यासी एवं महासभा के पूर्व अध्यक्ष हीरालाल मालू ने अपने प्रभावशाली वक्तव्य से सभी को प्रभावित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने कहा कि "दासरहल्ली परिषद संख्या से छोटी अवश्य हो सकती है, परंतु इसके कार्य बड़े हैं।" राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रथम पवन मांडोत ने कहा कि वर्षों का सपना आज कन्हैयालाल गांधी के नेतृत्व में पूरा हुआ है और भविष्य में एक और ATDC का शुभारंभ होगा।

युवा गौरव, अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि विमल कटारिया ने दासरहल्ली परिषद की मेहनत व तत्परता की सराहना करते हुए कहा कि यह परिषद सदैव हर कार्य को पूरी निष्ठा से करती है। सह-प्रभारी ललित मेहर, शाखा प्रभारी गौतम खाब्या एवं सभा ट्रस्ट अध्यक्ष भगवतीलाल मांडोत ने भी परिषद को शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में उद्घाटन कर्ता, मुख्य प्रायोजक, गोल्डन प्रायोजक एवं सिल्वर प्रायोजक परिवारों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर अभातेयुप परिवार, एटीडीसी राष्ट्रीय सह प्रभारी आलोक छाजेड़, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारीगण, श्रावक-श्राविकाओं की व्यापक उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री शुभम बाबेल ने किया तथा आभार संयोजक राकेश दक एवं मुकेश चावत द्वारा व्यक्त किया गया।

'मातृ देवो भव – पितृ देवो भव' कार्यक्रम आयोजित

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में अमृत सभागार के सुरम्य परिसर में विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति में 'मातृ देवो भव – पितृ देवो भव' का भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। राजेश बाफना ने बताया, "माँ ही मंदिर, माँ ही पूजा, पिता से बढ़कर कौन है दूजा" इस विषय पर मार्मिक उद्बोधन देते हुए साध्वी अणिमाश्रीजी ने कहा – जिसकी वाणी में सत्य, आँख में शिव और हाथों में सुन्दरता है, सत्य, शिव, सुन्दर की जीवन्त मूरत है माँ।

सरवर, तरवर और संत की तरह बच्चों पर अपना हर सुख लुटा देती है माँ। पृथ्वी की तरह सहनशील है माँ। उसकी ममता सागर की तरह अथाह है। 'माँ' शब्द बीज की तरह छोटा-सा है, मगर उसका कर्तृत्व बरगद की तरह विशाल है। माँ अपने आप में एक सम्पूर्ण शास्त्र है।

माँ के ममत्व की एक बूंद के आगे अमृत का क्षीर समंदर भी बौना लगता है। चाहे बेटा सारी पृथ्वी का सम्राट ही क्यों न बन जाए, पर माँ के उपकारों का कर्ज नहीं चुका सकता। उस कर्ज से यत्किंचित हल्का होने के लिए माँ के धर्म-ध्यान में सहयोगी बनो, साधु-संतों की सेवा में सहयोग करो, और आध्यात्मिक परिवेश में रहने का अवसर दो। लायक संतान बनकर माँ-बाप के उपकारों को कभी मत भूलना।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने पिता की गरिमा को व्याख्यायित करते हुए कहा – जीवन रूपी नाटक के दो महत्वपूर्ण पात्र हैं – माता और पिता। पिता उस शख्स का नाम है जिसे न दिन दिखाई देता है, न रात; उसे तो सिर्फ परिवार के हालात दिखाई देते हैं। पिता नीम के पेड़ की तरह होता है, जिसके पत्ते भले ही कड़वे हों, पर छाया हमेशा ठंडी ही देता है। अपनी तकदीर को संवारने के लिए खुदा रूपी माँ-बाप की खिदमत करो। माँ-बाप से बढ़कर कोई नहीं। माँ प्रेम, स्नेह और संस्कार देने वाली, और पिता हिम्मत, शक्ति, मान-सम्मान दिलाने वाले धरोहर होते हैं।

साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने माँ की ममता को उजागर करने वाली भावपूर्ण कविता प्रस्तुत की। साध्वी समत्वयशाजी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 अगस्त - 31 अगस्त, 2025

संघ प्रभावक विदेश प्रवास में हुयी धर्माराधना

बैंकाक।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या डॉ. समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा जी व डॉ. समणी मानसप्रज्ञा जी का बैंकाक में छः दिनों का प्रवास अत्यधिक संघ प्रभावक रहा। सकल जैन समाज में तेरापंथ की प्रभावना हुई। प्रथम कार्यक्रम तेरापंथ समाज के बीच हुआ। बैंकाक में तेरापंथ के करीब तीस परिवार हैं। जैन समाज के लगभग 400 परिवार हैं।

प्रथम कार्यक्रम में समणीजी ने तेरापंथी भाई-बहनों को विशेष रूप से तेरापंथ के संस्कारों को जागृत करने व गुरु श्रद्धा पर सुदृढ़ रहने की प्रेरणा दी।

द्वितीय दिन विशेष रूप से लोगस्स के रहस्यों को चित्रों के माध्यम से सरल भाषा में समझाया। डा. समणी ज्योतिप्रज्ञा ने कहा लोगस्स की स्तुति से सम्यक्त्व पुष्ट होता है। समणी जी ने लोगस्स के विभिन्न बिन्दुओं को सविस्तार समझाया। कार्यक्रम में सकल जैन समाज की उपस्थिति होने से लोगों के मन में तेरापंथ के प्रति आकर्षण का भाव पैदा हुआ। समणी मानसप्रज्ञा जी ने कहा सत्संगति से ऊर्ध्वारोहण होता है।

तृतीय दिन भगवान महावीर की आरती से कार्यकम प्रारंभ हुआ। समणी मानसप्रज्ञा जी ने क्षणिक इंद्रिय सुख, सापेक्ष सुख को छोड़ने की तथा शाश्वत, अतीन्द्रिय, निरपेक्ष सुख की चर्चा की। डा. समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने जैन धर्म की नींव : नव तत्वों को सविस्तार समझाया। आपने कहा- जीव का चिंतन अजीव की ओर है। इसलिए उसे मोक्ष पहुंचने में बहुत लंबा समय लगता है। आपने कहा- हमें नौ तत्वों को समझना है और संवर व निर्जरा पर ध्यान केन्द्रित करना है।

15 अगस्त का कार्यक्रम संस्कृत स्टडीज सेंटर शिल्पकार्न यूनिवसिर्टी बैंकाक में समायोजित था। डा. समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने जैन साधुओं की कठोर जीवन चर्या, भगवान महावीर के त्याग व संयम को बताते हुए विशेष रूप से कर्म सिद्धान्त को विश्लेषित किया। कार्यक्रम में यूनिवसिर्टी के संस्कृत विभागाध्यक्ष पद्मश्री से सम्मानित चीरा पाथ विशेष रूप से उपस्थित थे। जिज्ञासा-समाधान का क्रम काफी लाभप्रद रहा।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने श्वास प्रेक्षा पर चर्चा की। आपने श्वास क्या, श्वास का आलंबन क्यों? श्वास के शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक लाभ, श्वास से संस्कार व आदतों में परिवर्तन आदि महत्वपूर्ण मुद्दों पर जानकारी दी। कार्यक्रम समाप्ति से पूर्व श्रोताओं ने श्वास प्रेक्षा का प्रेक्टिकल प्रयोग भी किया।

अगले सायंकाल पैंसठिया छंद अनुष्ठान किया गया। सफेद वस्त्रों में भाई एवं लाल वस्त्रों में बहनें अनुष्ठान कर रहे थे। लगभग 50 युगल तथा 100 अन्य अनुष्ठान कर्ता, कुल 200 की उपस्थिति रही। डा. समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने – पैंसठिया छंद की महत्ता के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

सभी ने एक घंटे तक पूरी एकाग्रता से मधुर संगान के साथ पैंसठिया मंत्र का अनुष्ठान किया। अगले दिन जैन समाज की प्रार्थना पर उपसर्गहर स्तोत्र का अनुष्ठान करवाया गया। ज्ञानशाला के नन्हें-मुन्नों की प्रस्तुति भी रही। राजेन्द्र खिवेसरा, अजय, नीलम व कर्मठ कार्यकर्ता व बैंकाक यात्रा संयोजक पद्मश्री गेलड़ा ने अपने विचार रखते हुए समणीजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। स्थानकवासी समाज के निवेदन पर समणी जी का एक कार्यक्रम स्थानक में भी रहा। जिसमें समणी मानसप्रज्ञाजी ने धर्म को उत्कृष्ट मंगल बताते हुए अपनी बात रखी।

समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने 'परमात्मा बनने की राह' विषय पर अपने विचार रखे। समणी जी के सभी कार्यक्रम संभवनाथ मंदिर के विशाल हॉल में आयोजित थे। कार्यक्रम की सफलता में विशेष रूप से पद्मश्री गेलड़ा व शीतल जैन का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर अर्पिता बांठिया ने अठाई की तपस्या भी की।समणीजी की प्रेरणा से लगभग 35 भाई-बहनों ने ॐ भिक्षु के सवा लाख जप का संकल्प लिया।

शोध, शिक्षा और चमत्कार : 'सुपर ब्रेन' क्षमता का प्रदर्शन

मंडी, हिमाचल प्रदेश।

आईआईटी मंडी में नए विद्यार्थियों के स्वागत कार्यक्रम में विशेष आकर्षण रहा। अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के सी. जैन को नवागत प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों हेतु मुख्य वक्ता के रूप में संबोधन के लिए आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर वे अपने दो रिसर्च एसोसिएट्स के साथ पहुँचे। साथ ही, सूरत से रेनू नाहटा और उनके दो छात्र भी आए, जिन्होंने प्रेक्षा ध्यान के प्रयोगों के माध्यम से आँखें बंद करके वस्तुओं की पहचान, पेंटिंग और पज़ल हल करने की विशिष्ट क्षमता अर्जित की है। कार्यक्रम के दौरान इन छात्रों ने लाइव डेमोंस्ट्रेशन प्रस्तुत किया, जिसे देखकर आईआईटी मंडी के विद्यार्थी चकित रह गए।

दिन में आईआईटी मंडी के निदेशक प्रो. लक्ष्मीधर बेहरा और उनकी शोध टीम के साथ लगभग डेढ़ घंटे की विस्तृत बैठक हुई। इसमें दो संयुक्त शोध परियोजनाओं पर चर्चा हुई— पहली, मानसिक रूप से कमजोर बच्चों पर प्रेक्षा ध्यान के लाभ; दूसरी, विद्यालयों में संचालित सुपर ब्रेन कार्यक्रम पर अध्ययन। संस्थान ने इन विषयों पर सहयोग के लिए सिद्धांततः सहमति दी। प्रो. बेहरा, जो वैज्ञानिक होने के साथ-साथ आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी रखते हैं, ने इस तकनीक के विस्तार की संभावना पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि बिना किसी इंद्रिय का उपयोग किए दूरस्थ वस्तुओं की पहचान संभव हो सके, तो यह एक क्रांतिकारी उपलब्धि होगी।

रेणु नाहटा ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए आश्वस्त किया कि एक वर्ष के भीतर इसका प्रदर्शन संभव है। अणुव्रत न्यास की ओर से घोषणा की गई कि जो भी विद्यार्थी इस क्षमता को विकसित कर सकेगा, उसे 1,00,000 का पुरस्कार दिया जाएगा। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए के. सी. जैन ने कहा कि उनका लक्ष्य केवल "बड़ा पैकेज पाने" तक सीमित न रहे, बल्कि "बड़ा पैकेज देने" की दिशा में होना चाहिए। उनके दृष्टिकोण में यह परिवर्तन उनकी सफलता के नए आयाम तय कर सकता है।

उन्होंने ज़ोर दिया कि सफलता केवल बौद्धिक या इंद्रिय विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि इंद्रियों और बुद्धि से परे विकास की असीम संभावनाएँ हैं। तभी शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण हो पाता है जब हम इन संभावनाओं पर कार्य करें। छोटे-छोटे बच्चों द्वारा आँखें बंद कर प्रस्तुत किए गए प्रयोग इसका एक छोटा सा उदाहरण मात्र है।

कार्यक्रम ने छात्रों में जिज्ञासा और उत्साह दोनों को जन्म दिया, साथ ही अनुसंधान और मानव क्षमताओं की नई संभावनाओं पर चर्चा के नए रास्ते खोले।

शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सुरक्षा का महनीय महामंत्र – भक्तामर स्तोत्र

नई दिल्ली।

'शासनश्री' साध्वी संघमित्रा जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद दिल्ली, तेरापंथ सभा साउथ दिल्ली एवं अन्य सभाओं के संयुक्त तत्वावधान में आस्था भवन, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली में विघ्न-बाधा निवारक शांति महानुष्ठान एवं भक्तामर स्तोत्र जप अनुष्ठान का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिल्ली भर से सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

साध्वी संघमित्रा जी ने अपने प्रवचन में कहा कि भक्तामर स्तोत्र भगवान आदिनाथ की स्तुति है। इसके पाठ से मन की शांति, सकारात्मकता और आध्यात्मिक विकास होता है। भक्तामर एक शक्तिशाली महामंत्र है जो नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। यह हर प्रकार से आनंद और मंगल प्रदान करने वाला है।

साध्वी शीलप्रभा जी ने कहा कि *भक्तामर स्तोत्र सर्वकार्य सिद्धिदायक है। आचार्य श्री मानतुंग द्वारा रचित यह स्तुति न केवल सभी प्रकार की मनोकामनाओं की पूर्ति करती है, बल्कि मन को शांत करने, आध्यात्मिक सुरक्षा प्रदान करने और विभिन्न रोगों के उपचार में भी सहायक मानी जाती है।

साध्वी डॉ. सूरजप्रभा जी, साध्वी समाधिप्रभा जी एवं साध्वी ओजस्वीप्रभा जी ने सामूहिक जप-अनुष्ठान का संचालन किया।

तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम अत्यंत सराहनीय रहा।

कार्यक्रम में विभिन्न संघीय संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री सहित समाज के अनेक गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

आत्मा को निर्मल-पावन बनाने तपस्या आवश्यक

नोखा।

'शासन गौरव' साध्वी राजमती जी ने कहा कि व्यक्ति कर्मबंधन करता है और पूर्व जन्मों के संचित कर्म आत्मा पर आवरण स्वरूप रहते हैं।

इन कर्मरूपी कचरों को हटाकर आत्मा को निर्मल एवं पावन बनाने का एकमात्र साधन तपस्या है। उन्होंने तपस्वी गोपाल पारख के पाँचवें मासखमण तप की अनुमोदना करते हुए कहा कि यह तप हिम्मत और गुरुनिष्ठा का अनुपम उदाहरण है।

कार्यक्रम में साध्वी वृंद एवं महिला मंडल ने तप अभिनन्दन में गीत का संगान किया।

साध्वी कुमुदप्रभा जी, प्रियंका पारख, सुनील बैद एवं मनोज पारख परिवार ने तपस्या के महत्व, मनोबल और गुरु भक्ति पर अपने विचार रखे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन साध्वी समताश्री जी ने किया।

अभिनंदन पत्र का वाचन उपाध्यक्ष लाभचन्द्र छाजेड़ ने किया।

तपस्वी गोपाल पारख ने कहा कि गुरुदेव एवं शासन गौरव की प्रेरणा से ही उन्होंने यह तप पूरा किया है।

कार्यक्रम का कुशल संचालन उपासक अनुराग बैद ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

असाडा। साध्वी मेघप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। साध्वी मेघप्रभा जी ने सब युवकों को सजग रहकर धर्मसंघ में कुछ कर दिखाने को कहा और युवकों को अपने संघ के प्रति दायित्व बताए। आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष पर आचार्य भिक्षु के गुणों को जीवन में उतारने के लिए कहा। साध्वी भास्करप्रभा जी ने युवकों को जगाने के लिए गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण आयुषी भंसाली ने किया। तेरापंथ युवक परिषद के सभी युवकों ने मिलकर विजय गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेशकुमार बालड और तेरापंथ महिला मंडल मंत्री ममता देवी भंसाली ने सबका स्वागत और अभिनंदन किया। तेरापंथ युवक परिषद के पूर्व अध्यक्ष हितेश बालड और धनराज ओस्तवाल ने तेरापंथ युवक परिषद के नव मनोनीत अध्यक्ष सुशील बालड और पूरी कमेटी को शपथ ग्रहण करवाई। तेरापंथ युवक परिषद परामर्शक प्रवीण संकलेचा और सुरेशकुमार बालड ने तेरापंथ युवक परिषद की पूरी टीम को दुपट्टा पहना कर स्वागत किया। बाहर से पधारे धनराज ओस्तवाल, नेमीचंद चोपड़ा, मुकेश चोपड़ा का गांव के प्रबुद्ध जनों ने दुपट्टा पहन कर स्वागत और अभिनंदन किया। कार्यक्रम का मंच संचालन तेरापंथ युवक परिषद से पियूष बालड ने किया।

सरदारशहर। 'शासनश्री' साध्वी सरोज कुमारीजी के सान्निध्य में सत्र 2025-26 के लिए तेरापंथ युवक परिषद, सरदारशहर का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से मनाया गया। लोकेश सेठिया एवं धीरज छाजेड़ द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के साथ शपथ ग्रहण संस्कार की विधि पूर्ण की गई। तेयुप पूर्व अध्यक्ष लोकेश सेठिया ने नव निर्वाचित तेयुप अध्यक्ष मोहित आंचलिया को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसके पश्चात नव निर्वाचित अध्यक्ष मोहित आंचलिया ने अपनी टीम—उपाध्यक्ष प्रथम धीरज दुगड़, द्वितीय चंद्रप्रकाश सेठिया, तेयुप मंत्री विशाल बोरड़, सहमंत्री प्रथम अंकित छाजेड़, द्वितीय पंकज बैद, कोषाध्यक्ष निर्मल छाजेड़, संगठन मंत्री शुभम लुणिया, किशोर मंडल प्रभारी अर्हम सुराणा एवं अमित आंचलिया, किशोर मंडल संयोजक मयंक दुगड़, सह संयोजक निखिल सुराणा एवं प्रथम छाजेड़—को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। साध्वी सरोज कुमारीजी ने सभी नव निर्वाचित टीम को तेरापंथ धर्मसंघ की गरिमा के अनुरूप कार्य करने के निर्देश दिए तथा नियमित रूप से साधु-साध्वियों के दर्शन करने की प्रेरणा दी। साध्वी प्रभावनाश्रीजी, साध्वी सोमप्रभाजी एवं साध्वी चिरागप्रभाजी ने मिलकर तेयुप को जागृत करते हुए एक गीतिका प्रस्तुत की।

जोधपुर । तेरापंथ युवक परिषद जोधपुर की नवीन कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह सरदारपुरा स्थित तातेड गेस्ट हाउस में 'शासनश्री' साध्वी सत्यवतीजी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी शशिप्रज्ञाजी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ, जिसके पश्चात परिषद सदस्यों ने सामूहिक विजय गीत प्रस्तुत किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन परामर्शक सुरेन्द्र कुचेरिया ने किया। जैन संस्कारक गौरव बरमेचा एवं अभिषेक सुराणा द्वारा जैन मंत्रोच्चार के साथ शपथ विधि सम्पादित की गयी। नव-निर्वाचित अध्यक्ष अंकित चौधरी को परामर्शक राहुल सिंघवी ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। तत्पश्चात अध्यक्ष अंकित चौधरी ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की तथा विनोद सिंघवी ने समस्त कार्यकारिणी को शपथ दिलाई। घोषित कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष राकेश सेठिया और दिलीप सुराणा, मंत्री अभिषेक सुराणा, सहमंत्री मुदित तातेड एवं अमित बोहरा, कोषाध्यक्ष प्रतीक भंडारी तथा संगठन मंत्री आदर्श राज जैन रहे। सभाध्यक्ष मूलचंद तातेड, सुरेश जीरावला और महिला मंडल अध्यक्षा प्रीति सेठिया ने अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। साध्वी सत्यवतीजी ने अपने उद्बोधन में नई कार्यकारिणी को सेवा, संस्कार, संगठन के विस्तार और गुरु-निष्ठा के साथ कार्य करने का संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन निवर्तमान अध्यक्ष मितेश जैन ने किया।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

-आचार्य श्री महाश्रमण

धनार्जन हो नैतिक और न्यायपूर्ण

बीकानेर।

जिला उद्योग संघ बीकानेर द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित संगोष्ठी ‘उद्योग एवं व्यापारः एक सच्ची सेवा’ में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने अपने उद्बोधन में व्यापार जगत में नैतिकता के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आज के अर्थ-प्रधान युग में गृहस्थी के लिए अर्थ, काम और धर्म तीनों की साधना आवश्यक है, लेकिन इनमें धर्म का महत्व सर्वाधिक है। यदि धर्म नहीं है, तो अर्थ और काम शोभा नहीं देते।

ज्ञान, नैतिकता और चरित्र के महत्व पर प्रकाश डालते हुए मुनिश्री ने कहा कि वर्तमान युग में अर्थ और डिग्रियों की होड़ लगी है, जबकि सभी का एक ही लक्ष्य होना चाहिए — ज्ञान प्राप्त करना। ज्ञान के बिना डिग्री का कोई महत्व नहीं है। उन्होंने प्रेरणा दी कि हमारी वृत्तियाँ ऐसी हों, जहाँ ज्ञान को पहला और डिग्रियों को दूसरा स्थान मिले। मुनिश्री ने कहा कि धन तो चोर और डाकू के पास भी होता है, फिर भी सेठ-साहूकार व्यापारी ही कहलाते हैं। उपासना पद्धति भले अलग-अलग हो सकती है, लेकिन मानव धर्म और चरित्र धर्म एक ही है। जहाँ नैतिकता और प्रामाणिकता है, वहीं धर्म है; यदि इन्हें गौण कर दिया जाए, तो समस्याएँ पैदा हो जाती हैं।

संयमित जीवन और न्यायपूर्ण धनार्जन पर बल देते हुए मुनिश्री ने कहा कि संसार का काम हिंसा के बिना नहीं चलता, लेकिन अनर्थ हिंसा नहीं होनी चाहिए। हमारा जीवन संयममय होना चाहिए। सभी उद्योगों की अपनी-अपनी मर्यादा होती है और न्याय करने वाला ही सफल होता है। अन्यायपूर्ण तरीके से प्राप्त धन लंबे समय तक नहीं टिकता। नैतिक व्यक्तियों का सम्मान पहले भी होता था और आज भी होता है।

सफल व्यापार के लिए नैतिकता और गुणवत्ता पर बल देते हुए मुनिश्री ने कहा कि व्यक्ति धनवान, बलवान या रूपवान हो या न हो, लेकिन चरित्रवान अवश्य होना चाहिए। मन में यह भावना रहनी चाहिए कि ‘मेरे द्वारा कभी किसी का नुकसान न हो।’ उन्होंने सभी प्राणियों के साथ मित्रता रखने, व्यापार को पूरी तरह साफ-सुथरा रखने, नाप-तोल सही रखने और माल की गुणवत्ता बनाए रखने का संदेश दिया। अर्थ-प्रधान इस युग में नैतिकता और प्रामाणिकता को प्राथमिकता देनी चाहिए, न कि किसी भी तरीके से धन अर्जित करने की भावना रखनी चाहिए।

इस अवसर पर युवक रत्न राजेंद्र सेठिया ने तीन ‘फैक्ट्रियाँ’ अपने भीतर लगाने की प्रेरणा दी — दिमाग में आइस फैक्ट्री, मुँह में शुगर फैक्ट्री और दिल में प्रेम की फैक्ट्री। उन्होंने कहा कि व्यवसाय में प्रामाणिकता होने पर सफलता निश्चित है। जीवन में संतोष वृत्ति का विकास जरूरी है, अन्यथा मानसिक शांति संभव नहीं। शुद्ध साधन से ही शुद्ध साध्य की प्राप्ति हो सकती है। कार्यक्रम में मुनि श्रेयांस कुमार जी ने प्रेरणादायी गीतिका का गायन किया। इस अवसर पर जिला उद्योग संघ के अध्यक्ष द्वारका पच्चीसिया, उद्योगपति कन्हैयालाल बोथरा, आचार्य श्री तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष गणेश बोथरा, और जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गंगाशहर के मंत्री जतनलाल संचेती ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन विमल चौरड़िया ने किया।

सप्त दिवसीय बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का आयोजन

पल्लावरम।

पल्लावरम स्थित तेरापंथ भवन में मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में सप्त दिवसीय बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद चेन्नई द्वारा हुआ।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा- बारह व्रत अहिंसक समाज की संरचना का एक विस्तृत प्रारूप है। इसे शोषण मुक्त स्वस्थ समाज रचना की आचार संहिता भी कहा जा सकता है। गृहस्थ के लिए संपूर्ण हिंसा का परिहार संभव नहीं है उसके अनावश्यक हिंसा को छोड़ना ही अहिंसक समाज की संरचना में योगभूत बनना है।

मुनिश्री ने कहा कि जीवन को प्रायोगिक बनाने की एक प्रक्रिया है प्रत्याख्यान। इस विषय में भगवान महावीर ने श्रावक के लिए बारह व्रत की व्यवस्था दी। मुनिश्री ने आगे कहा- दो शब्द हैं श्रावक और अनुयायी। सामान्यतः इन्हें एक ही माना जाता है पर इनमें बड़ा अंतर है अनुयायी का अर्थ होता है पीछे चलने वाला और श्रावक का अर्थ होता है व्रत ग्रहण करने वाला। मुनिश्री ने विस्तार से अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य आदि अणुव्रतों के बारे में 7 दिनों तक समझाया।

तेरापंथ युवक परिषद चेन्नई के सह मंत्री श्रीकांत चौरड़िया ने बारह व्रत कार्यशाला की जानकारी देते हुए व्रत दीक्षा पुस्तिका के बारे में बताया।

सुखमय जीवन की बुनियाद है व्रत

पूर्वांचल कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल द्वारा भिक्षु विहार में किया गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि व्रत सुखमय जीवन की बुनियाद है। व्रत दीक्षा का अर्थ है – असत् से विरति, असंयम से विरति और संयम की ओर प्रस्थान। व्रत संतोष और शांति का साधन है। जिस प्रकार गाड़ी में ब्रेक का महत्व है, उसी प्रकार जीवन में व्रत का महत्व है।

व्रत से संकल्प शक्ति, इच्छा शक्ति और एकाग्रता का विकास होता है, जिससे तन, मन और भाव स्वस्थ रहते हैं। मुनि श्री ने आगे कहा कि भगवान महावीर ने गृहस्थ के लिए बारह व्रतों की साधना का विधान किया है। सभी श्रावक-श्राविकाओं को व्रत दीक्षा स्वीकार कर बारह व्रती बनने का संकल्प करना चाहिए। इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल के अध्यक्ष राजीव बोथरा ने स्वागत भाषण दिया तथा मंत्री सिद्धार्थ दुधेड़िया ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 अगस्त - 31 अगस्त, 2025

व्यक्ति की चाह बनाती है उसे गतिमय

किलपॉक, चेन्नई।

व्यक्ति स्वयं का जीवन जीता है। वह परिवार और समाज के साथ भी जीता है। इस जीने के साथ उसके भीतर कुछ करने और कुछ बनने की भावना का विकास होता है। यही विकास उसे ऊँचाई प्रदान करता है। व्यक्ति की चाह ही उसे गतिमय बनाती है। ये विचार मुनि मोहजीत कुमार ने भिक्षु निलयम के महाश्रमणम सभागार में आयोजित थिंक डिफरेंट वर्कशॉप में प्रकट किए।

'थिंक डिफरेंट वर्कशॉप' के तृतीय चरण में 'मैं कर्ता हूँ या कृत हूँ' विषय को प्रतिपादित करते हुए मुनि जयेश कुमारजी ने कहा कि मनुष्य स्वयं को कृत मानता है, परंतु उसने अपने कर्तृत्व से ऐसे कार्य किए, जिन्होंने उसे कर्ता की भूमिका में खड़ा कर दिया और संसार का सबसे महत्वपूर्ण प्राणी बना दिया।

उसने अपनी मेधा से अस्तित्वहीन वस्तु में भी प्राण डाल दिए और निर्जीव में भी सजीव का आभास कर लिया। किंतु आज व्यक्ति का निर्माण ही उसके ध्वंस का कारण बन रहा है और उसके कर्तृत्व के लिए चुनौती बन गया है। इसलिए आवश्यक है कि मानव अपने अस्तित्व की पहचान कर आत्मशक्ति को ऐसी दिशा में नियोजित करे, जो उसे निरंतर अपने लक्ष्य की ओर गतिशील बनाए। कार्यक्रम के दूसरे चरण में बैंगलुरु से पधारे दीक्षार्थी भाई प्रीत कोठारी के अभिनंदन समारोह का आगाज़ हुआ। कार्यक्रम में परिवारजनों की ओर से तथा महिला मंडल, किलपॉक की ओर से अभिनंदन स्वर प्रकट किए गए।

किलपॉक की सभी सामाजिक इकाइयों की ओर से दीक्षार्थी का स्वागत किया गया। इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमारजी, मुनि भव्य कुमारजी और मुनि जयेश कुमारजी ने गुरु इंगित की आराधना और साधना के लक्ष्य के साथ समर्पित रहने की प्रेरणा प्रदान की।

संक्षिप्त खबर

भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान का हुआ आयोजन

पीतमपुरा, दिल्ली। तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली द्वारा आयोजित "भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान" का आयोजन खिलौनी देवी धर्मशाला, पीतमपुरा में अत्यंत श्रद्धा, शांति एवं दिव्यता के साथ संपन्न हुआ। इस विघ्न-बाधा निवारक एवं शांति प्रदायक महा अनुष्ठान में लगभग 375 श्रद्धालुओं ने भाग लेकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया। "शासनश्री" साध्वी सुव्रताजी के सान्निध्य में साध्वी कार्तिकप्रभा जी व साध्वी चिंतनप्रभा जी ने भक्तामर स्तोत्र का पाठ करवाया। सामूहिक साधना के इस पावन अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने संयम, श्रद्धा एवं भक्ति का अनुपम संगम देखा। गणवेश का विशेष ध्यान रखते हुए पुरुषों ने सफेद वस्त्र, महिलाओं ने लाल चुनड़ी की साड़ी धारण कर कार्यक्रम को एकरूपता एवं दिव्यता से सजाया। अनेक दंपत्तियों ने सामूहिक रूप से भाग लेकर पारिवारिक एकता और साधना में सहभागिता का संदेश दिया।

चौबीस तीर्थंकर प्रतियोगिता

केजीएफ। स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में चौबीस तीर्थंकरों के नाम पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा कि हम जैन हैं और हमारे आराध्य देव चौबीस तीर्थंकरों के नाम तो हमें व्यवस्थित रूप से सबको, चाहे बड़े हों या छोटे बच्चे, आने ही चाहिए। हम धन्य हैं कि हम जैन हैं और हमें तीर्थंकरों की वाणी आगम रूप में मिली है। साध्वी उन्नतयशाजी एवं साध्वी रम्यप्रभाजी ने चौबीस तीर्थंकरों पर आधारित बहुत ही रोचक प्रतियोगिता करवाई। छोटे-छोटे बच्चों से लेकर बड़े बुजुर्गों तक ने साध्वीश्री की प्रेरणा पाकर चौबीस तीर्थंकरों के नाम याद किए और प्रतियोगिता में अपना नाम दर्ज करवाया। कार्यक्रम में सभा, युवक परिषद, महिला मंडल और ज्ञानशाला के विद्यार्थियों की अच्छी उपस्थिति रही।

विघ्नहर ह्रीं कार अनुष्ठान का भव्य हुआ आयोजन

किलपॉक, चेन्नई।

मुनि मोहजीत कुमारजी के सान्निध्य में ₹विघ्नहर ह्रींकार अनुष्ठान₹ का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद, किलपॉक के तत्वावधान में हुआ। ह्रींकार की आकृति में बैठकर 151 जोड़ों सहित सैकड़ों अनुष्ठानकर्ताओं ने आचार्य सिद्धसेन द्वारा रचित ₹कल्याण मंदिर स्तोत्र₹ का मुनि जयेश कुमारजी के भावपूर्ण संगान के साथ उच्चारण एवं श्रवण किया।

इस अवसर पर अनुष्ठान स्वर प्रस्तोता मुनि जयेश कुमारजी ने कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना से जुड़ी विशिष्ट चमत्कारी घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रभु पार्श्वनाथ का माहात्म्य और प्रभाव तीर्थंकर परंपरा में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। उन पर रचित अनेक स्तोत्र भक्तों की आस्था के अनन्य केंद्र रहे हैं। इन्हीं स्तोत्रों की कड़ी में एक महत्वपूर्ण नाम है ₹कल्याण मंदिर स्तोत्र₹। इसके रचयिता आचार्य सिद्धसेन एक क्रांतिकारी पुरुष थे। वे कहा करते थे कि मेरा जन्म केवल अतीत के गीत गाने के लिए नहीं हुआ है। यदि मैं कुछ नया न कर सकूं तो मेरा जीवन व्यर्थ है। ऐसी सोच रखने वाले व्यक्ति द्वारा महान भक्ति काव्य की रचना कुछ विचित्र प्रतीत हो सकती है, परंतु सिद्धसेन भक्ति विरोधी नहीं थे। उन्हें वही स्तुति प्रिय थी जो आराध्य के गुणों को आत्मसात करने का भाव जागृत करे, न कि केवल स्वार्थ सिद्धि का प्रयत्न हो। यह अनुष्ठान भी सभी के लिए विघ्न निवारक, सिद्धिदायक होने के साथ-साथ प्रभु पार्श्वनाथ के गुणों को अपनाने की प्रेरणा प्रदान करने वाला बने, यही काम्य है।

कार्यक्रम में अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने नवगठित तेयुप किलपॉक को मुनिश्री के मार्गदर्शन में इस उपक्रम के सफल आयोजन हेतु बधाई दी और युवकों को प्रोत्साहित किया। विघ्नहर ह्रींकार अनुष्ठान का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। मुनि भव्य कुमारजी ने पार्श्व स्तुति के रूप में 'प्रभु पार्श्वदेव चरणों में' गीत का संगान कर अनुष्ठान की श्रृंखला को आगे बढ़ाया। तेयुप अध्यक्ष राकेश डोसी ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। ₹ॐ श्री पार्श्वनाथाय नमः₹ के मंत्रोच्चार से वातावरण में अपूर्व आध्यात्मिकता का संचार हुआ।

अनुष्ठान के दौरान ह्रीं का पिरामिड प्रत्येक साधक के सिर पर शक्ति का केन्द्रीकरण कर रहा था। ह्रीं आकृति में स्पॉट लाइट के माध्यम से रोशनी का नवीनीकरण किया गया। ह्रींकार अनुष्ठान में 151 जोड़ों की सहभागिता उनकी साधना के उत्साह को मुखर कर रही थी। चेन्नई के इतिहास में ऐसा उपक्रम पहली बार नवीनता एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण रूप में हुआ।

कार्यक्रम की सफल आयोजना में तेयुप अध्यक्ष राकेश डोसी, मंत्री सुनील सकलेचा, अनुष्ठान संयोजक अभिषेक नाहर, सहसंयोजक आलोक सेठिया एवं संपूर्ण तेयुप, तेरापंथी सभा तथा तेरापंथ महिला मंडल, किलपॉक के सदस्यों का विशेष योगदान रहा। अंत में आभार अभिषेक नाहर ने व्यक्त किया।

लोगस्स कल्प अनुष्ठान का हुआ आयोजन

जयपुर।

साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में अणुविभा केन्द्र, महाप्रज्ञ सभागार में लोगस्स कल्प अनुष्ठान हुआ। साध्वीश्री ने कहा कि लोगस्स को कलयुग का कल्पवृक्ष कहा जाता है। यह स्तुति ग्रंथ शक्तिशाली मंत्रों का संग्रह है। इसकी आराधना से आरोग्य, अंतर्दृष्टि और समस्याओं का समाधान मिलता है। चन्द्रमा, सूर्य और सागर के प्रतीक प्रभु का ध्यान करने से निर्मलता, तेजस्विता और गंभीरता का विकास होता है। साध्वी वृंद ने बीजाक्षर युक्त स्तुति पद्यों के एक-एक मंडल का संगान किया। अनुष्ठान में 55 युगल सहित ढाई सौ आराधकों ने भाग लिया। कार्यक्रम की सफलता में साध्वी मधुलता जी के निर्देशन में मंत्री पायल जैन, चंचल दूगड़ और एकता बरड़िया की भूमिका रही। अध्यक्ष रवि छाजेड़ ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी।

मानसिक सन्तुलन बढ़ाने का उपाय- प्रेक्षाध्यान

भीनासर।

साध्वी जिनबालाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन, भीनासर में प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 100 व्यक्तियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

साध्वीश्री ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान के माध्यम से हम किसी भी प्रकार के स्वभाव को बदल सकते हैं। जिनके भीतर आवेश और आवेग के तूफान उठते हैं, वे भी प्रेक्षाध्यान से शांत हो सकते हैं। प्रेक्षाध्यान से बुरी आदतों का परिष्कार होता है, मन में स्थिरता आती है और मानसिक संतुलन बढ़ता है। चैतन्यकेन्द्र प्रेक्षा, अनुलोम-विलोम आदि प्रयोगों से व्यक्ति ऊंचा उठ सकता है।

साध्वी करुणाप्रभाजी ने प्रेक्षाध्यान साधकों को रोगमुक्ति के उपाय बताते हुए सूर्य मुद्रा, अपान मुद्रा, वायु मुद्रा आदि अनेक मुद्राओं का अभ्यास करवाया।

साध्वी भव्यप्रभाजी ने प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत अनुप्रेक्षा का महत्व बताते हुए सहिष्णुता की अनुप्रेक्षा का प्रयोग कराया। साध्वी प्राचीप्रभाजी ने प्रेक्षाध्यान से संबंधित सुंदर भक्ति संगीत का संगान किया।

सायंकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत साध्वी जिनबालाजी के सान्निध्य में साध्वी करुणाप्रभाजी के निर्देशन में ₹सवाल हमारे - जवाब हमारे₹ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जो ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ अत्यंत रोचक भी था। इस प्रतियोगिता में कुल 30 समूहों ने भाग लिया।

प्रथम स्थान रोहित व मनीषा सेठिया ने, द्वितीय स्थान राजेंद्र व प्रियंका भुगड़ी ने तथा तृतीय स्थान सुनीता रांका व चंचल चोरड़िया ने प्राप्त किया। सभी विजेताओं को तेरापंथ युवक परिषद की ओर से पुरस्कृत किया गया।

दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउन्डेशन के तत्वावधान तथा जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा (कलकत्ता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा प्रेक्षा विहार में दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला के प्रथम दिवस कायोत्सर्ग तथा द्वितीय दिवस श्वास प्रेक्षा पर विशेष प्रशिक्षण एवं प्रयोग कराए गए। इस अवसर पर संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि मन की पवित्रता और चित्त की शुद्धि के लिए ध्यान आवश्यक है। इसके द्वारा अनेक शक्तियाँ और लब्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि ध्यान के विभिन्न प्रकारों में प्रेक्षाध्यान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। प्रेक्षाध्यान में श्वास प्रेक्षा का विशेष स्थान है। श्वास प्रेक्षा का नियमित अभ्यास मन को शांत करता है, एकाग्रता बढ़ाता है और ज्ञाता-दृष्टा भाव का विकास करता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के चित्त में समाधि की चाह होती है। समाधि का अर्थ है समाधान। इसके लिए निर्ममता, निरहंकारिता, निगर्विता तथा सब जीवों के प्रति समता का विकास आवश्यक है। इस अवसर पर मुनिश्री ने साधकों को ध्यान का प्रयोग भी कराया।

कार्यशाला में प्रशिक्षिका सुधा जैन, लक्ष्मीलता बैद, मनीषा नाहटा, संगीता सेठिया एवं ममता मुथा ने भी प्रशिक्षण प्रदान किया। इस कार्यशाला में लगभग 150 बहनों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम की सफलता में पूर्वांचल सभा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

संक्षिप्त खबर

कांसेप्ट ऑफ़ विल (वसीयतनामा) कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर। साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में अर्हम भवन, विजयनगर में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, बैंगलोर साउथ द्वारा "कंसेप्ट ऑफ विल (वसीयतनामा)" कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने नमस्कार मंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्य वक्ता एडवोकेट ललित जैन ने अपने संबोधन में जीवन में वसीयत की आवश्यकता, वसीयत बनाने की प्रक्रिया तथा उससे जुड़े अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा उपस्थितजनों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। इस अवसर पर सभा विजयनगर अध्यक्ष मंगल कोचर, तेयुप अध्यक्ष विकास बाँठिया एवं पदाधिकारी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम से साउथ जोन अध्यक्ष विक्रम कोठारी, बैंगलोर वेस्ट अध्यक्ष ललित बेगानी एवं पदाधिकारी, महिला मंडल विजयनगर अध्यक्षा महिमा पटावरी एवं अनेक श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।

रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन

गंगाशहर। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित व तेरापंथ युवक परिषद् गंगाशहर द्वारा आयोजित जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला तेरापंथ भवन गंगाशहर में आयोजित हुई।

तेयुप मंत्री ने बताया कि जैन संस्कारक युवक रत्न राजेन्द्र सेठिया, पीयूष लूणिया, विनीत बोथरा, देवेन्द्र डागा, विपिन बोथरा और रोहित बैद ने रक्षाबंधन कार्यशाला को संपादित करवाया। इस विशेष आयोजन में धीरज पुगलिया एवं सुधा बोथरा भाई-बहन के जोड़े को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई तत्पश्चात संस्कारकों ने मंगल भावना यंत्र की विधिवत स्थापना करवाई और मंगल मंत्रोच्चार व गीतिकाओं के संगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। जैन संस्कारक राजेन्द्र सेठिया ने जैन संस्कार विधि की महत्वपूर्ण जानकारी से सभी को अवगत करवाया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला "रिश्तों की डोर" का अयोजन

अमरनगर, जोधपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् सरदारपुरा द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला "रिश्तों की डोर" का आयोजन तेरापंथ भवन, अमर नगर में साध्वी कुन्दनप्रभा जी के सान्निध्य एवं अभातेयुप सहमंत्री लक्की कोठारी की अध्यक्षता में संपन्न हुई, जिसमें लगभग 300 संभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। साध्वीश्री के मंगलाचरण एवं नवकार मंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात तेयुप अध्यक्ष मनसुख संचेती ने सभी आगंतुकों का स्वागत-अभिनंदन किया। दिनेश बुरड़ ने अपने प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण से कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए। उन्होंने कहानी के माध्यम से संदेश दिया कि रिश्तों में प्रेम और सद्भाव बनाए रखना ही सुखी जीवन का मूल है।

साध्वी विद्युतप्रभा जी ने अपने संबोधन में कहा कि वाणी और अहंकार से परिवार टूट सकते हैं, यहां तक कि तलाक जैसी स्थिति तक पहुँच सकते हैं। इसलिए घर-परिवार में विश्वास और समझदारी बनाए रखना अति आवश्यक है। दिनेश बुरड़ ने सास-बहू, पिता-पुत्र एवं पति-पत्नी के रिश्तों की डोर को मजबूत करने हेतु प्रेरणादायी विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि पति-पत्नी का रिश्ता बहुत ही नाजुक होते हुए भी मजबूत आधार होता है, जिसे आपसी सहयोग, सम्मान और प्रेम से शांति पूर्वक निभाया जा सकता है।

अभातेयुप सहमंत्री लक्की कोठारी ने कहा कि आज का यह कार्यक्रम सभी के हृदय से जुड़ा रहा, क्योंकि इसमें वही समस्याएं उठाई गईं जो प्रत्येक परिवार व व्यक्ति के निजी जीवन से संबंधित होती हैं, और सबको इनके समाधान की आवश्यकता होती है।

मंच का कुशल संचालन विकास चोपड़ा ने किया तथा आभार ज्ञापन मंत्री देवीचंद तातेड़ ने प्रस्तुत किया। अंत में लॉटरी के माध्यम से एक "लक्की परिवार" को विशेष उपहार प्रदान कर कार्यक्रम का समापन हुआ।

साध्वी बिदामांजी की स्मृति सभा का आयोजन

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में सुदीर्घजीवी शासनश्री साध्वी बिदामाजी की स्मृति सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि साध्वी बिदामाजी केवल तेरापंथ धर्मसंघ में ही नहीं, बल्कि संपूर्ण जैन समाज में उम्र और दीक्षा पर्याय के दृष्टिकोण से प्रथम साध्वी कही जा सकती हैं। उन्नत आयु में भी उनका स्वाध्याय, तप और जप का क्रम निरंतर चलता रहा। मुनिश्री ने बताया कि जब वे प्रथम बार कालू पधारे तो साध्वीश्री की सरलता, सहजता, विनम्रता, गणनिष्ठा, गुरुनिष्ठा और आचारनिष्ठा देखकर उनका हृदय प्रफुल्लित हो गया।

उन्होंने कहा कि इस अवस्था में भी साध्वीश्री ने लंबे समय तक विराजकर समाज को सेवा व प्रतिबोध प्रदान किया। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के मुखकमल से दीक्षित और आचार्यश्री महाश्रमणजी से अलंकृत साध्वीश्री बिदामाजी ने अपनी कर्मजा शक्ति से दीर्घकाल तक धर्मसंघ की सेवाएँ प्रदान कीं। उन्हें साध्वी उज्ज्वलरेखा जी आदि साध्वियों का अंत समय तक अनुपम सहयोग प्राप्त हुआ, जिसका परिणाम रहा कि उन्होंने संथारे पूर्वक अंतिम विदाई ली।

सभा के दौरान मुनि कमलकुमार जी एवं मुनि श्रेयांस कुमार जी ने दोहों के माध्यम से श्रद्धासुमन अर्पित किए। अंत में चार लोगस्स का ध्यान कर साध्वीश्री के उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना की।

दीक्षार्थी मंगल भावना समारोह का आयोजन

मैसूर।

साध्वी सिद्धप्रभाजी के सान्निध्य में दीक्षार्थी प्रीत कोठारी के मंगल भावना समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन, मैसूर में हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की दीक्षा, निश्चिंतता की दीक्षा है। उन्होंने साधु जीवन के परिषहों और उनकी श्रेष्ठता को बहुत ही तार्किक एवं रोचक रूप में समझाया।

मुमुक्षु प्रीत को शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए कहा कि यह छोटे से गांव रामसिंह का गुड़ा की 12वीं दीक्षा है। अब तुम अपने व्यक्तित्व और आचरण द्वारा ऐसी छाप छोड़ो कि तुम्हारे पीछे मुमुक्षुओं की लंबी कतार तैयार हो।

साध्वी आस्थाप्रभाजी ने अपने संसारपक्षीय भतीजे के प्रति मंगलकामना प्रेषित करते हुए कहा कि गुरु इंगित की आराधना करते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहना और एक आदर्श साधु के रूप में साधनारत रहना। उन्होंने कहा कि मुझे गौरव है अपने संसारपक्षीय कोठारी परिवार पर, जहां मेरे बाद यह चौथी दीक्षा हो रही है।

अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हुए मुमुक्षु प्रीत ने एक कहानी के माध्यम से कहा कि अनंत भवों की यात्रा के पश्चात मुझे यह दुर्लभ अवसर मिला है। मैं कृतज्ञ हूं पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमणजी एवं उपकारी संतों के प्रति। इस अशाश्वत जीवन में मैं शाश्वत की ओर जाना चाहता हूं। अपूर्णता से पूर्णता को प्राप्त करना चाहता हूं, इसलिए मैं दीक्षा ले रहा हूं।

सभा अध्यक्ष प्रकाश दक रॉयल, मंत्री दिलीप पितलिया, महिला मंडल अध्यक्षा विजयलक्ष्मी आच्छा, टीपीएफ अध्यक्ष प्रकाश दक, वनमाला नाहर एवं चेलना नाहर ने अपने भाव व्यक्त किए। नीतू आच्छा, भिक्षु भजन मंडली और पारिवारिकजनों ने गीतिका के माध्यम से मुमुक्षु प्रीत कोठारी को बधाई व मंगलभावना अर्पित की।तेरापंथ समाज द्वारा मुमुक्षु का अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 अगस्त - 31 अगस्त, 2025

भगवती संवत्सरी महापर्व पर विशेष आलेख

चेतना के उर्ध्वारोहण का पर्व संवत्सरी

● साध्वी कनकरेखा ●

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। यहां अनेक धर्मों व पर्वों का अद्भुत संगम है। भारतीय संस्कृति में निखार लाने में पर्वों का बड़ा योगदान रहा है। पर्व अनेक प्रकार के होते हैं। जैसे कुछ लौकिक, राष्ट्रीय, कुछ आध्यात्मिक पर्व होते हैं। जैन परंपरा में पर्युषण पर्व, महावीर जयंती, अक्षय तृतीया आदि धार्मिक पर्व मनाए जाते हैं, जिनके पीछे आत्मशुद्धि की प्रेरणा रहती है। धार्मिक पर्वों में भी श्रेष्ठ पर्व है पर्युषण पर्व, जिसे पर्वाधिराज महापर्व भी कहते हैं। पर्युषण पर्व से जैन समाज का हर सदस्य, चाहे छोटा हो या बड़ा, परिचित है। दिगंबर परंपरा में पर्युषण शब्द के स्थान पर 'दशलक्षण' शब्द प्रचलित है। वर्षभर में एक बार आने से इसे संवत्सरी भी कहते हैं।

पर्युषण जैनों का महापर्व है – यह जागरण का संदेश लेकर आता है। व्यक्ति को मूर्च्छा, प्रमाद, आलस्य से दूर हटाकर सच्चाई से परिचित कराता है। व्यक्ति को कुछ पाने की प्रेरणा देता है। यह पर्व आमोद-प्रमोद व शारीरिक साज-सज्जा का नहीं, संयम का पर्व है, जो व्यक्ति को पूर्णता की ओर प्रस्थान कराता है। भोग से त्याग की ओर, राग से विराग की दिशा का प्रेरक पर्व है। यह पर्व संपूर्ण मानवजाति का पर्व है। संवत्सरी न किसी तीर्थंकर की जन्म-जयंती या निर्वाण दिवस से जुड़ी हुई है और न किसी धर्म-सम्प्रदाय का प्रवर्तन दिवस है। यह मानवजाति की संस्कृति व सभ्यता के अभ्युदय का आदि दिवस है। इसलिए यह महापर्व की अभिधा को सार्थकता प्रदान करता है। जैन मतानुसार, उत्सर्पिणी के अंतिम चरण में मांसाहारी लोगों ने आज के दिन मांसाहार न करने का संकल्प लिया था, जिसे हम मानवता (अहिंसा) का प्रथम दिन मानते हैं। इस दृष्टि से इसका महत्व संपूर्ण मानवजाति के लिए है।

यह महापर्व प्रायः भाद्रपद शुक्ला पंचमी को मनाया जाता है। संवत्सरी पर्व श्वेतांबर समाज के लिए पर्युषण का अंतिम दिन है और दिगंबर समाज के लिए पर्युषण, यानी दशलक्षण का प्रथम दिन होता है। श्वेतांबर समाज में इस अष्टान्हिक उत्सव को जप, तप, स्वाध्याय, ध्यान, संयम साधना के साथ मनाया जाता है। दिगंबर समाज में इन दस दिनों में क्षमा, आर्जव, मार्दव, लाघव, सत्य, संयम आदि दस धर्मों की आराधना की जाती है, जिससे चेतना का उर्ध्वारोहण होता है।

अलौकिक पर्व :

यह पर्व आमोद-प्रमोद का पर्व नहीं, अपितु अहिंसा, मैत्री, सौहार्द व सहअस्तित्व की भावना जन-जन तक पहुंचाने वाला अलौकिक पर्व है। पर्युषण आते ही जीवन में नई चेतना का संचार होता है। जीवन में चालू व्यवहारों व कार्यों से हटकर कुछ नया करने की प्रेरणा देता है। सुविधावादी व स्वार्थप्रधान जीवनशैली में परमार्थ की बात बताता है। इसीलिए पर्युषण आते ही बच्चे, युवा व वृद्धों में भी कुछ करने का उत्साह पैदा होता है। इस पर्व के साथ लाखों लोगों की आस्था जुड़ी हुई है। अति-व्यस्तता के बावजूद भी इस पर्व को सर्वाधिक महत्व देते हैं। कभी सामायिक, उपवास, पौषध नहीं करने वाले भी इस दिन करते हैं। जो बच्चे खाने व खेलने में मस्त रहते हैं, वे भी इन दिनों में चादर ओढ़े, मुखवस्त्रिका बांधे हुए धर्मस्थान में बैठे मिलते हैं। यही पर्व की अलौकिकता है।

अहिंसा का महान पर्व :

प्राचीन समय में भारत देश अहिंसा, मैत्री व अध्यात्म की भावना से ओतप्रोत तथा चारित्रिक ऊंचाई के लिए प्रसिद्ध था। वहीं आज भौतिकवाद की ओर तेजी से बढ़ रहा है। ऐसा लगता है मानो आमोद-प्रमोद ही जिंदगी का लक्ष्य बन गया है। शरीर की सुंदरता बढ़ाने के लिए कैसी-कैसी साधन-सामग्री का उपयोग करता है, पर यह भूल जाता है कि इन्हें तैयार करने में कितने निरीह प्राणियों की क्रूरतापूर्वक हत्या हो जाती है। आज कॉस्मेटिक सामान की दुकानें बढ़ती जा रही हैं। इसका मुख्य कारण है – बढ़ती हुई सौंदर्य-लिप्सा। सौंदर्य-पिपासा सामान्य लगती है, किन्तु इसने अनर्थ हिंसा को बढ़ावा दिया है तथा अहिंसक कहलाने वाले समाज के लिए प्रश्नचिह्न खड़ा कर दिया है। जिसका मन अपवित्र है, उसका बाह्य सौंदर्य भी खतरे से खाली नहीं। आज आवश्यकता है कि व्यक्ति-व्यक्ति में प्राणीमात्र के प्रति संवेदनशील व करुणा का भाव जगाया जाए।

आत्मनिरीक्षण पर्व :

हर व्यक्ति विश्व की जानकारी रखता है, पर स्वयं के बारे में नहीं जानता। दूसरों की गलतियों को देखता है, पर स्वयं की गलतियों को नजरअंदाज कर देता है। सही माने में, मनुष्य ने दूसरों को देखने में अनंत जन्म बिता दिए, किंतु अपने भीतर क्या है, आज तक नहीं देखा। पर्युषण पर्व आत्मनिरीक्षण का पर्व है। यह अतीत के सिंहावलोकन की प्रेरणा देता है। हम लेखा-जोखा करें – पूरे वर्षभर में क्या खोया, क्या पाया। उन क्षणों को याद करें, जिन्होंने हमारे जीवन को बर्बाद किया। हम अतीत को देखें, वर्तमान में जीते हुए सुखद भविष्य की शुरुआत करें। क्योंकि छिलके को देखने वाला बाहरी रंग व आकार से परिचित होता है, भीतर के रंग-रूप व गुण से नहीं। जिन्होंने अपने भीतर को देखा वे तर गए। अपने को देखने वाला अंतर्दृष्टि को प्राप्त होता है। हमारे भीतर अनिर्वचनीय आनंद का खजाना है। उसको पाने के बाद अब तक का देखा, सुना और चखा हुआ सब फीका लगता है।

क्षमापर्व :

व्यक्ति सामाजिक प्राणी है, परिवार व समाज के बीच जीवन जीता है। समाज में रहते हुए अनेक कार्य संपादित करता है, व्यवहार निभाता है। उसमें जाने-अनजाने अनेक भूल कर बैठता है। आवेश व अहंकार में कटु शब्दों का प्रयोग भी कर लेता है। यह कटुता आपसी दूरी, हिंसा व वैरभाव को पैदा करती है। यह पर्युषण पर्व क्षमा के आदान-प्रदान का अद्वितीय पर्व है, जो ग्रंथि-विमोचन का अवसर प्रदान करता है। जब तक हृदय की गांठ खोलकर आदान-प्रदान नहीं होता, तब तक मन की शुद्धि नहीं होती। जैन दर्शन के अनुसार वह सम्यक्त्वरत्न रहित हो जाता है। गांठ चाहे लकड़ी में हो या शरीर में – कहीं भी अच्छी नहीं। जीवन को सरस व आनंदमय बनाने के लिए क्षमायाचना अत्यंत उपयोगी है। इसके लिए भगवान महावीर ने महत्वपूर्ण सूत्र प्रदान किया –

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु में।
मित्ति में सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई।।

भगवान महावीर का संदेश मानवता का संदेश है। यदि इसे संपूर्ण मानवजाति स्वीकार कर ले तो अनेक समस्याओं का समाधान सहज हो जाता है। मैत्री पर्व को मनाने की परंपरा केवल जैन समाज में ही प्रचलित है, पर यह पर्व यदि राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाए तो हिंसा, आतंक की समस्या स्वतः समाहित हो सकती है।

सौभाग्यशाली व्यक्ति ही संयम मार्ग पर आगे बढ़ता है

बायतू।

स्थानीय तेरापंथ भवन में कोबा अहमदाबाद में आचार्य महाश्रमण जी के करकमलों से दीक्षा ग्रहण करने जा रही मुमुक्षु साधना बांठिया का साध्वी जिनरेखा जी के सानिध्य में अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर साध्वी जिनरेखा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि जैन दीक्षा ग्रहण करने का अर्थ है संयम का उत्कृष्ट भाव मन में लाना और उसी मार्ग पर चलने के लिए मन, वचन, कर्मों में एकरूपता लाना। व्यक्ति के जीवन में त्याग की भावना प्रबल रूप में होनी चाहिए। इसी त्याग की भावना को आत्मसात करने का माध्यम दीक्षा है।

मुमुक्षु साधना अपने जीवन को उच्च स्तर पर ले जाकर आत्मकल्याण के लिए दीक्षा का मार्ग अपनाने जा रही है। यह साधु जीवन वास्तव में जीवन का कल्याण करने वाला मार्ग है। संयम की साधना का आनंद अनुपम व उत्कृष्ट होता है। मुमुक्षु साधना अपने जीवन में निरंतर आध्यात्मिक उन्नति पथ पर बढ़ती रहे।

साध्वी मार्दवयशा जी ने संयम जीवन की महत्ता बताते हुए कहा कि यह संयम पथ भव-भव के बंधनों से मुक्ति का श्रेष्ठ मार्ग है। इस हेतु मुमुक्षु महाव्रतों की साधना के लिए आगे बढ़ रही है और इसी पर आधारित सुंदर गीतिका के माध्यम से श्रावक समाज को प्रेरणा दी। मुमुक्षु साधना बांठिया ने कहा कि इस भौतिकता के युग में व्यक्ति को खुद की खुद से पहचान करने के लिए संयम जरूरी है। सभी श्रावकों को संयमित जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

इस अवसर पर साध्वी मधुरयशा जी, साध्वी श्वेतप्रभा जी, साध्वी धवलप्रभा जी और साध्वी मार्दवयशा जी का मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ। दोपहर में मुमुक्षु राजुल खटेड़ का महिला मंडल द्वारा अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष राकेश जैन, महिला मंडल अध्यक्ष अनिता जैन, मंत्री कंचन मालू, प्रियंका गोलेच्छा, रमेश चौपड़ा, धनी बाई गोलेच्छा आदि ने गीत, भाषण और कविता के माध्यम से मुमुक्षु के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मनोज चौपड़ा ने किया।

सामायिक से होती है समता एवं प्रसन्नता की प्राप्ति

दाहोद। तेरापंथ भवन में मुनि कोमलकुमार जी के सान्निध्य में सामायिक साधना की पचरंगी एवं मौन साधना की पचरंगी का क्रम आयोजित किया गया। प्रत्येक साधना पचरंगी में लगभग 25 भाई-बहनों ने लाभ प्राप्त किया। सामायिक एवं मौन साधना की पचरंगी में न केवल तेरापंथ समाज, अपितु समस्त जैन समाज के भाई-बहनों ने उत्साह एवं रुचि दिखाई।

मुनि कोमलकुमार जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा – "सामायिक से समता एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। सामायिक वास्तव में समता और प्रसन्नता की साधना है।" उन्होंने आगे कहा – "मौन से शांति मिलती है, घर स्वर्ग बन जाता है। वाणी संयम का अभ्यास वर्तमान युग में अत्यंत आवश्यक है।"

'सुदीर्घजीवी' 'शासनश्री' साध्वी बिदामांजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्गार

सुदीर्घजीवी शासनश्री बिदामां जी की जीवन गाथा

● साध्वी अमृतप्रभा ●

सुदीर्घजीवी शासनश्री बिदामां जी का जन्म वि. सं. 1975 कार्तिक कृष्णा चतुर्थी मेवाड़ सरेवड़ी में हुआ। स्वर्गीय श्री विरधीचंद जी चावत की धर्मपत्नी श्रीमती हंज्जा बाई की रत्नकुक्षि को आपने धन्य बना दिया। मात्र चौदह वर्षों की उम्र में छापली/पींपली निवासी श्री ज्ञानचंदजी दक के सुपुत्र श्री पेमराजजी दक के साथ आपका पाणिग्रहण हुआ। शादी के छह मास पूर्ण होते ही आपके सुहाग का सिंदूर मिट गया। बसंत से पूर्व ही पतझड़ छा गया। चौदह वर्षीय बिदाम का जीवन फूल खिलने से पहले ही मुरझा गया।

आप एक पुण्यशाली आत्मा थीं। भयंकर रूढ़ियों के युग में भी रूढ़िवाद की जकड़न आपका स्पर्श नहीं कर सकी। आपके बड़े जेठ श्री चंदनमलजी दक (तहसीलदार) ने उस युग में पारिवारिक जनों से कहा - इसे कोई कुछ नहीं कहेगा कि काले वस्त्र पहनो, गहने उतारो। यह तो दुधमुंही बच्ची है। इसने क्या देखा है। समझ पकड़ेगी तब सब कुछ हो जाएगा। चंदनमल जी एवं उनकी धर्मपत्नी दोनों ने आपको सदैव अपने बच्चों की तरह रखा। वैधव्य के पश्चात भी आप ससुराल में ही रहीं। बीच-बीच में पीहर आना-जाना रहता था।

अष्टमाचार्य कालूगणी ग्रामानुग्राम विहार करवाते हुए मेवाड़ प्रांत में पधारे। क्षेत्र स्पर्शना के क्रम में पूज्य प्रवर का पींपली ग्राम में पदार्पण हुआ। शय्यातर का लाभ चंदनमलजी को प्राप्त हुआ। पारिवारिक परिचय के सिलसिले में चंदनमलजी ने गुरुदेव को निवेदन किया - ये मेरे छोटे भाई पेमराज की बहू है। भाई पेमराज शादी के छह महीने होते ही महामारी की चपेट में आ गया। गुरुदेव ने फरमाया - बाई! तुम्हारी अवस्था बहुत छोटी है। घर में रहना ठीक नहीं है। दीक्षा ले लो, निहाल हो जाओगी। तुम्हारे जीवन का कल्याण हो जाएगा। अनित्यता का दिशा-बोध दिया। पूज्य प्रवर की भववेधक कल्याणी पावन प्रेरणा पाकर आपका मन वैराग्य रस से आप्लावित हो गया। पूरी रात चिंतन में डुबकियां लगाती रहीं। आखिर दृढ़ निर्णय पर पहुँच गईं - ₹मुझे दीक्षा लेना है।₹ पर अनपढ़ता का रोड़ा मन में उथल-पुथल मचाने लगा - मुझे दीक्षा कैसे मिलेगी? मैं तो अनपढ़ हूँ। आखिर समाधान खोज लिया। जेठूती भंवरीबाई को अपने साथ दीक्षा हित तैयार कर लिया।

साधु-साध्वियों का योग मिला। कण्ठस्थ ज्ञान प्रारंभ कर दिया। कुशाग्र बुद्धि एवं तीव्र मेधा शक्ति से थोड़े समय में ही कई थोकड़े व प्रारंभिक ज्ञान कण्ठस्थ कर लिया। जब बालिका भंवरी 10 वर्षों की हुई तब अपनी भावना को जेठानी के सामने रखा। काकी-जेठूती को परीक्षा की कसौटी पर उत्तीर्ण पाकर चंदनमलजी ने गुरूदेव श्री तुलसी के चरणों में अर्ज निवेदन किया। अनुज्ञा प्राप्त कर हर्षसागर में डूब गए। वि. सं. 1998 कार्तिक कृष्णा 9 को राजलदेसर में आचार्य श्री तुलसी के चरणकमलों में संयमश्री का वरण किया। साध्वीप्रमुखा श्री झमकूजी के चरणकमलों में संयम यात्रा का शुभारंभ हुआ। मर्यादोत्सव के अवसर पर साध्वी बिदामां जी एवं साध्वी भीखां जी (काकी-जेठूती) दोनों को साध्वी श्री बख्तावरजी को वंदना करवायी।

चातुर्मास परिसमाप्ति के पश्चात शेषकाल में साध्वी श्री बख्तावरजी मारवाड़ जंक्शन में विराज रहे थे। वहां अचानक ही आपका शरीर व्याधिग्रस्त हो गया। पेशाब एवं दस्त दोनों ही मार्ग अवरुद्ध हो गए। एक-एक कर छह दिन बीत गए। न पेशाब लगा, न ही दस्त। पेट में आफरा आ गया। भयंकर उदर पीड़ा होने लगी। खाने-पीने में केवल छाछ और राब का प्रयोग चलता था। विषम कष्टमय स्थिति में भी औषध प्रयोग नहीं किया। मन ही मन ₹ऊँ भिक्षु₹ का जप चलता रहा। सातवें दिन बिगड़ती हुई स्थिति एवं छटपटाहट को देखकर साध्वी श्री बख्तावरजी ने तपसण भूरांजी को फरमाया - भूरांजी, गोचरी में सोनायपति की गवेषणा कर लाना। आज्ञा मिलते ही तपसण सोनायपति ले आए। पीस-छानकर एक टोपसी में डालकर पूछा - कैसे देनी है? साध्वी श्री ने फरमाया - गर्म पानी में घोलकर पिला देना। तपसण भूरांजी ने टोपसी (प्याला) ढककर आपके पास रखते हुए कहा - बिदामां, यह टोपसी पड़ी है, मैं गर्म पानी लेकर आ रही हूँ। कुछ समय पश्चात तपसण गर्म पानी लेकर आपके पास पहुंची। टोपसी को जैसे ही उठाया और देखा तो वे दंग रह गईं। तपसण ने प्रश्नायित नयनों से पूछा - बिदामां जी, क्या यहां कोई आया था? आपने कहा - मैंने तो किसी को नहीं देखा। तपसण का दूसरा प्रश्न था - यह टोपसी खाली पड़ी है, चूर्ण कहां गया? आपने कहा - मुझे पता नहीं। मैं तो उठी भी नहीं। तपसण टोपसी को लेकर साध्वी श्री के पास पहुँची और पूरी बात बताई। टोपसी (प्याला) इतना स्वच्छ थी जैसे किसी ने धो-पोंछकर रखी हो। देखने वाली सभी साध्वियां दंग थीं। आखिर फाकी कहां गई? साध्वी श्री बख्तावरजी आपके पास पधारीं। धैर्य बंधाते हुए फरमाया - बिदामां जी, मुझे लगता है कोई अदृश्य शक्ति तुम्हारी परीक्षा एवं सेवा कर रही है। घबराओ मत। फाकी क्या उड़ी है, समझो बीमारी ही चली गई। अग्रगण्या के वचनों को श्रद्धा से शिरोधार्य करते हुए आपने फरमाया - आपकी कृपा से सब ठीक हो जाएगा।

रात्रि के समय असह्य पीड़ा भारी बेचैनी में बीती। ब्रह्ममुहूर्त का समय घोर कष्टमय था। सूर्योदय में थोड़ा ही समय बाकी था। आपके पेट में कलकलाहट-घड़घड़ाहट शुरू हो गई। तपसण ने हाथ का सहारा दिया। धीरे-धीरे उठाया और बाहर ले गईं। प्रासुक एकांत स्थान देखकर नीचे बैठाया। थोड़ी देर पश्चात पेशाब की बूंदें लगने लगीं। देखते ही देखते पेशाब के साथ ही मलद्वार भी खुल गया। 4-5 दिनों में पेट का आफरा उतरने लगा। खाने में मुलायम धान एवं तरल पदार्थ ही दिए जाते। पेट में जमा कचरे की सफाई होने लगी। पंद्रह दिनों में स्वास्थ्य सामान्य हो गया। स्वास्थ्य लाभ के पश्चात एक दिन अवसर देखकर आपने साध्वी श्री से निवेदन किया - मुझे यावज्जीवन ऐलोपैथिक आदि दवाइयों का प्रत्याख्यान करवा दो। साध्वी श्री ने फरमाया - अभी तुम्हारी अवस्था छोटी है। न तो जिंदगी का कोई भरोसा है और न ही शरीर का। अतः अभी त्याग नहीं करना चाहिए। कुछ दिनों बाद पुनः निवेदन किया। आपके आग्रह एवं दृढ़ संकल्प निष्ठा को देखकर साध्वी श्री बख्तावरजी ने प्रत्याख्यान करवा दिए। तब से उस संकल्प को अन्तिम क्षण तक निभाया। आपके जीवन में परीक्षा के अनेक अवसर आए। अनेक बार आप मरणासन्न स्थितियों से गुजरीं, पर हर परीक्षण की कसौटी पर खरी उतरती गईं। हर बीमारी से चमत्कारिक ढंग से मुक्ति पाई। 35 वर्षों से आप और मैं एक ही ग्रुप में साधना रत हैं। मैंने आपको निकटता से देखा। कालू स्थिरवास के मध्य कोरोना काल चल रहा था। वेदनीय कर्म का विशेष उदयभाव हुआ। आपको तेज बुखार आया। टाइफाइड घोषित हो गया। लगभग 2 महीनों तक बुखार चलता रहा। भयंकर बेचैनी की स्थिति रहती। कभी-कभी तो ऐसा लगता - सुबह हुई है, शाम होगी या नहीं? शाम हुई है, सुबह होगी या नहीं? कमजोरी के कारण उठने-बैठने की शक्ति भी नहीं रही। अन्न प्रायः नहीं के बराबर चलता था। दिन-रात में कई बार कहते - ₹महाराज, मेरी नाड़ी देखो। आपको कुछ लगे तो संथारा करवा दो। मुझे खाली मत जाने देना।₹ नब्ज को देखकर साध्वी श्री उज्ज्वलरेखा जी धैर्य बंधाते हुए फरमातीं - आप चिंता मत करो। ठीक हो जाओगे। अवसर आने पर संथारा करवाने का भाव है।

उठाओ-उठाओ बोलते और एक झटके से उठ जाते। कभी दक्षिण में सिर तो कभी उत्तर दिशा में कर लेते। उठने-बैठने की सैकड़ों आवृतियां हो जातीं। भयंकर बेचैनी और छटपटाहट रहती थी। देखने वालों के मन में भी घबराहट हो जाती। ऐसी स्थिति में भी महीने में निर्धारित तिथियों के 5 उपवास नहीं छोड़ते। वे यथावत चलते थे। चौबीस ही घंटे एक साध्वी आपके पास रहती थी। एक दिन आपके मुँह से सहसा निकला - ₹मुझे कम्मघणमुक्कं वाला जाप सुनाओ।₹ तत्पश्चात रात्री के साढ़े ग्यारह बजे तक ₹उपसर्गस्तोत्र₹ का जप चलता था। इसके पश्चात ₹ॐ अ. भी. रा. शि. को. नमः₹ इस मंत्र का जप चलता रहता। ₹विघ्नहरण गीत₹ का श्रवण करते-करते ही उनको नींद आ जाती थी।

एक दिन रात्रि को ब्रह्ममुहूर्त में आप अर्द्धनिद्रा अवस्था में सो रहे थे। अचानक ही आपकी आंख खुली। आपने देखा दरवाजे के मध्य बाहर एक लाल वस्त्रधारी बहिन खड़ी है। नख से शिख तक उसका पूरा शरीर ढका हुआ है। वह बोली - मत्थेएण वंदामि। तब आपने पूछा - ₹कुण हो बाई?₹ उत्तर मिला - ₹मैं हूँ महाराज।₹ आपका दूसरा प्रश्न था - ₹कहां से आयी हो?₹ उत्तर में वह बोली - ₹सांगावास से आयी हूँ।₹ थोड़ी देर वहां खड़ी-खड़ी बुदबुदाती रही। तत्पश्चात आपके पट्ट के पास आकर खड़ी हो गई और मंत्र पाठ (जप) करने लगी। आवाज बहुत धीमी थी। मंत्रोच्चारण करते-करते वह बहिन कब, किधर, कहाँ चली गई, यह आपको पता नहीं चल पाया। इसके पश्चात थोड़ी देर में ही आप योग निद्रा में चले गए।

प्रातः प्रतिक्रमण के पश्चात आपने यह घटना साध्वी श्री उज्ज्वलरेखा जी एवं मुझे बताई। साध्वी श्री ने फरमाया - ₹लगता है महाराज, अब आप स्वस्थ हो जाओगे।₹ उसी दिन से आपकी बेचैनी में सुधार शुरू हो गया। धीरे-धीरे आप पुनः स्वस्थ हो गईं।

आप कई बार मरणासन्न स्थितियों से गुजरी थीं, पर दृढ़ संकल्प निष्ठा एवं स्वामी जी के प्रति अगाध आस्था बल से आपने घोर भयंकर अनेक घाटियों को पार कर नया जीवन पाया था। तपबल, जपबल एवं स्वाध्यायबल की अनूठी शक्ति से आपकी आत्मा परिपुष्ट थी। ₹ऊँ भिक्षु₹ नाम आपके जीवन के कण-कण में रमा हुआ था। एक अनुपम औषध, जिसके आसेवन से ही आप शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक हर व्याधि-आधि से मुक्त हो गईं। सेवा भावना आपके जीवन का अभिन्न अंग था। आपने अपने जीवन में 7 वर्षीय सेवाएं सेवाकेन्द्रों में अहोभाव से की हैं। सहनशीलता, सेवाभावना, मिलनसारिता आपके जीवन के विशिष्ट गुण थे। ग्रुप में आने वाली साध्वियों में सद्संस्कारों का बीजारोपण करना तथा उन्हें वत्सलता से परोटने की अद्भुत कला आप में थी। मुझे लगभग 35 वर्षों तक आपका आत्मीय साहचर्य प्राप्त हुआ। मेरे जीवन निर्माण एवं आध्यात्मिक विकास में आपकी अहम भूमिका रही है। आपके अविस्मरणीय सहयोग एवं प्रेरणा से मैं कभी उऋण नहीं हो सकती। लगभग 25 वर्षों तक मेरे वस्त्रों की सिलाई एवं रजोहरण प्रतिलेखन आपने स्वेच्छा से किया था। चाहे नए वस्त्रों की हो या पुराने वस्त्रों की। मेरे हाथ में सुई देखते ही तत्काल ले लेतीं - ₹छोड़ो, यह काम तो मैं ही कर लूंगी। तुम अध्ययन एवं जनोपकार करो।₹ साध्वी श्री उज्ज्वलरेखा जी की सिलाई एवं रजोहरण प्रतिलेखन कार्य भी वर्षों तक किया। आपकी निर्जरा भावना एवं सेवा भावना अविस्मरणीय एवं प्रेरणास्पद है। साध्वी श्री बख्तावर जी, आनंदकुमारी जी एवं उनकी माताजी साध्वी श्री सुजानां जी की अनूठी सेवा कर उन्हें समाधि पहुँचायी। सेवाकेन्द्र लाडनूं में 7 अनशन हुए। उनकी सेवा में अहोरात्र तत्पर रहती थीं। ₹करो सेवा, पावो मेवा₹ इस उक्ति का साकार रूप हमने आपके जीवन में देखा। साध्वी अमृतप्रभाजी, साध्वी स्मितप्रभाजी, साध्वी हेमप्रभाजी एवं साध्वी नम्रप्रभा जी ने आपकी अहोभाव से सेवा करके साता-समाधि पहुँचायी है।

आपका जीवन आचार निष्ठा, मर्यादानिष्ठा, संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा एवं आज्ञानिष्ठा - इस निष्ठा पंचक से संपृक्त था। ऐसी निर्मल, पवित्र एवं पापभीरू आत्मा के आदर्श रूप को हम कभी नहीं भूल सकते। हे जीवन निर्मात्री पथ प्रदर्शिका मां, आपके भावी जीवन विकास की आध्यात्मिक मंगलकामनाएं।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 अगस्त - 31 अगस्त, 2025

'सुदीर्घजीवी' 'शासनश्री' साध्वी बिदामांजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्गार

जागी हद पुण्याई

● साध्वी संघप्रभा ●

जागी हद पुण्याई,
सति बिदामां भैक्षव गण री, सचमुच शान बढ़ाई।।

उम्र एक सौ सात वर्ष, ओ कीर्तिमान शासन में।
सुदीर्घ जीवी संबोधन भी, महाश्रमण रै युग में।
चौविहार अनशन कर अन्तिम, नैया पार लगाई।।

चौरासी वर्षां लग लम्बो, संयम जीवन पाल्यो।
ज्ञान ध्यान स्वाध्याय और तप जप स्यूं सार निकाल्यो।
सेवा कर कर, करी निर्जरा, आत्मा नै चमकाई।।

समता सहज सरलता पल-पल, शान्त सुधारस पियो।
सक्रिय स्वस्थ स्वावलम्बी थे, प्रेरक जीवन जीयो।
वीरांगना मेवाड़ भूम री, वीर वृति दिखलाई।।

राजाणै री पुण्यधरा, तुलसी कर दीक्षा पाई।
महाप्रज्ञ गुरू महाश्रमण, महाश्रमणी महर सवाई।
धन्य धरा कालू में अन्तिम वास हुयो सुखदायी।।

साध्वी उज्जवलरेखा जी, सहयोगी सतियां सारा।
लाभ लियो दरसण सेवा रो, आया भक्त हजारां।
संघप्रभा विरला ही पावै, मृत्यु इसी वरदायी।।

लय - संयम मय जीवन हो

जीवन नैया तारी

● साध्वी लब्धियशा, साध्वी गौरवप्रभा ●

शासनश्री साध्वी बिदामांजी, जीवन नैया तारी।
जीवन नैया तारी, पा भैक्षव गण फुलवारी।।

1. भाग्य सवायो, संयम पायो, कल्पवृक्ष लहरायो,
मस्त सदा अपणी ही धुन में, हर क्षण मोद मनायो।
गुरु कृपा रो नहीं पार जी, पा दीर्घजीवी उपहार जी,
तेरापंथ में जन्म सदी रो, नव इतिहास बणायो जी।।

2. सहज सरस व्यवहार मधुर हो, शांत धीर सुखदाई,
तप जप में तल्लीन रह्या, आत्मा स्यूं प्रीत जगाई।
नहीं आलस रो कोई काम जी, श्रम ही साची पहचान जी,
पणापण सगला रे सागै, नहीं कोई थांरी म्हारी जी।।

3. मेवाड़ी रजपूती दृढ़ता, वीर वृत्ति अपणाई,
अनशन कर थे जीती बाजी, जश झण्डी फहराई।
उज्ज्वलरेखा सहवास जी, जीवन में नित मधुमास जी,
सेवाभावी सतियां रो सहयोग मिल्यो मनहारी जी।।

4. ज्योतिचरण प्रभु महाश्रमण रो शासण ओ वरदाई,
महर नजर साध्वी प्रमुखा री, जागी हद पुण्याई।
हो आध्यात्मिक उत्थान जी, ऊपर स्यूं ऊपर वास जी,
करां कामना सिद्ध प्रभु स्यूं जुड़ जावे इकतारी जी।।

लय- मारूजी थांरे देश में

शासनश्री को बधाएं

● साध्वी चरितार्थप्रभा आदि साध्वीवृंद ●

शासनश्री को बधाएं।
दीर्घजीवी बिदामांजी ने नव इतिहास रचाए।।

1. सौम्य शान्त स्वर्णिम आभा से जन-जन का मन मोहे।
संयम चादर निर्मल तेरी दिव्य चेतना सोहे।
पाया गुरुमुख शुभ आशीर्वर, समता स्रोत बहायें।।

2. ज्ञान ध्यान स्वाध्याय प्रियता स्वावलम्बी शैली।
स्वस्थता का राज सुन्दर जीवन चर्या अलबेली।
नम्र, हेम, स्मित, अमृत, उज्जवल खूब समाधि पहुंचाये।।

3. गुरु महाश्रमण की अनमोल निधि हो संयम जीवन सुखकर।
लुधियाना से चरितार्थप्रभा सहवर्ती सतियां मिलकर।
जय जय नंदा जय जय भद्दा, मंगल भाव सजाये।।

4. पंडित मरण अलौकिक तेरा भव्य रूप मनहारी।
अनासक्त अप्रमत चित्त से उच्च श्रेणी कल्याणी।
सिद्ध गति आरोहण कर भव, बंधन मुक्ति मिल जाये।।

लय - संयममय जीवन हो

शासन की श्रृंगार

● मुनि मुकुल कुमार ●

साध्वी बिदामांजी, शासन की श्रृंगार।
पचखा संथारा, मन में हिम्मत धार।।

1. श्री तुलसी की करुणा बरसी।
जीवन की फुलवारी सरसी।
बनी सफल अणगार।।

2. महाप्रज्ञ गुरु की शुभ छाया।
महाश्रमण का था वर साया।
करती आत्म विहार।।

3. सेवाभावी शांत कषायी।
रही साधना सदा सवाई।
करने भवजल पार।।

4. ज्यों की त्यों धर दीन्ही चादर।
संयम जीवन श्रेष्ठ बनाकर।
निर्मल मन अविकार।।

5. उज्ज्वल रेखा जी आदि सतिवर।
का सहकार मिला अति सुन्दर।
मुख-मुख जय जयकार।।

लय - तोता उड़ जाना

धर्मसंघ की यशस्वी साध्वी

● समणी कुसुमप्रज्ञा ●

साध्वीश्री बिदामांजी तेरापंथ धर्मसंघ की एक ऐसी विलक्षण साध्वी थी, जो बहुत अधिक पढ़ी-लिखी नहीं थी, लेकिन विनय, विवेक और स्वाध्याय में अग्रणी थी। वे ऐसी पुण्यशालिनी सहवर्तिनी साध्वी थी, जिनकी अग्रगण्य जैसी अधिक सेवा हुई। शतक पार करने के बाद भी दिन में अधिकांश समय बैठे-बैठे ध्यान, स्वाध्याय और जप करती रहती थी। जब से मैंने उनके दर्शन किए। मेरे मन में उनके प्रति एक अतिरिक्त श्रद्धा के भाव थे। उनकी स्मरण शक्ति को देखकर मैं दंग रह जाती थी। उन्होंने वर्षों पहले जब मेरा जन्म भी नहीं हुआ था, तब इंदौर चातुर्मास किया था। वर्षों तक मोदी परिवार को शय्यातर का लाभ मिला। मैं जब भी उनके दर्शन करती, तब में मेरे संसार पक्षीय दोनों दादाजी-नेमीचन्द मोदी और गेंदालाल मोदी तथा बड़े पिता सज्जनसिंह, इंदरचन्द के नाम बता देती थीं। एक बार रमेश बोहरा, वी. सी. साहब, बच्छराज दूगड़ एवं लूंकड जी के साथ हम दो समणी कालू गए। उन्होंने रमेश बोहरा की मां का नाम बता दिया। बोहरा आश्चर्यचकित थे कि इतने साल के बाद भी इनको नाम कैसे याद हैं?

108 की माला पूरी होने में उनके कुछ मास ही बाकी थे, यदि कुछ समय और संयम पर्याय पालती तो स्वयं पूज्य गुरुदेव भी उन्हें दर्शन देने हेतु पधारने वाले थे। तेरापंथ संघ की एक महान साध्वी, जिसने सबके मन में अपना विशिष्ट स्थान बनाया, संघ की प्रभावना की, उनके आध्यात्मिक विकास के प्रति मंगलकामना।

मेवाड़ धरा की मीरा

● साध्वी डॉ. गवेषणाश्री आदि साध्वीवृन्द ●

मेवाड़ धरा की मीरा, गण में चमकी बन हीरा,
बन धीर वीर गंभीरा, पाया भवजल से तीरा।
बीदामाजी ! का जीवन था उज्ज्वल,
दिल दरिया था निश्छल।।

1. हुज्जा माँ की सुता लाडली चावत कुल कली प्यारी,
वृद्धिचंदजी तात की तनया खिलती केसर क्यारी।
दक कुल की बहु संस्कारी, पींपली ग्राम मनहारी।
तुलसी गुरु कर से दीक्षा, खिल गई जीवन फुलवारी।।

2. श्रम की नज़ीर, पुरुषार्थी, बनी सेवार्थी,
परमार्थी स्वावलंबी जीवन जीया ऋजुमना आत्मार्थी।
गुरु आज्ञा दिल की धड़कन, आज्ञा में बिताया जीवन,
समता का दीप जलाया, थी साधना विलक्षण।

3. सुदीर्घजीवी ! शासनश्री ! गुरुमुख से ख़िताब पाया,
संयम मुक्ता माला का स्वर्णिम इतिहास रचाया।
उज्ज्वलरेखा जी सतियों ने सेवा की सुखदायी,
संयम पथ दीपशिखा को गुरुदृष्टि मिली सवाई।।

लय - सूरज कब दूर गगन से

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

– आचार्य श्री महाश्रमण

संबोधि

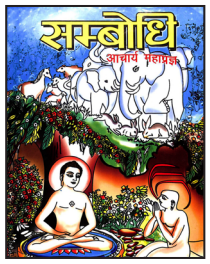

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

आयुष्य कर्म का बंध जीवन के तीसरे भाग में होता है। उस तीसरे का पता नहीं चलता कि यह तीसरा है। असावधान व्यक्ति वह क्षण चूक जाता है। और उस क्षण को चूकने का अर्थ है-जीवन को चूक जाना। इसलिए मैं कहता हूं-क्षण-क्षण जागृत रहो। यह समझते रहो यह तीसरा ही क्षण है। जो इस प्रकार जीवनयापन करता है, सावधान, जागृत रहता है वह मृत्यु पर विजय पा लेता है, भय से मुक्त हो जाता है।

२२. कृष्णा नीला च कापोती, पापलेश्या भवन्त्यमूः।
तैजसी पद्मशुक्ले च, धर्मलेश्या भवन्त्यमूः॥

पाप-लेश्याएं तीन हैं-कृष्ण, नील और कापोत। धर्म लेश्याएं भी तीन हैं-तैजस, पद्म और शुक्ल ।

२३. तीव्रारम्भपरिणतः, क्षुद्रः साहसिकोऽयतिः।
पञ्चास्रवप्रवृत्तश्च, कृष्णलेश्यो भवेत् पुमान्॥

जो तीव्र हिंसा में परिणत है, क्षुद्र है, बिना विचारे कार्य करता है, भोग से विरत नहीं है और पांच आस्रवों में प्रवृत्त है, वह व्यक्ति कृष्णलेश्या वाला होता है।

२४. ईर्ष्यालुर्द्वेषमापन्नो, गृद्धिमान् रसलोलुपः।
अडीकश्च प्रमत्तश्च, नीललेश्यो भवेत् पुमान्॥

जो ईर्ष्यालु है, द्वेष करता है, विषयों में आसक्त है, सरस आहार में लोलुप है, लज्जाहीन और प्रमादी है, वह व्यक्ति नीललेश्या वाला होता है।

२५. वक्रो वक्रसमाचारो, मिथ्यावृष्टिश्च मत्सरी।
औपधिको दुष्टवादी, कापोतीमाश्रितो भवेत्॥

जिसका चिंतन, वाणी और कर्म कुटिल होता है, जिसकी वृष्टि मिथ्या है, जो दूसरे के उत्कर्ष को सहन नहीं करता, जो दंभी है, जो दुर्वचन बोलता है, वह व्यक्ति कापोतलेश्या वाला होता है।

२६. विनीतोऽचपलोऽमायी, दान्तश्चावद्यभीरुकः।
प्रियधर्मा दृढधर्मा, तैजसीमाश्रितो भवेत्॥

जो विनीत है, जो चपलता-रहित है, जो सरल है, जो इंद्रियों का दमन करता है, जो पापभीरु है, जिसे धर्म प्रिय है और जो धर्म में दृढ़ है, वह व्यक्ति तैजसलेश्या वाला होता है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री सदांजी (बोरावड़) दीक्षा क्रमांक 145

साध्वीश्री साधुचर्या में सजग, विनयी, विवेकी, लज्जावती व तपस्विनी थी। आपने अन्तिम समय में संलेखना तप किया। उसकी सूची इस प्रकार है- उपवास/1, 2/2, 3/3, 22/1, 7/4, 8/1, 9/2, 4/5, 6/6 तत्पश्चात 14 दिन का तप चालू किया। 11वें दिन अनशन किया जो 4 प्रहर का आया। आपने 28 महीने का संयम पालकर पंडित मरण को प्राप्त किया।

- साभार: शासन समुद्र -

श्रमण महावीर

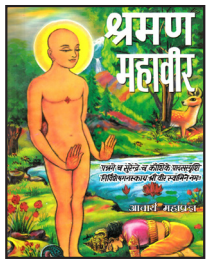

क्रान्ति का सिंहनाद

५. भगवान् के संघ में अभिवादन की एक निश्चित व्यवस्था थी। उसके अनुसार दीक्षा-पर्याय में छोटे मुनि को दीक्षा-ज्येष्ठ मुनि का अभिवादन करना होता था। एक मुनि के सामने यह व्यवस्था समस्या बन गई। वह राज्य को छोड़कर मुनि बना था। उसका नौकर पहले ही मुनि बन चुका था। राजर्षि की आखों पर मद का आवरण आ गया। उसने उस नौकर मुनि का अभिवादन नहीं किया। यह बात भगवान् तक पहुंची। भगवान् ने मुनिपरिषद् को आमंत्रित कर कहा, 'सामाजिक व्यवस्था में कोई सार्वभौम सम्राट् होता है, कोई नौकर और कोई नौकर का भी नौकर । किन्तु मेरे धर्म-संघ में दीक्षित होने पर न कोई सम्राट् रहता है और न कोई नौकर। वे बाहरी उपाधिओं से मुक्त होकर उस लोक में पहुंच जाते हैं, जहां सब सम हैं, कोई विषम नहीं है। फिर अपने दीक्षा-ज्येष्ठ का अभिवादन करने में किसी को लज्जा का अनुभव नहीं होना चाहिए। सम्राट् और नौकर होने की विस्मृति होने पर ही आत्मा में समता प्रतिष्ठित हो सकती है।

राजर्षि का अहं विलीन हो गया। उनका नौकर अब उनका साधर्मिक भाई बन गया।

भगवान् ने अपने संघ को एक समता-सूत्र दिया। वह हजारों-हजारों कंठों से मुखरित होता रहा। उसने असंख्य लोगों के 'अहं' का परिशोधन किया। वह सूत्र है, 'यह जीव अनेक बार उच्च या नीच गोत्र का अनुभव कर चुका है। अतः न कोई किसी से हीन है और न कोई अतिरिक्त । यह जीव अनेक बार उच्च या नीच गोत्र का अनुभव कर चुका है- यह जान लेने पर कौन गोत्रवादी होगा और कौन मानवादी ।"

भगवान् ने अपने संघ में समता का बीज बोया, उसे सींचा, अंकुरित किया, पल्लवित, पुष्पित और फलित किया।

भगवान् ने समता के प्रति प्रगाढ़ आस्था उत्पन्न की। अतः उसकी ध्वनि सब दिशाओं में प्रतिध्वनित होने लगी।

जयघोष मुनि घूमते-घूमते वाराणसी में पहुंचे। उन्हें पता चला कि विजयघोष यज्ञ कर रहा है। वे विजयघोष की यज्ञशाला में गए। यज्ञ और जातिवाद का अहिंसक ढंग से प्रतिवाद करना महावीर के शिष्यों का कार्यक्रम बन गया था। इस कार्यक्रम में ब्राह्मण मुनि काफी रस ले रहे थे। जयघोष जाति से ब्राह्मण थे। विजयघोष भी ब्राह्मण था। एक यज्ञ का प्रतिकर्ता और दूसरा उसका कर्ता। एक जातिवाद का विघटक और दूसरा उसका समर्थक ।

श्रमण और वैदिक-ये दो जातियां नहीं हैं। ये दोनों एक ही जाति-वृक्ष की दो विशाल शाखाएं हैं। उनका भेद जातीय नहीं किन्तु सैद्धान्तिक है। श्रमण-धारा का नेतृत्व क्षत्रिय कर रहे थे और वैदिक धारा का नेतृत्व ब्राह्मण। फिर भी बहुत सारे ब्राह्मण श्रमण-धारा में चल रहे थे और बहुत सारे क्षत्रिय ब्राह्मण-धारा में। उस समय धर्म-परिवर्तन व्यक्तिगत प्रश्न था। उसका व्यापक प्रभाव नहीं होता था। यदि धर्म-परिवर्तन का अर्थ जाति-परिवर्तन होता तो समस्या बहुत गम्भीर बन जाती। किन्तु एक ही भारतीय जाति के लोग अनेक धर्मों का अनुगमन कर रहे थे, इसलिए उनके धर्म-परिवर्तन का प्रभाव केवल वैचारिक स्तर पर होता। जातीय स्तर पर उसका कोई प्रभाव नहीं होता।

विजयघोष के मन में वैचारिक भेद उभर आया। उसने दर्प के साथ कहा-मुने ! इस यज्ञ-मंडप में तुम भिक्षा नहीं पा सकते। कहीं अन्यत्र चले जाओ। यह भोजन वेदविद् और धर्म के पारगामी ब्राह्मणों के लिए बना है।'

मुनि बोले, 'विजयघोष! मुझे भिक्षा मिले या न मिले, इसकी मुझे कोई चिन्ता नहीं। मुझे इसकी चिन्ता है कि तुम ब्राह्मण का अर्थ नहीं जानते।'

विजयघोष, "इसका अर्थ जानने में कौन-सी कठिनाई है? जो ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न ब्राह्मण के कुल में जन्म लेता है, वह ब्राह्मण है।'

मुनि, "मैं तुम्हारे सिद्धान्त का प्रतिवाद करता हूं। जाति जन्मना नहीं होती, वह कर्मणा होती है।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

17 सितम्बर 2025 को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0

17 सितंबर को पूरे भारत में ब्लड डोनेशन हो रहा है। ब्लड की जरूरत समय-समय पर पड़ती है और किसी की जान को जब खतरा होता है, उससे उसकी रक्षा हो जाती है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद ने 17 सितंबर 2025 को पूरे भारतवर्ष में जो यह बीड़ा उठाया है, हम इसकी अनुमोदना करते हैं और ये पूरे भारतवर्ष में ब्लड डोनेशन हो, इसके लिए हार्दिक-हार्दिक मंगलकामना करते हैं।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की आत्मीयता, उनका सद्भाव, मैत्री भावना हमेशा बनी रहती है। कोई कार्यक्रम होता है तो हम तेरापंथी स्थानकवासी परम्परा दोनों ही मिलकर के करते हैं। बहुत-बहुत मंगलकामना।

आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. शिवमुनिजी

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद 17 सितम्बर 2025 को रक्तदान का महाअभियान के अंतर्गत दान धर्म की अराधना करवा रही है। ये महादान करने वाले की सराहना और अनुमोदना का उपक्रम चला रहा है। अभिनंदन है अनुमोदन है।

ये संस्था यह संकल्प, यह ध्येय लेकर चल रही हैं कि किसी भी मनुष्य के जीवन का अंत रक्त के अभाव में ना हो। अभातेयुप के रक्तदान दान धर्म के इस अनुष्ठान के लिए मेरी मंगलभावनाएं।

सभी से अनुरोध इस मंगलकारी अनुष्ठान में सभी अहोभाव पूर्वक सहभागी बनें। निरंतर गतिशील बनें...

श्री प्रवीणऋषिजी महाराज

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि 17 सितंबर 2025 को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा पूरे विश्व में रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जो संपूर्ण मानवता के लिए अनुपम भेंट होगी।

मुझे इस बात की भी खुशी है कि यह संस्था पूर्व में भी इस तरह के बड़े आयोजन कर चुकी है और इनका नाम गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज है। मैं भी संस्था से कई वर्षों से संपर्क में हूं। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि इस रक्तदान अभियान में भाग लेकर एवं रक्तदान कर मानवता की सेवा में अपना योगदान दें।

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री, श्री अर्जुन राम मेघवाल

सबसे पहले तो मैं अभातेयुप को बहुत-बहुत बधाई देता हूं कि उन्होंने 17 सितंबर 2025 को मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का आयोजन किया है। सबसे अच्छी बात यह है कि यह किसी एक जगह पर स्थित नहीं है मगर भारत के हर स्टेट में कम से कम एक सेंटर मौजूद रहने वाला है, जहां पर आप जाकर ब्लड डोनेशन कर सकते हैं। यह एक बहुत अनमोल भेंट है किसी भी व्यक्ति के जीवन में एक बहुत बड़ा परिवर्तन करने में यह एक कारगर भूमिका अदा कर सकती है। ऐसे समय जहां पर भारत में इस तरह की जागरूकता है तो मुझे लगता है कि भारत के प्रत्येक नागरिक को रक्तदान करना चाहिये। यह मानवता और राष्ट्र की महान सेवा है। रक्तदान में सहभागी बनने के निवेदन के साथ सभी के प्रति मंगलकामना।

India Ex Player and coach Sanjay Bangar

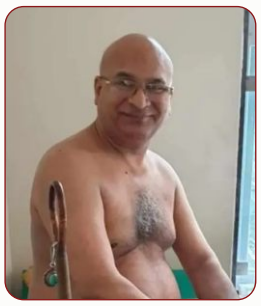

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के द्वारा ब्लड डोनेशन का कार्यक्रम 17 सितंबर को होने वाला है। हम लोग जब कुछ समय के लिए इन ग्रुप, पंथ और मठ को एक तरफ रख देंगे तो हमारे सामने सिर्फ जैन शब्द होता है और जैन समाज होता है, जैन संस्कृति होती है तो वहां पर हमें यह देखने में आता है कि पूरी दुनिया में पूरे संसार में किसी ना किसी रूप से आत्मा के कल्याण के साथ में समाज का कल्याण और विश्व का कल्याण करने के लिए अगर हमेशा कोई तत्पर रहता है तो उस समाज का नाम है जैन समाज। उसी के अंतर्गत ये जो अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद है, इनके द्वारा रक्तदान का 17 सितंबर 2025 को बहुत बड़ा आयोजन होने वाला है। यह एक पूरी दुनिया को एक प्रेरणा है कि इस प्रकार का कार्य, इस प्रकार की दया का भाव, इस प्रकार की समाज सेवा का भाव, मानव सेवा का भाव लोगों को वरदान मिला है। जिस प्रकार से जैन समाज को धन से समृद्ध माना जाता है, उसी प्रकार से संस्कारों और धर्म से भी समृद्ध समाज होता है। सभी को इस मंगल कार्य के लिए बहुत-बहुत शुभ आशीर्वाद, बहुत-बहुत शुभकामना।

मुनिश्री 1008 जय कीर्तिजी

17 सितम्बर 2025 को रक्तदान का महाअभियान 2.0 अभातेयुप के अंतर्गत सामुहिक रूप से देश के साथ विदेशों में भी होने जा रहा है। रक्तदान अपने आप में एक जीवन दान होता है। जिस व्यक्ति को जहां रक्त की जरूरत होती है और उस रक्त से उसका जीवन बचता है, जीवन आगे बढता है ये शुभ कार्य, ये सेवा भक्ति का कार्य बहुत ही सराहनीय है, प्रशंसनीय है।

आचार्य पीयुष सागरजी, खरतरगच्छ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वाधान में रक्तदान की पवित्र सेवा की भावना से रक्तदान अमृत महोत्सव का 17 सितंबर 2025 को दिव्य आयोजन किया जा रहा है। हम उनके उस कार्य की अभ्यर्थना करते हैं, अनुमोदना करते हैं। ऐसा करके अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद जिनशासन का गौरवमय कार्य कर रहा है। मानवता की सेवा का, जीवन बचाने का, जीवन कल्याण का, जो पवित्र कार्य अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद कर रहा है, उसका हम अभिनंदन-अनुमोदन करते हैं। रक्तदान यह वह पवित्र कार्य है, जिससे हम मानवता का संरक्षण करते हैं और इंसान को नई जिंदगी प्रदान करते हैं। धन देवों को धनदाता माना जाता है, भूमि देवों को भूमिदाता माना जाता है, अन्न देव को अन्नदाता माना जाता है, पर जो रक्त देता है, उसे रक्तदाता नहीं, जीवनदाता माना जाता है।

किसी को जीवन प्रदान करने के लिए दिया गया रक्तदान अपने आप में धरती का सबसे महान और पवित्र कार्य है। वह जमाना था जब लोग एक दूजे का रक्तपात करते थे, एक दूजे को जान से मार कर रक्त को बहाया करते थे। विज्ञान का यह युग मानवता के लिए वरदान बना है। जहां पर लोग एक दूजे को बचाने के लिए रक्तदान करने का परम सौभाग्य हासिल कर रहे हैं। दुनिया में जो लोग मानवता के पवित्र कार्य करते हैं, रक्तदान का पवित्र कार्य करते हैं, हम उनकी खूब-खूब अनुमोदना करते हैं। हमारी नजर में आज की तारीख में दान के जो विविध रूप है, उनमें दो रूप बड़े महान रूप हैं- जीते जी रक्तदान कीजिए और मरने के बाद नेत्रदान कीजिए। रक्तदान करके हम लोगों के जीवन को बचाने की कोशिश करते हैं और नेत्रदान करके हम न केवल किसी दूसरे की जिंदगी में रोशनी देते हैं अपितु अपनी आंखों को भी अमरता देते हैं।

हम आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज का कोटि-कोटि अभिनंदन करते हैं, जिनकी पावन निश्रा में, जिनके पावन सानिध्य में, जिनकी पावन प्रेरणा से यह दिव्य कार्य रक्तदान का अमृत महोत्सव आयोजित हो रहा है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का अभिनंदन। यह कार्य मानवता के कल्याण के लिए, मानवीय हितों की रक्षा के लिए, मानवता के विकास के लिए, सबके लिए खूब मददगार बनेगा, ऐसी हमारी मंगलकामना है।

राष्ट्रसंत श्री ललितप्रभजी

NATIONAL HEALTH MISSION
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन

अनुप्रिया पटेल
ANUPRIYA PATEL

सत्यमेव जयते

राज्य मंत्री
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
व रसायन एवं उर्वरक
भारत सरकार
MINISTER OF STATE
HEALTH & FAMILY WELFARE
AND CHEMICALS & FERTILISERS
GOVERNMENT OF INDIA

Message

It gives me immense pleasure to note that the Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad, Ladnun, Rajasthan has been continuously working towards the noble cause of blood donation along with several other meaningful social welfare activities. Blood donation is indeed a profound act of service where one person's selfless gesture becomes another's lifeline and every drop donated carries with it a powerful message of compassion and solidarity.

The dedicated efforts of the Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad to create awareness, break prevailing taboos, and inspire the active participation of youth in such humanitarian causes are truly commendable. By channelising the energy of the younger generation towards service, the Parishad is nurturing a spirit of responsibility, empathy, and universal brotherhood, thereby strengthening the very fabric of society.

I extend my sincere and heartfelt wishes to the organisation for the continued success of its noble initiatives. May their exemplary zeal and unwavering dedication keep inspiring individuals and communities alike, motivating many more to join hands in this mission of service, solidarity, and social upliftment.

(Anupriya Patel)

August 21, 2025
New Delhi

कमरा सं. 650, छठा तल, 'ए' विंग, निर्माण भवन, नई दिल्ली-110011, फोन : +91-11-23061998, 23062427
Room No. 650, 6th Floor, 'A' Wing, Nirman Bhawan, New Delhi-110011, Tele : +91-11-23061998, 23062427
E-mail: mosap-mohfw@gov.in

AOM GROUP
www.aomgroup.org

: शुभकामनाओं सहित :
AOM GROUP

मानव हैं मानवता में प्राण भरें, आओ संकल्पित हो रक्तदान करें

17 सितम्बर 2025 को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0

श्री ओम प्रकाश माथुर
महामहिम राज्यपाल-सिक्किम

श्री असीम घोष
महामहिम राज्यपाल-हरियाणा

श्री गुलाबचंद कटारिया
महामहिम राज्यपाल-पंजाब

श्रीमती तमिलियासाई सौंदर्यराजनजी
महामहिम पूर्व राज्यपाल-तेलंगाना और पांडिचेरी

श्री ओम बिरला
अध्यक्ष-लोकसभा

श्री राजनाथ सिंह
रक्षा मंत्री-भारत

श्री अर्जुन राम जी मेघवाल
केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री-भारत सरकार

श्री अश्वीनी वैष्णव
रेलवे मंत्री-भारत सरकार

श्री सी.आर पाटील
जल शक्ति मंत्री-भारत सरकार

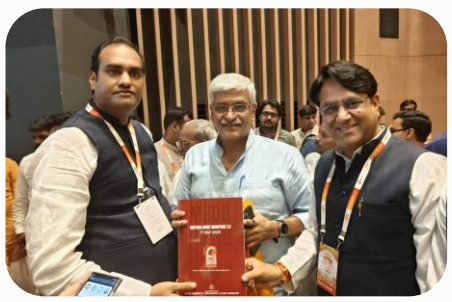

श्री गजेंद्र सिंह शेखावत
संस्कृति एवम पर्यटन मंत्री-भारत सरकार

श्री जगत प्रकाश नड्डा
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री-भारत सरकार

श्री मनसुख मांडविया
रेलवे मंत्री-भारत सरकार

श्री नितिन गडकरी
मार्ग एवं राजमार्ग-भारत सरकार

श्री पियुष गोयल
उद्योग और आपूर्ति मंत्री-भारत सरकार

श्री वासुदेव देवनानी
विधानसभा अध्यक्ष-राजस्थान

श्री भजन लाल शर्मा
मुख्यमंत्री-राजस्थान

श्री एडप्पादी के. पलानीस्वामी
पूर्व मुख्यमंत्री-तमिलनाडु

श्री जोगाराम पटेल
कानून एवं न्याय मंत्री-राजस्थान

श्री थिरु एम.ए. सुब्रमण्यन
स्वास्थ्य मंत्री-तमिलनाडु

श्री फिरहाद हकीम
शहरी विकास एवं आवास मंत्री-पश्चिम बंगाल

17 सितम्बर 2025 को अभातेयुप रक्तदान का एक नया इतिहास रचने जा रही है, जिसमें 7500 से अधिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाएगा। अपेक्षित है कि सभी लोग उस दिन अपनी औद्योगिक इकाईयों, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, अपने संपर्क के व्यापारिक संगठनों क माध्यम से रक्तदान शिविरों का आयोजन करवा कर मानवता के इस यज्ञ में अपनी आहुती प्रदान करें। कृपया रक्तदान शिविर रजिस्ट्रेशन के लिए या अन्य किसी जानकारी के लिए www.abtypmbdd.org पर लॉगिन करें।

/megablooddonationdrive | /iMdonatingBlood | mbdd_official | www.abtypmbdd.org

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

लक्ष्मण रेखाएं

जहां संघ है वहां अनेक व्यक्ति हैं। जहां अनेक व्यक्ति हैं, वहां अनेक मस्तिष्क हैं। जहां अनेक मस्तिष्क हैं वहां विभिन्न मतियां होती हैं- 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना'। एक मस्तिष्क में भी अनेक मति/विचार होते हैं तो अनेक मस्तिष्कों में तो वे और भी ज्यादा संभावित हो जाते हैं। विचार-भेद छद्मस्थ (अपरिपूर्ण-ज्ञानवाले) व्यक्तियों में ही हो सकता है। सर्वज्ञों में परस्पर कोई मतभेद नहीं होता और सर्वथा चिंतनशून्य व्यक्तियों में भी विचार भेद की स्थिति नहीं बनती है। यह भेद सर्वज्ञ और अज्ञ इन दोनों के मध्य की स्थिति वालों में ही पाया जाता है।

समुदायों में अनेक बार संघर्ष पैदा होते हैं और अनेक बार उन संघर्षों का कारण सिद्धान्त-भेद/विचार-भेद बताया जाता है। वह कभी-कभी हो भी सकता है। परंतु संभवतः बहुधा संघर्ष का मूल कारण विचार-भेद नहीं होता, अपितु स्वयं का तुच्छ स्वार्थ, अहंकार पर चोट व आकांक्षा की आपूर्ति होती है और उसे ही विचार-भेद का जामा पहना दिया जाता है। पूज्य गुरुदेवश्री के आचार्य-काल में तेरापंथ धर्मसंघ में जो बड़े-बड़े आंतरिक संघर्ष पैदा हुए। उनमें भी मतभेद की अपेक्षा मनभेद ज्यादा सशक्त रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है।

किसी सिद्धान्त को लेकर शुद्ध मतभेद हो जाए तो वह बुरा नहीं होता, परंतु मन-भेद बुरा होता है। शुद्ध मतभेद समझ के कोण की भिन्नता से होता है। वह कोण परस्पर स्पष्ट हो जाए तो मतभेद समाप्त भी हो सकता है। सत्य और अनेकान्त के प्रति समर्पित तथा पूर्वाग्रह-मुक्त व्यक्तियों में और समग्रता से तत्त्व को समझने वाले व्यक्तियों में भी विचार-साम्य देखने को मिलता है। फिर चाहे वे भिन्न-भिन्न देश, भिन्न-भिन्न वेश और परिवेश में भी जीने वाले भी क्यों न हों? यदि दोनों ओर सामञ्जस्य की भावना हो और सत्यपरक दृष्टिकोण हो तो दुनिया में विचार-भेद को प्रायः-प्रायः समाप्त किया जा सकता है। फिर भी मति श्रुत ज्ञान के क्षयोपशम की तरतमता के कारण भी कोई मतभेद उत्पन्न हो सकता है।

तेरापंथ धर्मसंघ की विधान-धाराओं में एक है- 'श्रद्धा या आचार के बोल को लेकर गण में भेद न डाले। दलबंदी न करे। आचार्य व बहुश्रुत साधु जो कहे वह मान ले अथवा केवली गम्य कर दे।' संघ से किसी साधु-साध्वी के मन में श्रद्धा/ मान्यता के बारे में अथवा आचार (अमुक कार्य कल्पनीय है या नहीं) के विषय में कोई मतभेद पैदा हो सकता है। तेरापंथ की विधान-धाराओं में एक यह भी है—'जिसका मन साक्षी दे, भली-भांति साधुपन पलता जाने, गण में तथा अपने आप में साधुपन माने तो गण में रहे, किन्तु वंचनापूर्वक गण में न रहे।'

केवलीगम्य करने की धारा और संघ छोड़ देने की धारा दोनों परस्पर विरोधी प्रतीत होती हैं। यहां विमर्श की अपेक्षा है। जहां मतभेद इस कोटि का हो कि किसी को यह लगे कि संघ में शुद्ध साधुपन है ही नहीं, वहां तो वंचनापूर्वक संघ में रहना ही गलत है। इसलिए संघ-त्याग की बात लागू होती है। स्वयं आचार्य भिक्षु स्थानकवासी जैन परंपरा में दीक्षित मुनि थे। परंतु उनको ऐसा लगा कि संघ में शुद्ध साधुपन है ही नहीं, वैसी स्थिति में उनको संघ-त्याग का मार्ग ही स्वीकार करना पड़ा। जहां ऐसा मतभेद नहीं होता कि साधुत्व ही अनस्तित्व को प्राप्त हो, वहां 'केवलीगम्य करने' की बात प्रभावी होती है। मतभेद होने पर बहुश्रुत व्यक्तियों के साथ चर्चा की जाए, उनसे समझने का प्रयास किया जाए। उनसे संतोषजनक समाधान न मिले तो आचार्य से चर्चा की जाए। फिर भी प्रश्न समाहित न हो तो व्यक्ति यह सोचे कि निश्चय में तो केवली जानते हैं, वही सत्य है। व्यवहार' में संघ में आचार्य जो स्थापना करते हैं, वह मुझे स्वीकार है। यह एक स्वस्थ तरीका है। परन्तु व्यक्ति किसी बोल को लेकर संघ में भेद डालने की चेष्टा करे तो वह संघ-द्रोही बन जाता है।

आचार्य भिक्षु की दृष्टि में आचार एवं विचार की विशुद्धि मुख्य थी। उस विशुद्धि के लिए अनुशासित संगठन आधार था। उस संगठन की सुदृढ़ता व चिरस्थायित्व के लिए उचित समझोता-वृत्ति भी आवश्यक है। साधक का जीवन निश्छलता से परिपूर्ण हो और सत्यपूर्ण हो, चिन्तन में अनाग्रह हो।

संघ में आचार-विचार सम्बन्धी नाना प्रश्न उठ सकते हैं। उस स्थिति में क्या किया जाए? इस समस्या के संदर्भ में आचार्य भिक्षु ने कहा-'बहुश्रुत साधुओं व आचार्य से समझने की चेष्टा की जाए! कोई बात समझ में न आए तो क्या करना चाहिए? क्या कुछ साधु-साध्वियों को अपनी तरफ आकर्षित करके संघ-त्याग और संघ-विद्रोह कर देना चाहिए?

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan
समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

सितम्बर 2025
सप्ताह के विशेष दिन

01 सितम्बर
भगवान सुविधिनाथ निर्वाण कल्याणक एवं 32वां विकास महोत्सव

02 सितम्बर
भगवान अरिष्टनेमि केवलज्ञान कल्याणक

05 सितम्बर
223वां आचार्य भिक्षु चरमोत्सव

06 सितम्बर
पक्खी

07 सितम्बर
भगवान नमिनाथ च्यवन कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री गुमानमलजी (बीदासर) दीक्षा क्रमांक 393

मुनिश्री साधुचर्या का सम्यक पालन करते हुए तपस्या के क्षेत्र में निरंतर गतिशील रहे। आपके तप की समग्र तालिका इस प्रकार है- उपवास/1089, 2/70, 3/15, 4/8, 5/7, 6/5, 7/1, 8/4, 9/1, 10/1, 11/1, 12/1, 13/1, 14/1, 15/1, 16/1, 17/1, 18/1, 33/1। तप के कुल दिन 1578, जिनके 4 वर्ष 4 महिने 18 दिन होते है। मुनिश्री ने सं 1995 चाड़वास में लघुसिंह निष्क्रीडित तप की चौथी परिपाटी प्रारंभ की। वे क्रमानुसार नौ तक चढ़ गये। वापस उतरते समय तीसरी बार आठ दिन का तप सम्पूर्ण कर दिवंगत हो गये। **– साभार : शासन समुद्र –**

दायित्व प्राप्ति के साथ दायित्व बोध भी होना चाहिए

चेन्नई।

साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, चेन्नई के तत्वावधान में ज्ञानशाला प्रशिक्षकों का विशेष सेमिनार तेरापंथ भवन, साहूकारपेट में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। सभा अध्यक्ष अशोक खतंग ने स्वागत भाषण में प्रशिक्षिकाओं को मंगलकामनाएं प्रेषित करते हुए ज्ञानशाला परिवार के प्रति अपनी शुभेच्छा व्यक्त की। साध्वी उदितयशा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रशिक्षिकाओं को दायित्व की प्राप्ति के साथ-साथ दायित्व-बोध भी होना चाहिए। उन्होंने एक प्रेरणादायक कथा के माध्यम से यह बात सरलता से समझाई, जो सभी प्रशिक्षकों को सहज रूप से ग्राह्य हुई।

साध्वी संगीतप्रभा जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत कर प्रशिक्षिकाओं को प्रेरित किया और कहा कि ज्ञानार्थियों के मन में प्रशिक्षकों के प्रति आदर का भाव जागृत हो, इसके लिए उनका आचरण और वेशभूषा प्रशिक्षकत्व की गरिमा को दर्शाने वाली होनी चाहिए।

साध्वी भव्ययशा जी ने 14वां बोल एवं आचार्यों के नाम कंठस्थ करने की एक सहज और उपयोगी विधि बताई, जिससे बच्चे सरलता से याद कर सकें। साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने गीत प्रस्तुति के साथ कहा कि प्रशिक्षिकाएं ज्ञानार्थियों के लिए मातृतुल्य होती हैं—पहले उन्हें अपनाएं, फिर समझें और समझाएं।

इस अवसर पर लगभग 70 प्रशिक्षिकाओं सहित सभा अध्यक्ष अशोक खतंग, किलपॉक सभा अध्यक्ष अशोक परमार, ज्ञानशाला सह-प्रभारी अनिल बोथरा, आंचलिक संयोजिका अनीता चोपड़ा, सह-संयोजिका कविता रायसोनी एवं अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का कुशल संचालन ज्ञानशाला प्रभारी राजेश सांड ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन मंत्री गजेंद्र खांटेड ने प्रस्तुत किया।

संक्षिप्त खबर

जहां मृदुता, वहां कटुता नहीं

जयपुर। जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण दिवस पर भिक्षु साधना केंद्र, श्याम नगर में मुनि तत्त्व रुचि जी ₹तरुण₹ के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें तीर्थंकर भगवान की स्तुति एवं तीर्थंकर की वाणी का उच्चारण करते हुए मुनिश्री ने कहा - अहिंसा, मैत्री और करुणा मानवता के शाश्वत तत्त्व हैं। इन तत्त्वों से वैश्विक समस्याओं का समाधान और विश्व शांति संभव है। मुनिश्री ने आगे कहा - आवेश और अहंकार, वैयक्तिक एवं वैश्विक समस्याओं को सुलझाने में बाधक हैं। जीवन में मार्दव, मृदुता और कोमलता का विकास कर इस बाधा को दूर किया जा सकता है। यह वास्तविकता है कि जहां मृदुता होती है, वहां कटुता टिक नहीं सकती। मुनि संभव कुमार जी ने कहा - आवेश-आवेग, कलह-कदाग्रह, दुराग्रह और तकरार आदि का आधार अहंकार है।

तप समाचार

श्याम नगर, जयपुर। मुनि तत्त्वरुचि जी ₹तरुण₹ के सान्निध्य में सुकुमाल बाई बोथरा ने 11 की तपस्या की।

यशवंतपुर, बेंगलूरु। साध्वी सोमयशाजी के सान्निध्य में लीला भंसाली, गर्व गन्ना द्वारा नौ की तपस्या संपन्न की गई।

बायतु। 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में मनोज चौपड़ा व कोमल चौपड़ा ने सजोड़े अठाई की तपस्या की। राजुल लोढ़ा, कमला सांखला ने नौ तथा संगीता बालड़, खुशी मालू, दिनेश बालड़, पीयूष बालड़ ने अठाई की तपस्या की।

पडिहारा। साध्वी संघप्रभाजी के सान्निध्य में कंचन दुगड़ ने अट्ठाई की तपस्या की।

गंगाशहर। मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में सम्पतदेवी भंसाली ने 29 दिन, पवन छाजेड़ ने 19, तारादेवी बैद ने 16, नीलमदेवी बोथरा ने 16, चांदनी रांका 11, कनक कुमार गंग ने 9, मयंक कुमार सिंगी 7, प्रियंका भंसाली ने 7, उषा बांठिया ने 10 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

समण संस्कृति संकाय द्वारा जैन विद्या परीक्षा प्रमाण पत्र वितरण

विजयनगर, बैंगलोर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा विजयनगर के तत्वावधान में, समण संस्कृति संकाय के अंतर्गत गत वर्ष आयोजित जैन विद्या परीक्षा के प्रमाणपत्रों का वितरण साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में किया गया।

समण संस्कृति संकाय की स्थानीय संयोजिका बरखा पुगलिया ने संकाय की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि गत वर्ष लगभग 186 परीक्षार्थियों ने विजयनगर केंद्र से जैन विद्या परीक्षा दी।

साथ ही, कन्या मंडल की दो कन्याओं ने द्वितीय वर्ष और तृतीय वर्ष में अखिल भारतीय स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त कर विजयनगर केंद्र का नाम रोशन किया।

समण संस्कृति संकाय की दक्षिणांचल कर्नाटक प्रभारी कंचन छाजेड़ ने कहा कि बहुत कम परीक्षार्थियों के साथ मैंने विजयनगर केंद्र की शुरुआत की थी, और आज विजयनगर की संयोजिका एवं उनकी पूरी टीम के अथक परिश्रम से इसका जो स्वरूप दिखाई दे रहा है, वह मेरे लिए अत्यंत गौरव का विषय है। उन्होंने अधिक से अधिक संख्या में जैन विद्या पाठ्यक्रम से जुड़ने की प्रेरणा दी।

सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने सभी परीक्षार्थियों को उत्तीर्ण होने पर शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए समण संस्कृति संकाय की पूरी टीम को बधाई दी। साध्वी संयमलता जी ने भी सभी परीक्षार्थियों के प्रति मंगलभावनाएं प्रेषित करते हुए कहा कि अधिक से अधिक संख्या में श्रावक-श्राविकाएं जैन विद्या पाठ्यक्रम से जुड़ें तथा जैन धर्म और जैनत्व को जानें।

इस अवसर पर आगामी सितंबर माह में होने वाली जैन विद्या परीक्षा के बैनर का अनावरण किया गया। सभा द्वारा सभी परीक्षार्थियों को प्रमाणपत्र के साथ पारितोषिक देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में समण संस्कृति संकाय से भरत बोथरा, ममता मांडोत, सभा के पदाधिकारी, अर्हम भवन के मंत्री विनोद पारख, तेयुप अध्यक्ष विकास बांठिया, महिला मंडल अध्यक्षा महिमा पटावरी सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

शक्तिशाली और मंत्रगर्भित है भक्तामर

बीकानेर।

तेरापंथ भवन में विराजित 'शासनश्री' द्वय साध्वी मंजूप्रभा जी एवं साध्वी कुंथुश्रीजी के सान्निध्य में भक्तामर का अनुष्ठान उल्लासपूर्वक आयोजित किया गया।

साध्वी कुंथुश्री जी ने सभा को भक्तामर के महत्व के बारे में बताते हुए फरमाया कि भक्तामर स्तोत्र जैन परंपरा में सर्वमान्य स्रोत है। श्वेतांबर और दिगंबर दोनों ही इसे श्रद्धा से स्तुत करते हैं। जीवन में अनेक परिस्थितियां आती हैं, किंतु व्यक्ति को चाहिए कि वह उनसे प्रभावित न हो। संसार में अनेक बाधाएं और समस्याएं हैं, जिनका सामना करने के लिए मनोबल की आवश्यकता होती है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, जिसके जीवन में समस्या न आए। उनका सामना करने के लिए आलंबन चाहिए, और सबसे बड़ा आलंबन है आचार्य मानतुंग द्वारा रचित भक्तामर स्तोत्र। यह शक्तिशाली और मंत्रगर्भित है, जिससे सभी कार्य सिद्ध हो सकते हैं। इसका प्रतिदिन पाठ करने वाला उल्लास, सुख, शांति और समाधि की अनुभूति कर सकता है। इस स्रोत में भक्ति की शक्ति, आदिनाथ के प्रति अनुरक्ति और भीतर की ओर गति करने की ऊर्जा निहित है।

साध्वीश्री ने ऐतिहासिक प्रसंगों में जिनदत्त सूरी आदि की घटनाओं पर प्रकाश डाला, जिससे भक्तामर की महिमा से लोग चित्ताकर्षित हो उठे। साध्वी गुरुयशाजी, साध्वी सुमंगलाश्री जी, साध्वी संबोधयशा जी आदि ने अनेक मंत्रों का उच्चारण किया और सामूहिक स्वर में सभी ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। कार्यक्रम में उपस्थित जनों की संख्या उल्लेखनीय रही। साध्वी वृंद ने 'ऋषभाय नमः' गीत से मंगलाचरण किया।

भिक्षु प्रीमियर लीग का हुआ आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

भिक्षु प्रीमियर लीग एक रोचक और क्रिकेट-शैली की रात्रिकालीन क्विज़ प्रतियोगिता, साध्वी पुण्ययशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, राजराजेश्वरी नगर में आयोजित की गई।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई, जिसके पश्चात स्वागत किशोर मंडल संयोजक नमन छाजेड़ ने किया तथा संचालन सदस्य नैतिक जैन और जतिन बांठिया ने संभाला। इस प्रतियोगिता में बल्ला और गेंद के स्थान पर सवाल और जवाब आमने-सामने होते हैं। हर बॉल पर भिक्षु स्वामी के जीवन पर आधारित प्रश्न पूछा गया जाता है, जिसका सही उत्तर निर्धारित समय सीमा में देने पर टीम को रन मिलते हैं। इसमें रणनीति, लाइव कॉमेंट्री और भरपूर मनोरंजन के साथ भक्ति और ज्ञान का अद्वितीय संगम देखने को मिला, जो सभी के लिए ज्ञानवर्धक रहा।

प्रतियोगिता में कुल 32 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिन्हें 8-8 के चार दलों में विभाजित किया गया। इन टीमों के नाम इस प्रकार थे— 1. सिरियारी, 2. कंटालिया, 3. सुधरी और 4. बगड़ी। प्रतियोगिता में कंटालिया टीम ने प्रथम स्थान और सिरियारी टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए तथा प्रत्येक को कंसोलेशन पुरस्कार भी दिया गया। विशेष सहयोग किशोर मंडल प्रभारी महावीर पितलिया का रहा।

तेयुप अध्यक्ष विक्रम मेहर ने अपने संदेश में कहा कि किशोर मंडल समय-समय पर ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन कर धर्म संघ में आगे बढ़े। पधारे हुए सभी अतिथियों ने किशोर मंडल का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर आभातेयुप, तेयुप, सभा/ट्रस्ट, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल एवं श्रावक समाज के पदाधिकारीगण उपस्थित रहे। आभार जतिन बांठिया ने व्यक्त किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 अगस्त - 31 अगस्त, 2025

इच्छाओं पर नियंत्रण करने वाला चढ़ता है सफलता के सोपान

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर, राजाजीनगर एवं हनुमंतनगर द्वारा संयुक्त रूप से बारह व्रत कार्यशाला का शुभारंभ साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में अर्हम भवन, विजयनगर में किया गया।

साध्वी संयमलता जी ने व्रतों की महत्ता बताते हुए कहा कि व्रत संकल्प शक्ति का विकास करने वाले होते हैं। अपनी इच्छा पर नियंत्रण करने वाला ही सफलता के सोपान चढ़ता है।

चाहे व्यापार हो, व्यवसाय, उद्योग, राजनीति या सामाजिक कार्य—हर क्षेत्र में वही व्यक्ति सफल होता है जिसका संकल्प बल दृढ़ होता है। व्रत कार्यशाला में साध्वी श्री ने लेदर (चमड़ा) कैसे बनता है, इसका विशद् विवरण दिया। इसके पश्चात लगभग 125 व्यक्तियों ने लेदर से बनने वाली वस्तुओं के उपयोग का त्याग किया।

साध्वी रौनकप्रभा जी ने अहिंसा अणुव्रत की चर्चा की। साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि जिसके भीतर करुणा होती है, वही अणुव्रतों का पालन कर सकता है।

इस अवसर पर सभा विजयनगर अध्यक्ष मंगल कोचर, तेयुप विजयनगर अध्यक्ष विकास बाँठिया, राजाजीनगर अध्यक्ष जितेश दक, हनुमंतनगर मंत्री देवेंद्र आंचलिया, महिला मंडल विजयनगर अध्यक्षा महिमा पटावरी सहित अन्य पदाधिकारीगण एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

आत्मा को मांजने की प्रक्रिया है व्रत

हैदराबाद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद द्वारा साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में जैन तेरापंथ भवन, डी. वी. कॉलोनी में बारहव्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप की भिक्षु प्रज्ञा मंडली ने सुमधुर गीतों के संगान से किया। तेयुप अध्यक्ष राहुल गोलछा ने सभी श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत करते हुए कहा कि बारह व्रतों को समझना और जीवन में धारण करना अत्यंत आवश्यक है।

कार्यशाला में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने जीवन निर्माण की प्रेरणा देते हुए कहा— "व्रत केवल वर्जना नहीं, यह आत्मा को मांजने की प्रक्रिया है। बारह व्रत वह मूल स्तंभ हैं, जो व्यक्ति को संयम, विवेक और नैतिक शक्ति प्रदान करते हैं।" उन्होंने सरल भाषा और प्रभावशाली शब्दों में व्रतों की व्यावहारिक उपयोगिता को स्पष्ट करते हुए कहा कि बारह व्रतों का पालन जीवन को दिशा देता है और आत्मा को कलुषता से दूर करता है। युवा पीढ़ी यदि इन सिद्धांतों को अपनाए तो उनका जीवन संयममय और उज्ज्वल बन सकता है।

साध्वी मेरु प्रभा जी, साध्वी मयंक प्रभा जी एवं साध्वी दक्ष प्रभा जी ने अपनी गीतिकाओं के माध्यम से व्रतों का सार प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का सुव्यवस्थित संचालन शुभम् बैद ने किया। मंत्री नीरज सुराणा ने साध्वी वृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के संयोजक रवि प्रकाश कोटेचा एवं शुभम् बैद को समुचित व्यवस्थाओं के लिए धन्यवाद दिया गया।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

– आचार्य श्री महाश्रमण

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

– आचार्य श्री महाश्रमण

मासखमण प्रत्याख्यान समारोह

पल्लावरम।

तेरापंथ भवन में मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में निर्मल रांका के 28 दिन के मासखमण तप का प्रत्याख्यान समारोह सम्पन्न हुआ। मुनि दीपकुमार जी ने अपने प्रवचन में कहा कि प्रबल मनोबल वाले ही मासखमण जैसी कठोर तपस्या कर सकते हैं। निर्मल रांका ने यह तप कर असाधारण मनोबल का परिचय दिया है।

तप मंगलकारी है, क्योंकि यह शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा—चारों को शुद्ध व पवित्र करता है। तप शरीर के रोगों का निवारण करता है और जैन शासन की प्रभावना का महान हेतु है। निर्मल जी ने मासखमण तप कर एक अद्भुत चमत्कार प्रस्तुत किया है। गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी की कृपा से यह तपस्या पूर्ण हुई है। उनके शासनकाल में चारों ओर तप की ज्योति प्रज्वलित हो रही है।

मुनिश्री ने तपस्वी के सम्मान में स्वरचित गीत का संगान किया। संचालन करते हुए मुनि काव्यकुमार जी ने कहा कि तपस्या आत्मा की शुद्धि का माध्यम है। निर्मल रांका ने यह तप कर संकल्प-बल की मजबूती का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा और तेरापंथ महिला मंडल, पल्लावरम की ओर से तपस्वी को मासखमण तप अभिनंदन-पत्र द्वारा सम्मानित किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष दिलीप भंसाली, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा लता गिरिया, परिवार की ओर से राकेश रांका, संगीता रांका, नमन रांका, पवन मेहता, विभा बम्बबोली, तितिक्षा आदि ने भावपूर्ण विचार एवं गीत प्रस्तुत किए। तेरापंथ महिला मंडल ने सामूहिक गीत का संगान किया, वहीं तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याओं ने नाटक की प्रस्तुति देकर कार्यक्रम को और भी रोचक बनाया।

विवेक पितलिया ने साध्वीप्रमुखा जी के संदेश वाचन किया। तेयुप सहमंत्री श्रीकांत चौरड़िया ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्य भिक्षु नवयुग के सृजक थे

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आचार्य भिक्षु की मासिक पुण्यतिथि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में आचार्य भिक्षु की अनुशासन शैली का चित्रण किया गया।

साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु नवयुग के सृजक थे। उन्होंने आध्यात्मिक जगत में नवयुग का सृजन किया। शिथिलाचार की स्थिति को दूर कर शुद्ध धर्म का प्रकाश दिया। उनका उद्देश्य कोई नया पंथ चलाना नहीं था, वे निरभिमानी, निस्पृह संत थे। वे शुद्ध साधुत्व के संपोषक थे। वे चाहते थे कि दुनिया में शुद्ध धर्म का प्रकाश फैले, इसलिए उन्होंने धार्मिक जगत में धर्मक्रान्ति की। यह धर्मक्रान्ति तेरापंथ के रूप में प्रतिष्ठित हुई। आचार्य भिक्षु ने जो बीज बोया, वह विस्तार लेने लगा, तेरापंथ बढ़ने लगा। तब आचार्य भिक्षु ने संघ की सुदृढ़ता के लिए मर्यादाओं का निर्माण किया और संघ व्यवस्था को स्थायी बनाने के लिए अनुशासन के महत्व को स्पष्ट किया। उनका अनुशासन उस युग के अनुरूप था। उन्हें अनुशासन में ढील सहज नहीं थी। संघ छोटा होने पर भी वे गलती को नज़रअंदाज़ नहीं करते थे। गलती करने वालों पर कठोर अनुशासन लागू करते थे। यह उनका बड़ा योगदान है।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु अनुशासन के व्याख्याता एवं सूत्रधार थे। उनका अनुशासन वज्र से भी कठोर और फूल से भी अधिक कोमल था। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने विचार रखे एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच संचालन किया। राहुल संकलेचा ने मंगल संगान किया। साध्वी अणिमाश्रीजी ने आचार्यप्रवर द्वारा रचित गीत का सामूहिक संगान कराया।

सभा मंत्री प्रकाश बैद मूथा ने आगामी गुरु दर्शन यात्रा की जानकारी दी। इस अवसर पर सामूहिक आयंबिल अनुष्ठान हुआ जिसमें अनेक श्रावकों ने उपवास व आयंबिल कर श्रद्धा अर्पित की।

भाषण प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा भिक्षु विहार में भाषण प्रतियोगिता (कनिष्ठ वर्ग) का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता को दो वर्गों में विभाजित किया गया। प्रथम वर्ग में 13 वर्ष तक के प्रतिभागियों ने "मेरे माता-पिता" विषय पर अपने विचार व्यक्त किए, जबकि द्वितीय वर्ग में 14 से 19 वर्ष के प्रतिभागियों ने "कैसा हो मेरा फ्रेंड सर्कल" विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रतियोगिता में कुल 25 बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

निर्णायक के रूप में सुमोद कुमार शर्मा एवं शिल्पा छोरेड़ सिंधी ने अपनी भूमिका निभाई। प्रथम वर्ग में प्रथम स्थान पर कनिष्का बैद, द्वितीय स्थान पर काव्या सेठिया और तृतीय स्थान पर लावण्या सेठिया रहीं।

वहीं द्वितीय वर्ग में प्रथम स्थान पर मिसीका बैद, द्वितीय स्थान पर करिश्मा सेठिया और तृतीय स्थान पर मयंक जैन रहे। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुनीता नाहर ने किया।

'आधुनिक युग में कैसे सुरक्षित रखें संस्कारों की विरासत' विषय पर वरिष्ठ वर्ग की भाषण प्रतियोगिता का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलगान से हुआ। निर्णायक के रूप में गजेन्द्र नाहटा एवं राकेश संचेती उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में कुल 14 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में नीतू हीरावत ने प्रथम स्थान, अक्षज बोथरा ने द्वितीय स्थान और ज्योति पारख ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। तेयुप द्वारा विजेताओं व सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया तथा निर्णायकों का सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर प्रकाश चिंडालिया ने अपने विचार व्यक्त किए। स्वागत भाषण उपाध्यक्ष धनपत बरडिया ने दिया, संचालन हर्षित मालू ने किया तथा आभार ज्ञापन तेयुप सहमंत्री लोकेश दुगड़ ने प्रस्तुत किया।

तप अशुभ कर्मों को क्षय करता है

गांधीनगर, बेंगलुरु।

डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी के सान्निध्य में चातुर्मासिक तपोत्सव के अंतर्गत रेखा खांटेड तथा नीतू भंसाली के मासखमण तप करने पर तप अभिनंदन समारोह का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा गांधीनगर, बेंगलुरु द्वारा तेरापंथ सभा भवन में किया गया।

मुनिश्री ने तपस्या की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि तप अशुभ कर्मों का क्षय करता है। तपस्या करने वाले की लालसाएं मिट जाती हैं, शरीर के प्रति आसक्ति और मोह कम हो जाता है। तप को समाधि का उत्तम साधन कहा गया है। तप करने वालों का आभामंडल तेजस्वी बनता है, जिससे न केवल मानव बल्कि देवता भी आकर्षित होते हैं। स्वाद विजय की विशेष साधना ही तपस्या है और प्रत्येक श्रावक को तप करने का उत्साह बनाए रखना चाहिए। यही जैनों के लिए गौरव का विषय है।

आज दो बहनें 27 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान कर रही हैं। उनके प्रति मुनिश्री ने आध्यात्मिक मंगलकामनाएं व्यक्त कीं। मूर्तिपूजक जैन संघ से पधारे मुनि ध्यानयोग विजयजी ने भी तप अनुमोदना प्रकट की। नचिकेता मुनि आदित्य कुमारजी ने एक भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया। सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने तपस्वी बहनों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। कविता भंसाली, संजना रायसोनी और संगीता गोटावत ने गीतिका द्वारा तप की अनुमोदना की। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री विनोद छाजेड ने किया।

तेज, ओज एवं प्राणऊर्जा का संवर्धन करती है तपस्या

बालोतरा।

तेरापंथ भवन, बालोतरा में साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तप अनुमोदना का भव्य कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। इस अवसर पर मंजु ओस्तवाल एवं मनीषा गोगड़ ने मासखमण तप तथा मनोज ओस्तवाल ने सिद्धि तप का प्रत्याख्यान किया।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने उपस्थित जनता को संबोधित करते हुए कहा— "तपस्या संजीवनी बूटी है, जो भवभ्रमण को सीमित करती है। यह तेज, ओज एवं प्राणऊर्जा का संवर्धन करती है और तपस्वी के आभामंडल को तेजोदीप्त बनाती है। चातुर्मास का यह समय तप की पूर्ण ऋतु है और बालोतरा में इसका अनुपम ठाट देखने को मिल रहा है।"

उन्होंने कहा कि चातुर्मास प्रारंभ हुए एक माह भी नहीं हुआ और पहले ही दो मासखमण व एक सिद्धि तप की अनुमोदना का अवसर मिलना गौरवपूर्ण है। पाँचों तपस्वी सिंह राशि के हैं, जिससे तप रूपी सिंह की गर्जना पूरे चातुर्मास में सुनाई देती रहेगी। विशेष रूप से मनोज ओस्तवाल द्वारा सिद्धि तप तथा पुत्र-पुत्री के अट्ठाई तप ने इसे और अनूठा बना दिया। साध्वी कर्णिकाश्रीजी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने भावपूर्ण तप अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया। साध्वीप्रमुखाश्रीजी का प्रेरणादायी संदेश सभा मंत्री प्रकाश वेदमुथा, तेयुप सहमंत्री प्रकाश रांका एवं महिला मंडल अध्यक्ष चंचल भंडारी द्वारा वाचन किया गया।

सभा अध्यक्ष महेंद्र वेदमुथा, फतेहचंद ओस्तवाल एवं इंद्रा कोठारी ने अपने विचार रखे। दोनों ओस्तवाल परिवार की बहनों ने गीत प्रस्तुत किए।

तेरापंथ सभा की ओर से तपस्वियों का अभिनंदन पत्र एवं साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

रूपांतरण की प्रक्रिया है दीक्षा

भायंदर।

'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' के सान्निध्य में पालघर से समागत दीक्षार्थिनी बहन भावना बाफणा का मंगल भावना समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। पालघर महिला मंडल की अध्यक्षा रंजना जैन ने शुभकामनाएँ व्यक्त कीं। भायंदर महिला मंडल की अध्यक्ष संगीता बोथरा ने स्वागत वक्तव्य देते हुए दुपट्टा एवं माला से दीक्षार्थिनी भावना का सम्मान किया। सभा उपाध्यक्ष विजयसिंह बोकडिया एवं तेयुप मंत्री मनोज कच्छारा ने भी अपने विचार रखे।

साध्वी प्रियंवदा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जैन भागवती दीक्षा जीवन की विशिष्ट उपलब्धि है। यह रूपांतरण की वह प्रक्रिया है जिसमें सिंहवृत्ति से संयम ग्रहण कर मुमुक्षु मोक्ष रूपी लक्ष्मी का वरण करता है। साध्वी प्रेरणाश्रीजी, साध्वी मृदुयशाजी एवं साध्वी ऋद्धियशाजी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। दीक्षार्थिनी भावना बाफणा ने भाव व्यक्त करते हुए कहा – मैं अत्यंत सौभाग्यशाली हूँ कि मेरी दीक्षा श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी के मुखकमल से अगले महीने होने जा रही है। मुझे आशीर्वाद दें कि मैं संयमी जीवन में निरंतर प्रगति करती रहूँ।

इस अवसर पर सभा उपाध्यक्ष राजेन्द्र कोठारी, जैन विद्या प्रभारी पारसमल कच्छारा एवं महिला मंडल की अनेक बहनें उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की मंत्री निशु डागा ने किया।

मुमुक्षु मंगल भावना समारोह हुआ संपन्न

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ भवन, मदुरै में मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में ₹प्रीत करो प्रभुवर सेर विषय पर मुमुक्षु प्रीत कोठारी का मंगल भावना कार्यक्रम हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र और हृदयस्पर्शी गीत ₹प्रभु से मिलूं कैसे, पग पग पर बंधन हैर के साथ हुआ। सभा अध्यक्ष गौतम गोलेछा ने सभी आगंतुकों का आत्मीय स्वागत किया।

युवक परिषद की ओर से राजकुमार नाहटा ने मुमुक्षु प्रीत का परिचय प्रस्तुत किया। तेरापंथ ट्रस्ट के अध्यक्ष ओमप्रकाश कोठारी ने अपने भावपूर्ण विचार साझा किए। महिला मंडल द्वारा गीतिका की सुंदर प्रस्तुति दी गई, जो सभी को भावविभोर कर गई।

मुमुक्षु प्रीत के पिता नरेश कोठारी ने अपनी भावनाओं को आत्मीयता से अभिव्यक्त किया तथा बहन लब्धि कोठारी ने एक मनमोहक गीतिका के माध्यम से अपनी प्रीत दर्शाई। मुमुक्षु प्रीत कोठारी ने मुनि हिमांशु कुमार जी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि उनकी ज्ञानवर्धक प्रेरणा और वैराग्य की भावना ने उन्हें इस मार्ग पर आगे बढ़ने का संबल दिया है। मुनि हेमंत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जब मंगल भावना किसी दिव्य लक्ष्य के लिए होती है, तो उसका महत्व और भी बढ़ जाता है। उन्होंने कहा – "हमारा उद्देश्य सिद्धत्व की प्राप्ति है और मुमुक्षु भाई ने संसार को छोड़ प्रभु से प्रीत जोड़ी है। मुनि हिमांशु कुमार जी ने अपनी वाणी में पाँच बिंदुओं द्वारा बताया कि प्रीत कैसी होनी चाहिए —स्वयं से, संयम से, गुरुवर से, वीतराग वाणी से प्रभु से उन्होंने सबको प्रेरित करते हुए कहा कि "सच्ची प्रीत वही है जो प्रभु से जुड़ती है और आत्मा को परम पथ की ओर ले जाती है।" कार्यक्रम का संपूर्ण संचालन महिला मंडल की मंत्री मधु पारख ने अत्यंत कुशलता से किया।

रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन

विक्रोली। ठाणे से समागत संस्कारक दिनेश चोरड़िया एवं कमलेश दुग्गड़ ने नमस्कार महामंत्र व मंगल मंत्रोच्चार के साथ नन्हें बच्चों से मंगलभावना पत्र स्थापित करवाया। उन्होंने विधि-विधान एवं समुचित मंत्रोच्चार के साथ बच्चों को यह बताया कि रक्षाबंधन पर्व को जैन संस्कार विधि से कैसे मनाया जाए। ज्ञानशाला परिवार द्वारा आयोजित कार्यशाला में बच्चों से राखियां बनवाई गईं तथा एक-दूसरे को राखी बंधवाकर पर्व की आत्मीयता को अनुभव कराया गया। कुल 9 भाई-बहन की जोड़ियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। नाटक ने विशेष आकर्षण बटोरा, जिसमें क्रोध, मान, माया और लोभ – इन चार कषायों के त्याग के महत्व को रेखांकित किया गया।

आओ हम भरे उड़ान, नवयुवती कार्यशाला का आयोजन

मैसूर

साध्वी सिद्धप्रभाजी के सान्निध्य में ₹आओ हम उड़ान भरें₹ कार्यशाला आयोजित हुई, जिसमें 10 वर्ष की विवाहिता नवयुवतियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। नमस्कार महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम की शुरुआत के पश्चात युवतियों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया।

साध्वी सिद्धप्रभाजी ने आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा प्रदत्त त्रिपदी ₹कहना सीखो, सहना सीखो, रहना सीखो₹ के माध्यम से नवयुवतियों को पारिवारिक सामंजस्य की प्रेरणा दी। युवतियों को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने आत्मनिर्णय कर हर मंजिल को संभव बनाने का संदेश दिया। साध्वी आस्थाप्रभाजी ने स्वस्थ गृहस्थ जीवन के सूत्र बताए। साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने ₹Accept, Adjust, Appreciate₹ के माध्यम से Happy & Harmonious जीवन जीने की प्रेरणा दी।

अंत में युवतियों के लिए ₹अगर मगर₹ प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें सभी ने जोश और उत्साहपूर्वक अपने विचार प्रस्तुत किए। नवयुवतियों ने कार्यशाला के आयोजन हेतु साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और भविष्य में भी इस प्रकार की आयोजनों का निवेदन किया।

स्वागत प्रियांशी चावत ने किया तथा आभार एवं संचालन मंत्री खुशी गुगलिया द्वारा किया गया। अंत में युवतियों ने साध्वी मलययशाजी की 13 की तपस्या की अनुमोदना की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 अगस्त - 31 अगस्त, 2025

साध्वी बिदामांजी की गुणानुवाद सभा

सिकंदराबाद।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सानिध्य में, तेरापंथ सभा सिकंदराबाद के तत्वावधान में तेरापंथ भवन सिकंदराबाद में तेरापंथ शासन की सुदीर्घजीवि साध्वी श्री बिदामांजी की गुणानुवाद सभा संपन्न हुई। साध्वी बिदामांजी ने 108वें वर्ष में पूर्ण जागरूकता के साथ समाधिपूर्वक देवलोक गमन किया।

इस अवसर पर साध्वी डॉ. गवेषणा श्रीजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भिक्षु शासन में दीक्षित, शिक्षित एवं तीन-तीन आचार्यों द्वारा परीक्षित स्वनाम धन्या ₹शासनश्री₹ एवं ₹सुदीर्घजीवि₹ साध्वी बिदामांजी वीरभूमि मेवाड़ की वीरांगना थीं। युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी के करकमलों से दीक्षित साध्वी बिदामांजी ने चढ़ते यौवन में संयमरत्न को ग्रहण किया। आचारनिष्ठा, संयमनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा और गुरुनिष्ठा आपके जीवन का आधार रहीं। तेरापंथ धर्मसंघ में आपने दीर्घसंयम पर्याय और दीर्घजीविता के क्षेत्र में आचार्य श्री महाश्रमणजी के युग में नया इतिहास रचा। लगभग 80 वर्षों तक एक ही समूह में रहकर आपने अपने समर्पण और विनम्रता का अनुपम परिचय दिया। अंत समय में भी संयम पर कलश चढ़ाकर अपनी जीवन यात्रा को धन्य बना दिया।

सभा के दौरान साध्वी मेरुप्रभाजी, साध्वी मयंकप्रभाजी और साध्वी दक्षप्रभाजी ने सामूहिक गीति का द्वारा साध्वी बिदामांजी के जीवन दर्शन प्रस्तुत किया।

उपासिका सरलाबाई भूतोडिया, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष नमिता सिंघी, पूर्व अध्यक्ष चंद्रा सुराणा तथा संसारपक्षीय प्रपौत्र विकास दक ने कविता के माध्यम से अपनी भावांजलि अर्पित की। इस अवसर पर सिकंदराबाद सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए, वहीं शांतिलाल दक ने साध्वीश्री का विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया।

तपोभिनन्दन कार्यक्रम का हुआ आयोजन

गुवाहाटी।

मुनि डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार जी एवं मुनि रमेश कुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मस्थल, गुवाहाटी में तपस्वियों का तेरापंथी सभा द्वारा तपोभिनन्दन किया गया। तपस्वियों में राजेन्द्र कोठारी (खुश्कीबाग, बिहार) ने 31 दिन, मंजुला सेठिया (गंगाशहर, राजस्थान) ने धर्मचक्र तप की तपस्या पूर्ण की।

मुनि डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार ने कहा कि गुवाहाटी में छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं की तपस्या की लहर पूरे देश में फैल रही है।

बच्चों को देखकर अन्य बच्चों में भी तपस्या करने की प्रेरणा जाग रही है और यह स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बड़े-बुजुर्गों को भी तप की ओर अग्रसर कर रही है।

बालकों की तपस्या पर मंडी, गोविंदगढ़ की गायिका उमा सिंगला ने गीत बनाकर भेजा, जिसका मुनिश्री ने संगान किया।

मुनि रमेश कुमार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तपस्या जीवन का सच्चा श्रृंगार है। इस श्रृंगार से जो अपने तन-मन और भावों को श्रृंगारित करता है, उसका जीवन सफल हो जाता है।

गुवाहाटी में सहज रूप से तपोत्सव मनाया जा रहा है, इस तप रूपी गंगा में सभी को गोता लगाना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि पद्म कुमार ने कुशलतापूर्वक किया। तेरापंथ युवक परिषद, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएं तथा महनोत, भादानी, छल्लाणी और कोठारी परिवार की ओर से सुमधुर तप गीतों एवं भावपूर्ण वक्तव्यों द्वारा तपस्वियों का अभिनंदन किया गया।

"स्वास्थ्य की चाबी आपके हाथ" कार्यशाला का हुआ आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के उपलक्ष्य में "स्वास्थ्य की चाबी आपके हाथ" विषय पर साध्वी पुण्ययशा जी के सान्निध्य में एक ज्ञानवर्धक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का शुभारंभ साध्वी श्री द्वारा नवकार मंत्र के उच्चारण से हुआ। तत्पश्चात मंडल की बहनों ने मंगलाचरण स्वरूप प्रेरणा गीत प्रस्तुत किया। अध्यक्ष मंजु बोथरा ने आगंतुकों का स्वागत करते हुए विषय पर अपने विचार रखे।

साध्वी बोधिप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि शास्त्रों में स्वस्थ जीवन जीने के लिए तीन बातें बताई गई हैं – वर्तमान में जीना, सकारात्मक चिंतन शैली अपनाना तथा अनाग्रह-अनासक्त भावना का विकास करते हुए आवेश पर नियंत्रण रखना।

साध्वी पुण्ययशा जी ने ध्यान को उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करने का श्रेष्ठ साधन बताते हुए सभी को पवित्र विचारों से जुड़ने के लिए ध्यान का अभ्यास करवाया। उन्होंने कहा कि भोजन का संतुलन और मन की शांति ही वास्तविक स्वास्थ्य की चाबी है। "स्वस्थ कौन है?" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने स्पष्ट किया – जिसे अच्छी भूख, अच्छी नींद और नियमित सोच प्राप्त हो वही वास्तव में स्वस्थ है। भावनात्मक दृष्टि से जो व्यक्ति क्रोध, आवेग और आवेश पर नियंत्रण रखता है वही स्वस्थ कहलाता है।

साध्वीश्री ने अच्छे स्वास्थ्य हेतु ध्यान, मंत्र-जप एवं संतुलित आहार के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बेमेल भोजन के दुष्प्रभावों की जानकारी भी दी। मंडल की बहनों ने "खानपान" विषय पर एक रोचक प्रस्तुति प्रस्तुत की, जिसे सभी ने सराहा। कार्यशाला का संचालन संयोजिका श्वेता कोठारी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन मंत्री वंदना भंसाली द्वारा किया गया।

हेल्थ अवेरनेस कार्यक्रम का सफल आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम पूर्वांचल द्वारा भिक्षु विहार में हेल्थ अवेयरनेस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. विनोद बिनायिकीया थे।

मुनिश्री ने "जीवन की A, B, C, D" विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा कि जन्म और मृत्यु रूपी तटों के मध्य बहने वाली अविरल धारा का नाम जीवन है। जीवन अत्यंत मूल्यवान है और इसे समझकर सही ढंग से जीने की कला सीखना आवश्यक है। उन्होंने जीवन की A, B, C, D को स्पष्ट करते हुए कहा कि A का अर्थ है Awareness (जागरूकता) – जागरूक व्यक्ति ही जीवन को सही दिशा और सफलता प्रदान कर सकता है। B का अर्थ है Believe (विश्वास) – जीवन में प्रामाणिक बने, क्योंकि विश्वास पात्र व्यक्ति ही समाज में स्थान पाता है। अविश्वास की अग्नि अनेक घरों और जीवन को नष्ट कर देती है। C का अर्थ है Choice (चयन) – सही चुनाव ही जीवन की सफलता तय करता है। D का अर्थ है Determination (अनाशक्ति/दृढ़ निश्चय) – अहंकार रहित, विनम्र और क्षमाशील चरित्र ही जीवन को सुखमय बनाता है।

मुनि परमानंद जी ने कहा कि आत्मनिरीक्षण, लक्ष्य निर्धारण और पुरुषार्थ जीवन की सफलता के प्रमुख सूत्र हैं। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। डॉ. विनोद बिनायिकीया ने हेल्थ अवेयरनेस विषय पर विस्तार से जानकारी देते हुए हृदयरोग, मधुमेह आदि रोगों के कारणों और बचाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने जागरूक रहकर स्वस्थ एवं गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने का आग्रह किया।

कार्यक्रम का स्वागत भाषण टीपीएफ के अनिल आंचलिया ने दिया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया और धन्यवाद ज्ञापन शिखा सुराना ने किया। कार्यक्रम की सफलता में तेरापंथ सभा का विशेष सहयोग रहा।

उत्साह से पुरुषार्थ करते हुए संगठन को ले जाए ऊंचाईयों पर

पेटलावद।

तेरापंथ महिला मंडल ने जिस उत्साह से नए पदाधिकारियों का मनोनयन किया है, उसी उत्साह और पुरुषार्थ से संगठन को नई ऊँचाइयों पर ले जाने का प्रयास करना चाहिए। मातृशक्ति ममता के साथ कार्य करें, हिम्मत और साहस बनाए रखें तथा आँखों में लज्जा बनी रहे—इन तीन विशेषताओं से परिपूर्ण होकर लक्षित मंजिल को प्राप्त किया जा सकता है। उक्त विचार साध्वी पंकजश्रीजी ने तेरापंथ महिला मंडल के शपथ ग्रहण समारोह के अवसर पर तेरापंथ भवन में व्यक्त किए।

साध्वीश्री ने आगे कहा कि परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी और चरित्रात्माओं की दृष्टि की आराधना करते हुए अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार कार्य करने का प्रयास करें। अध्यात्म पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहें और अपनी संकल्प शक्ति का विकास कर महिला मंडल को ऊँचाई पर पहुँचाएँ। साध्वीश्री ने यह भी कहा कि साधु–साध्वियों का चातुर्मास समाज में धर्मजागृति और धार्मिक विकास के लिए होता है, अतः बहनों को संगठन से जोड़ने का कार्य निरंतर करना सबका दायित्व है।

इस अवसर पर संयोजकीय वक्तव्य देते हुए साध्वी शारदाप्रभाजी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में नारी का सम्मानजनक स्थान रहा है और भारतीय महिलाओं का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। देश के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी अपने पुरुषार्थ के बल पर सत्ता के शिखर तक पहुँचे हैं, जिसमें उनकी माता से प्राप्त संस्कारों का भी योगदान रहा है।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र पर आधारित नाटक का आयोजन

टोहाना।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा टोहाना के तत्वावधान में समणी जयंतप्रज्ञा जी की प्रेरणा से तेरापंथ समाज के बाल कलाकारों द्वारा सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र पर आधारित एक भव्य नाटक का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सुरेंद्र कुमार जैन (डीलक्स इंडस्ट्रीज) मुख्य अतिथि तथा शीशपाल जैन (वाइस चेयरमैन, मार्केट कमेटी, धारसूल) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। नाटक का निर्देशन हरीश वर्मा ने किया।

समणी जयंतप्रज्ञा जी एवं समणी सन्मतिप्रज्ञा जी ने कहा कि तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु की 300वीं जयंती भिक्षु चेतना वर्ष के रूप में मनाई जा रही है। सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र ने सत्य एवं मर्यादा की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया और अनेक कष्टों व संकटों का सामना किया।

उसी प्रकार आचार्य भिक्षु ने भी सत्य मार्ग को अपनाकर कठिनाइयों और विरोधों को समता भाव से सहा। जिस प्रकार सोने की परीक्षा अग्नि में होती है, उसी प्रकार सत्य मार्ग की परीक्षा भी कष्टों से होती है, और केवल वीर ही उससे विचलित हुए बिना आगे बढ़ते हैं।

खचाखच भरे सभागार में नाटक का मंचन आधुनिक एवं डिजिटल पद्धति से किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र से हुआ तथा महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर ज्ञानशाला के नन्हे बच्चों ने भावपूर्ण नृत्य प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया।

विशिष्ट अतिथि शीशपाल जैन, टोहाना रत्न डॉ. शिव सचदेवा एवं अनिल जैन (भूना) ने अपने विचार व्यक्त किए और बच्चों की अद्भुत प्रस्तुति की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सभा अध्यक्ष विजय कुमार जैन ने समणी वृंद, सहयोगी संस्था तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, सभी मेहमानों, सहयोगी एवं समागत संस्थाओं तथा दर्शकों का स्वागत किया। मंत्री सुभाष जैन ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन राकेश जैन एवं गौरव जैन ने किया।

'महिमा जन्मदाता की' कार्यशाला का आयोजन

पल्लावरम, तमिलनाडु।

तेरापंथ भवन, पल्लावरम में मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में 'महिमा जन्मदाता की' कार्यशाला का सुंदर आयोजन किया गया। मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि माँ-पिता का रिश्ता संसार का सबसे महत्वपूर्ण रिश्ता है, क्योंकि यह रिश्ता जन्म से 9 माह पहले ही प्रारंभ हो जाता है। वे लोग सचमुच भाग्यशाली होते हैं, जिनके सिर पर माता-पिता का साया होता है। माता-पिता बूढ़े वृक्ष की तरह होते हैं, जो भले ही फल न दें, परंतु छाया अवश्य देते हैं। उन्होंने कहा कि पृथ्वी विशाल है, आकाश असीमित है और ब्रह्मांड अनंत है, किंतु माता-पिता की महानता और विशालता इन सबसे अधिक है। 'माँ' – यह शब्द भले ही छोटा हो, किंतु अपने भीतर वात्सल्य, ममता और भावनाओं का असीम भंडार समेटे हुए है। माता-पिता की असली पहचान उनके बच्चे होते हैं, जिनमें उनके संस्कार सहज ही झलकते हैं। बच्चा नागरिकता का पहला पाठ माँ के स्नेह और पिता के संरक्षण में ही सीखता है। मुनि श्री ने वर्तमान समय की ओर संकेत करते हुए कहा कि आज के परिवेश में माता-पिता अपने मूल स्वरूप को कहीं न कहीं भूलते जा रहे हैं। बच्चों को पर्याप्त समय, संस्कार और संरक्षण न मिल पाना एक गहरी विडंबना है। मुनि काव्यकुमारजी ने भी अपने विचार रखते हुए कहा कि जिस प्रकार हम दवाईयों पर विश्वास करते हैं, वैसे ही माता-पिता पर भी पूर्ण विश्वास करना चाहिए। वे भले ही कभी कठोर प्रतीत हों, परंतु उनका हर मार्गदर्शन बच्चों के लिए कल्याणकारी होता है। इस अवसर पर तेरापंथ किशोर मंडल, चेन्नई के सदस्यों ने भी सहभागिता की। साथ ही साध्वी बिदामांजी की स्मृति सभा का आयोजन कर श्रद्धापूर्वक उन्हें स्मरण किया गया।

शक्रस्तुति पाठ का अनुष्ठान

सरदारपुरा, जोधपुर।

'शासनश्री' साध्वी सत्यवतीजी के सान्निध्य में शक्र स्तुति पाठ (सक्कथुई) का अनुष्ठान एवं आपसी वात्सल्य व प्रेम का पर्व रक्षा बंधन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

देवताओं द्वारा एक मात्रा में की जाने वाली यह स्तुति, जिसे तीन नामों से जाना जाता है— प्रणिपात सूत्र, शक्र स्तुति एवं णमोत्थुणं — नमस्कार महामंत्र और मंगल पाठ के बीच की कड़ी स्वरूप स्तुति है, जो सिद्धालय में स्थित सिद्धों के प्रति समर्पित की जाती है।

'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि तीर्थंकरों के गुणगान से प्रमोद भावना जागृत होती है और हम उनके गुणों को अपने जीवन में आत्मसात कर सकते हैं।

साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने पाठ का अनुष्ठान करवाते हुए कहा कि अनन्त शक्ति के स्रोत की स्तुति के माध्यम से हम संक्रमण के सिद्धान्त की उपयोगिता को समझ सकते हैं और उस शक्तिशाली ऊर्जा का अनुभव कर सकते हैं।

अनुष्ठान एवं रक्षा बंधन के इस कार्यक्रम में जहाँ एक ओर तीर्थंकरों के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति हो रही थी, वहीं दूसरी ओर रक्षा बंधन आपसी वात्सल्य को प्रगाढ़ कर रहा था।

मंगलाचरण सरिता बैद ने किया। इस वात्सल्य को अभिव्यक्त करने हेतु कन्या मंडल ने प्रस्तुति द्वारा इसे उद्घाटित करने का प्रयास किया।

ज्ञानशाला दिवस पर पारिवारिक सम्मेलन आयोजित

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला दिवस पर पारिवारिक सम्मेलन आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने कहा कि परिवार वह आशियाना है, जहां तीन पीढ़ियां एक साथ रहती हैं। परिवार वह संगम है, जहां बच्चे, बुजुर्ग और युवा एक-दूसरे की परवाह करते हैं। परिवार बच्चों के लिए झूला, युवाओं के लिए क्रीड़ास्थली और बुजुर्गों के लिए शरणस्थली है।

उन्होंने बच्चों से कहा कि आपका जीवन सफेद कागज़ की तरह है। यदि आप उस पर स्वर्णिम चित्र उकेरना चाहते हैं, तो ज्ञानशाला में अवश्य आएं। दादा-दादी और माता-पिता से कहा कि बच्चे आपके जीवन की अमूल्य धरोहर और उज्ज्वल भविष्य हैं। उनका भाग्य संवारना आपके हाथ में है। यदि उन्हें ज्ञानशाला नहीं भेजा गया तो यह गलती जीवनभर खलेगी।

साध्वीश्री ने कहा कि प्रशिक्षिकाएं अपने समय का उपयोग बच्चों के संस्कार निर्माण में कर रही हैं। व्यवस्थापक वर्ग भी सुदृढ़ है। बच्चों की प्रस्तुतियां उनकी प्रतिभा को उजागर कर रही हैं। बच्चों की शानदार प्रस्तुतियां बच्चों की प्रतिभा को उजागर कर रही है।

इस कार्यक्रम में दादा दादी मम्मी पापा बच्चें तीन पीढ़ियों ने एक साथ गीत की प्रस्तुति दी जो सबके लिए नवीन व आकर्षक थी।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को ज्ञान की अदालक की रोचक व प्रेरक प्रस्तुति देकर सबका मन मोह लिया। प्रशिक्षिकाओं की कव्वाली ने सबको भावविभोर कर दिया। नन्हे-नन्हें बालक बालिकाओं ने अर्हम वंदना की सुंदर प्रस्तुति दी। सभाध्यक्ष महेन्द्र बैद मूथा, ज्ञानशाला के संयोजक मोहन जैन आंचलिक प्रभारी सुरेन्द्र सालेचा ने विचार रखे। संचालन मुख्य प्रशिक्षिका राणी बाफना ने किया। ज्ञानशाला के बच्चों की नव्य प्रस्तुतियां भी रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 अगस्त - 31 अगस्त, 2025

चार मासखमण साधक-साधिकाओं का अभिनन्दन समारोह

सिटीलाइट, सूरत।

मासखमण तप अभिनन्दन समारोह में उपस्थित विशाल धर्म परिषद को सम्बोधित करते हुए साध्वी प्रोफेसर डॉ मंगलप्रज्ञा जी ने कहा - भगवान महावीर का उपदेश है आत्मनिर्जरा के लिए तप करना चाहिए। तपस्या आत्मशुद्धि का प्रवर साधन है।

तप के द्वारा आत्म प्रभावना और संघ प्रभावना होती है। कीर्ति और प्रशंसा के लिए तप की आराधना न हो। चातुर्मास का समय ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप की आराधना के लिए श्रेष्ठ है। हर सदस्य समयानुसार खुद को तप में नियोजित करे।

प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा से हर्ष भोगर ने 30, सोहनी देवी डोसी ने 29, गीता बम्ब ने 29 और रणजीत भंसाली ने 31 दिवसीय मासखमण की साधना की एवं गुलाव भंसाली ने धर्म चक्र तप सम्पन्न किया। तपस्वियों के अभिन्दन में परिवारिक जन ने अलग-अलग गीत का संगान कर तप वर्धापन किया। रणजीत भंसाली का परिचय तेरापंथ सभा मंत्री महेन्द्र गांधी मेहता, हर्ष भोगर का परिचय महिला मंडल पूर्व अध्यक्ष चन्दा भोगर, गीता बम्ब का परिचय तेयुप उपाध्यक्ष मुकेश जैन एवं सोहनी देवी डोसी का परिचय महिला मंडल उपाध्यक्षा सीमा भोगर ने प्रस्तुत किया। साध्वीप्रमुखाश्री द्वारा प्रस्तुत संदेश का वाचन तेरापंथ सभा अध्यक्ष हजारीमल भोगर एवं अभिनंदन पत्र का वाचन मेनेजिंग ट्रस्टी बाबूलाल भोगर ने किया। धर्मचक्र तप अभिनन्दन पत्र का वाचन सभा के निवर्तमान अध्यक्ष मुकेश बैद ने किया। तपस्वियों के वर्धापन क्रम में परिजनों ने शुभकामनाएं दी।

महिला मंडल की बहनों द्वारा कार्टून शो की शानदार प्रस्तुति ने परिषद का मन मोह लिया। साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी अतुलयशाजी, साध्वी डॉ राजुलप्रभाजी, साध्वी डॉ चैतन्य प्रभाजी एवं साध्वी डॉ शौर्यप्रभाजी ने 'सिटी लाइट में तप की लाइम लाइट' की प्रस्तुति दी।

तेरापंथ सभा एवं सभी संस्थाओं ने साहित्य आदि द्वारा तपस्वियों का सम्मान किया। तप द्वारा तप अभिनंदन आह्वान पर अनेक भाई-बहनों ने तेले का संकल्प लिया। मंच संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने किया।

जैन ज्योतिष व नवग्रह अनुष्ठान सम्पन्न

हैदराबाद।

तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद, तेरापंथ युवक परिषद् हैदराबाद एवं महावीर इंटरनेशनल हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में जैन ज्योतिष व नवग्रह अनुष्ठान का भव्य आयोजन तेरापंथ भवन, डी.वी. कॉलोनी, सिकंदराबाद में सम्पन्न हुआ।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जैन धर्म आत्मवाद, कर्मवाद एवं पुरुषार्थवाद पर आधारित है। हमारे आठ कर्मों का नवग्रहों के साथ गहरा संबंध है। कौन सा कर्म कब और कैसे फल देता है, यह ज्योतिष शास्त्र से जाना जा सकता है। पुरुषार्थ और आचरण के द्वारा हम अशुभ कर्मों को शुभ में बदल सकते हैं तथा ग्रहों की दिशा को भी अनुकूल बना सकते हैं।

साध्वीश्री ने आगे कहा कि तीर्थंकरों एवं नमस्कार महामंत्र पर आधारित मंत्रोच्चार से किए गए अनुष्ठान अत्यंत फलदायी सिद्ध होते हैं। जैन धर्म में चार प्रकार के देवताओं की मान्यता है, जिनमें से एक ज्योतिष देवता हैं। इनके भी पाँच प्रकार बताए गए हैं – सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र और तारा। इनकी दशा व दिशा को अनुकूल बनाने हेतु जैनाचार्यों और ज्योतिषाचार्यों ने अनेक प्रयोग बताए हैं, जो जीवन में शांति व अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं। अनुष्ठान प्रांगण को विशेष रूप से ब्रह्मांड रूपी सजावट से सुसज्जित किया गया था। पुरुष श्रद्धालु सफेद वस्त्रों में और महिलाएँ लाल चुनरी की साड़ियों में अनुष्ठान में उपस्थित हुईं। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। मंगलाचरण का वाचन महिला मंडल, तेयुप और महावीर इंटरनेशनल के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। नमस्कार महामंत्र एवं तीर्थंकरों का जप रंगों और बीज मंत्रों के साथ विशेष रूप से किया गया।

इस अवसर पर तीनों संस्थाओं के पदाधिकारी, सदस्यगण तथा सैकड़ों की संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे। धन्यवाद ज्ञापन महिला मंडल हैदराबाद की अध्यक्षा नमिता सिंघी ने किया। कार्यक्रम के संयोजक अशोक सेठिया, विशाल भंडारी, अंजू चोरड़िया, सरिता डागा, अर्चना नाहटा सहित तीनों संस्थाओं के पदाधिकारियों ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का हुआ आयोजन

उदयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में बारहव्रत दीक्षा कार्यशाला का आयोजन महाप्रज्ञ विहार में किया गया।

साध्वीश्री ने उदयपुर तेरापंथ समाज को संबोधित करते हुए विशेष प्रेरणा दी और कार्यशाला से जुड़कर बारहव्रती बनने का संदेश प्रदान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप अध्यक्ष अशोक चोरडिया के स्वागत वक्तव्य से हुआ। तत्पश्चात सभा अध्यक्ष कमल नाहटा एवं अभातेयुप साथी अजीत छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर तेयुप उदयपुर के पदाधिकारी, संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम संयोजक नितेश बैद, अंकित सुराणा और शंशाक सोनी के सहयोग से कार्यशाला का सफल आयोजन संभव हो सका। संचालन परिषद मंत्री विनीत फुलफगर ने किया तथा आभार संगठन मंत्री आशीष बोहरा ने व्यक्त किया।

"रक्षाबंधन – बने आत्मसुरक्षा का कवच"

पाली।

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर तेरापंथ महिला मंडल के मार्गदर्शन और कन्या मंडल प्रभारी मीना मांडोत के निर्देशन में तेरापंथ कन्या मंडल, पाली द्वारा आयोजित विशेष आयोजन "रक्षाबंधन – बने आत्मसुरक्षा का कवच" अत्यंत भावप्रवण एवं प्रेरणादायक रहा। इस आयोजन ने बहनों को आत्मरक्षा, आत्मसम्मान और मानसिक सुरक्षा के नवीन आयामों से जोड़ते हुए आत्मसशक्तिकरण की दिशा में कदम बढ़ाया। किट वितरण के साथ कन्याओं का भवन के प्रवेश द्वार पर स्वागत हुआ। कार्यक्रम की शुभ शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं मंगलाचरण से हुई, जिसमें फाल्गुनी, योगिता, अन्तिमा, आरती और प्राची ने अपनी सहभागिता दी। साध्वी काव्यलता जी ने अपने उद्बोधन में कहा- "भाव, भाषा और भूषण – ये तीनों कन्याओं के जीवन के सच्चे श्रृंगार हैं।" उन्होंने कन्याओं को अपने भावों की पवित्रता, भाषा की मधुरता और भूषण (वस्त्र) की मर्यादा को अपनाने का संदेश देते हुए कहा कि यदि कन्याएँ परिवार की रौनक बनना चाहती हैं, तो उन्हें आंतरिक शुद्धता और संतुलित जीवनशैली की साधना करनी होगी।

उन्होंने सभी कन्याओं को इस चातुर्मास में प्रतिक्रमण कंठस्थ कर आत्मबोध का कवच धारण करने का संकल्प लेने हेतु प्रेरित किया।

बाँगड़ कॉलेज के फिजिक्स लेक्चरर एवं स्मार्ट गर्ल्स ट्रेनर राजेन्द्र जैन ने अपने विचारोत्तेजक सत्र में बालिकाओं को आत्म-सुरक्षा के आधुनिक उपायों से परिचित कराया। उन्होंने रानी कर्णावती द्वारा हुमायूं को भेजी गई राखी से लेकर निर्भया कांड तक की घटनाओं को रेखांकित करते हुए कन्याओं को सजगता, विवेक और शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा– "हमें झाँसी की रानी नहीं, बल्कि संकट में समझदारी से स्वयं को सुरक्षित करने वाली बेटी बनना है।"

कन्या मंडल द्वारा प्रस्तुत प्रभावशाली नाटिका टीम की अंतिमा, वीनल, दीवीशा, परिधि, प्रेक्षा, निरिक्षा, अदिती, संध्या, सान्वी ने दर्शकों को आत्मसम्मान, मानसिक स्वास्थ्य और आपसी सहयोग के संदेश से गहराई से जोड़ा। विभिन्न दृश्यों में सेल्फ डिफेंस, सीमाएं तय करना, नशे से मुक्ति, अवसाद से उबरना और भावनात्मक सुरक्षा का संकल्प जैसी बातों को दर्शाते हुए यह बताया गया कि "सच्चा रक्षाबंधन वह है जहाँ हम एक-दूसरे की भावनात्मक व मानसिक रक्षा के लिए खड़े हों।" इस भव्य आयोजन में लगभग 55 कन्याओं ने भाग लेकर रक्षाबंधन को संवेदनशीलता, आत्मबल और वैचारिक गहराई के साथ मनाया।

कार्यक्रम का संचालन संयोजिका फाल्गुनी बेगानी द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सूरजमल सोना देवी बेगानी परिवार का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। आयोजन की सफलता में महिला मंडल अध्यक्ष किरण पटावरी, मंत्री मधु बांठिया, हेमा सेमलानी सहित अनेक बहनों का सक्रिय योगदान रहा। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष पीयूष चौपड़ा, राहुल गोलछा और नवीन चौरडिया ने अन्य व्यवस्थाओं में सहयोग किया।

पचरंगी तप सामूहिक पच्चक्खाण

जयपुर। तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर द्वारा 'शासन गौरव' साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में पचरंगी तप सामूहिक पच्चक्खाण कार्यक्रम का आयोजन अणुविभा केंद्र के सभागार में किया गया। कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगल गीतिका प्रस्तुत की गई। तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर की अध्यक्ष कौशल्या जैन ने सभी का अभिनंदन एवं स्वागत किया।

कार्यक्रम में साध्वीश्री ने सभी तपस्वियों को यथाशक्ति तप को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हुए गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम स्थल पर श्रावक-श्राविकाओं की उत्साहपूर्ण उपस्थिति रही। मंत्री पायल जैन ने सभी तपस्वियों के तप की अनुमोदना की और पचरंगी तप में सहभागी बनने के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

आदर्श श्रावक बनने के लिए तत्वज्ञान का होना आवश्यक

टोहाना।

स्थानीय तेरापंथ भवन में समणी जयंतप्रज्ञा जी के प्रति मंगल भावना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समणी सन्मति प्रज्ञा जी ने कहा कि टोहाना क्षेत्र सेवा-भावना से ओतप्रोत और उच्च कोटि का क्षेत्र है। यहाँ श्रद्धा और भक्ति नस-नस में प्रवाहित होती है। परंतु एक आदर्श श्रावक बनने के लिए तत्वज्ञान का होना आवश्यक है। उन्होंने श्रावक समाज से कहा कि धर्मसंघ को मजबूत बनाने के लिए पारस्परिक प्रेम और प्रमोद भावना का विकास अनिवार्य है। साथ ही अपने दायित्व का चिंतन कर उसका निर्वहन करना चाहिए। समणी जयंतप्रज्ञा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यदि हमें आनंदपूर्वक जीवन जीना है, तो तीन नियम अनिवार्य हैं – कहना सीखो, रहना सीखो और सहना सीखो।

उन्होंने कहा कि जिस प्रकार बर्तन साफ करते समय उसे भीतर से अधिक स्वच्छ किया जाता है और बाहर से अपेक्षाकृत कम, उसी प्रकार हमें आत्मा की शुद्धि पर अधिक ध्यान देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सहनशीलता श्रावक का एक उत्कृष्ट गुण है, और सहनशीलता के बिना मानव कल्याण संभव नहीं है।

इस अवसर पर श्रावक समाज द्वारा समणी वृंद के प्रति मंगल भावना व्यक्त की गई और गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी एवं समणी जी का आभार प्रकट किया गया।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा मंत्री सुभाष जैन, सुमन जैन, अंजू जैन, रजनी जैन, प्रान्तीय सभा महामंत्री अमित जैन, कृष्णा जैन, उषा जैन, महिला मंडल अध्यक्षा आरती जैन, सुशील जैन, सुभाष जैन (साबुन वाले) एवं तेयुप प्रधान संजय जैन ने भी अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं और मंगल भावना प्रकट की। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री सुभाष जैन ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

त्याग से करें परिग्रह...

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वे दार्शनिक, चिंतक, साहित्यकार और प्रवचनकार थे, और इन सबके ऊपर एक संत थे। उनमें सृजनशीलता के दर्शन होते हैं। उनकी वक्तृत्व और लेखन कला अनुपम थी। आचार्यवर ने अनेक विषयों पर अपनी लेखनी चलाई। इस संदर्भ में आशीर्वचन प्रदान करते हुए परम पूज्य गुरुदेव ने कहा कि हमारे जीवन में अनेक प्रकार के मनुष्य होते हैं – कुछ के पास धन का बल होता है, कुछ के पास शरीर की संपदा, कुछ के पास सत्ता का बल और कुछ विद्वत्ता का बल। संत समुदाय में भी अनेक प्रकार के संत हुए हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ बाल्यावस्था में ही साधु बन गए और मुनि अवस्था से ही विद्वान संत के रूप में प्रतिष्ठित हुए। योग, ध्यान, साहित्य, जैन आगमों का संपादन और अनुवाद–टिप्पणी में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। आचारांग सूत्र पर उन्होंने संस्कृत में भाष्य लिखा।

वे एक विलक्षण आचार्य थे। कार्यक्रम का संचालन जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा ने किया। ज्ञानशाला-मोटेरा- कोटेश्वर आदि क्षेत्रों के ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। बालिका खुशी गोठी, काम्या व गुर्वी जैन ने अपनी बालसुलभ प्रस्तुति दी। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अणुव्रत गीत महासंगान के बैनर को लोकार्पित किया गया।

पृष्ठ 3 का शेष

साधना के क्षेत्र...

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में संस्था शिरोमणि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित प्रतिनिधि सम्मेलन का मंचीय कार्यक्रम रहा। इस संदर्भ में महासभा अध्यक्ष मनसुख लाल सेठिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। उन्होंने महासभा की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि जो भी उपक्रम चल रहे हैं, वे गुरुदेव के आशीर्वाद और मुनि विश्रुतकुमार जी के चिन्तन का परिणाम हैं। उन्होंने समस्त प्रतिनिधियों का आह्वान किया कि वे तेरापंथ समाज के एक-एक परिवार की संभाल कर उन्हें तेरापंथ के उपक्रमों के साथ जोड़ने का प्रयास करें। महासभा के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि विश्रुतकुमार जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा कि पूज्य कालूगणी के युग में महासभा के रूप में जो शुरुआत हुई थी, वह आज एक वटवृक्ष के रूप में हमारे सामने है।

यह हमारे परम पूज्य आचार्यों का ही कृपा प्रसाद है। वर्तमान में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की कृपा और वत्सलता हमें प्राप्त हो रही है। मुख्यमुनि श्री महावीर कुमारजी ने संभागी प्रतिनिधियों को उद्बोधित किया। उन्होंने कहा कि कोई भी समाज तभी टिक सकता है जबकि वह संगठित हो, शक्तिशाली हो।

आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की और उन्होंने अपनी सूझबूझ की गहराई से धर्म को संगठन के साथ जोड़ा। तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेव ने संभागी प्रतिनिधियों को आशीष प्रदान करते हुए कहा कि यह वर्ष परम पूजनीय आचार्यश्री भिक्षु का जन्म त्रिशताब्दी वर्ष है। तेरापंथी सभाएँ तेरापंथ समाज का नेतृत्व करने वाली होती हैं। साधु-साध्वियों, समणियों के प्रवास आदि से लोकल रूप में जुड़ी होती हैं। कहीं उपसभाएँ भी हैं। इनसे क्षेत्रों की सार-संभाल में सुविधा होती है।

तेरापंथी महासभा एक केन्द्रीय संस्था है और केन्द्रीय संस्थाओं में भी 'संस्था शिरोमणि' का दर्जा प्राप्त है। सेवा साधक श्रेणी भी महासभा का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। सभाएँ महासभा का अंग हैं। यह सभा प्रतिनिधि सम्मेलन हो रहा है। सभी की अपनी धार्मिक चर्या भी चले। सामायिक का क्रम रहे, खान-पान की शुद्धि रहे, एक अच्छा सदाचार का क्रम रहे और इसके साथ श्रावकत्व भी है तो बहुत अच्छी बात हो सकती है।

श्रावक संदेशिका पुस्तक को पढ़ने से बहुत-सी जानकारियां प्राप्त हो सकती हैं। उसे यदा-कदा पढ़ते रहें। सामाजिक दृष्टि से महासभा का बहुत बड़ा दायित्व है। इन वर्षों में महासभा बहुत अच्छी सेवा समाज को प्रदान कर रही है। इसका व्यक्तित्व भी निखार को प्राप्त हुआ है।

सभाएं महासभा की अंग हैं। यह सभा प्रतिनिधि सम्मेलन हो रहा है। सभी में धर्म की जागरणा बनी रहे। सभाएं और उपसभाओं से समाज का संगठन मजबूत होता है। सभी अच्छा कार्य करते रहें। इस कार्यक्रम का संचालन महासभा के महामंत्री विनोद बैद ने किया।

बोलती किताब

मैं हूं अपने भाग्य का निर्माता

चंचलता को बदलना होगा। उसके लिए निर्दिष्ट प्रयोग करने होंगे, तभी समस्याओं का अन्त होगा, अन्यथा नहीं। श्वास-दर्शन इसका अचूक उपाय है। इसे छोटा न समझा जाए। जब श्वास-दर्शन में आदमी लग जाता है तब वह सभी स्मृतियों, कल्पनाओं और चिन्तनों से मुक्त हो जाता है। उसके विकल्पों का दायरा सिमटकर, केवल श्वास पर आ जाता है। परिधि कम हो जाती है। ज्यों-ज्यों परिधि सिमटती है, केन्द्र की निकटता बढ़ती है। परिधि जितनी छोटी होगी, केन्द्र उतना ही निकट होगा। श्वास-दर्शन से केन्द्र की निकटता साधी जा सकती है।

प्रश्न होता है कि कौन संप्रदाय तेजस्वी हो सकता है। वही संप्रदाय तेजस्वी हो सकता है जिसमें आचार्यत्व होता है, कवित्व होता है, पांडित्य और दैवज्ञता होती है, ज्योतिर्विज्ञान का अगाध ज्ञान होता है, देश और काल को जानने की क्षमता होती है, जिसमें तंत्र-मंत्र की शक्ति होती है, जिसे ' तितिक्षा का सूत्र उपलब्ध है, जिसका दर्शन-केन्द्र या आज्ञाचक्र जागृत होता है, जिसकी अन्तर प्रज्ञा जागृत होती है और जिसे सरस्वती का वरदान प्राप्त है। यह सारा तेजस्विता का सूत्र है।

तेजस्विता की भी एक आचार-संहिता होती है। धर्मसंघ या संप्रदाय तेजस्वी बनता है ज्योति से, शक्ति से। शक्तिशाली बनने के लिए चार बातें आवश्यक है—श्रद्धा, आचार, विचार और अभिव्यक्ति की क्षमता। जिस संप्रदाय में आस्था या श्रद्धा का बल नहीं है, वह संप्रदाय बुझी हुई आग है, जिससे तेजस्विता की ज्योति कभी प्रज्वलित नहीं हो सकती। आस्था जिसने खो दी, श्रद्धा का बल जिसने खो दिया, उसके पैर लड़खड़ाते रहते हैं। वह चल नहीं पाता। चलेगा भी तो लड़खड़ाते हुए चलेगा। पता नहीं कब, कहां गिर पड़े। ।

प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति आस्था के सहारे जीवन चलाता है। उसकी आस्था का बिन्दु है —धर्म। आज धर्म तीन आयामों में विभक्त हो गया है। वे तीन आयाम है—आध्यात्मिकता, नैतिकता और उपासना। आध्यात्मिकता मूल केन्द्र है, उपासना भक्ति —संबद्ध केन्द्र है और नैतिकता समाज-संबद्ध केन्द्र है। धर्म का सर्वोपरि मूल्य है आध्यात्मिकता, प्राणी मात्र के प्रति समता। प्रत्येक आत्मा में समत्व का अनुभव करना आध्यात्मिकता है। लगभग सभी धर्मों की यह स्वीकृति हैं कि सब जीव एक हैं, समान हैं या तो अन्यान्य धर्म—संप्रदाय जीवों को समार्न मानते हैं यां एक मानते हैं। इन दो मान्यताओं में सब समा जाते हैं।अध्यात्म में न संप्रदाय होता है, न वेश होता है, न रूप होता है और न मान्यता होती है। वह वेशातीत, रूपातीत और मान्यतातीत होता है। यही वास्तव मैं धर्म है। प्रत्येक प्राणी में एक-जैसा चेतना का प्रवाह है, एक-जैसी प्राणधारा है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

अभिनंदन समारोह का आयोजन

घाटकोपर।

'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में तथा 'शासनश्री' साध्वी मंजुरेखा जी के निर्देशन में कच्छ से समागत मुमुक्षु जिगर मेहता का अभिनंदन समारोह तेरापंथ सभा भवन, घाटकोपर में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत आरव भाभेरा के मंगलाचरण से हुई। साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी ने गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी की कृपा से कच्छ में उल्लेखनीय कार्य किया है और वहाँ तेरापंथ का गौरवशाली इतिहास रचा है। साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी एवं साध्वी चेलनाश्री जी ने मधुर गीत प्रस्तुत कर मुमुक्षु भाई को शुभकामनाएँ दीं। मुमुक्षु जिगर मेहता ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा—"मैं गुरु चरणों में रहूँ और मेरा संयम बल निरंतर बढ़ता रहे।" इस अवसर पर अनेक गणमान्यजनों ने मुमुक्षु को बधाई दी। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथी सभा मुंबई, अणुव्रत समिति मुंबई, ट्रस्ट, सभा, युवक परिषद एवं महिला मंडल घाटकोपर का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन जीतुभाई भाभेरा ने किया तथा राकेश सुराणा ने आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 अगस्त - 31 अगस्त, 2025

मोह विलय करना ही रहे साधना का लक्ष्य : आचार्य श्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
12 अगस्त, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म संघ के देदीप्यमान महासूर्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'वीर भिक्षु समवसरण' में आयारो आगम के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में जन्म भी होता है, मृत्यु भी होती है, बुढ़ापा आता है, बीमारियां भी आती हैं। प्रश्न हो सकता है कि इन स्थितियों को प्राणी क्यों प्राप्त होता है? शास्त्र में उत्तर प्रदान करते हुए कहा गया है कि जन्म-मृत्यु, बुढ़ापा और बीमारी की स्थिति आने का कारण मोह है। मोह आत्मा के साथ जुड़ जाता है तो आत्मा शरीर में आती है और शरीर में आने के लिए उसे जन्म भी लेना पड़ता है, फिर बुढ़ापा, बीमारी और फिर कभी मृत्यु को भी प्राप्त होती है।

मोह का परिवार बहुत बड़ा है। इसके कुल 28 सदस्य बताए गए हैं। मोह चेतना को मूढ़ (विकृत) बनाने वाला होता है। प्रकृति में रहने वाली आत्मा को विकृति में ले जाने वाला मोहनीय कर्म ही होता है। अहंकार, ममता, गुस्सा आदि सभी मोहनीय कर्म के प्रभाव के कारण होते हैं। इन व्यवहारों से आत्मा के मोहनीय कर्म का बंध होता रहता है। बंध जब उदय में आता है तो जीव एक योनि से दूसरी योनि में अथवा एक ही योनि में बार-बार जन्म-मरण करता रहता है।

आत्मा को शाश्वत कहा गया है, परन्तु आत्मा का पर्याय परिवर्तन होता रहता है। आज जो मनुष्य हैं, वे अतीत में देवता के रूप में, कोई नारक, कोई तिर्यंच, तो कोई मनुष्य से ही मनुष्य बना है। इस प्रकार मोह के कारण ही जन्म-मरण की प्राप्ति होती रहती है। जन्म-मरण को दुःख बताया गया है। इसके साथ बुढ़ापा और बीमारी भी दुःख बताए गए हैं। जीवन मिला है तो उसे कैसे जीना है, इसका ध्यान रखने का प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति को अपने जीवन को अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिए। जीवन को अच्छा बनाने के लिए व्यक्ति को मोह को कम करने का प्रयास करना चाहिए। लोभ को भी जहाँ तक संभव हो सके, कम करने का प्रयास होना चाहिए। इन सभी को कम करते-करते ये हमेशा के लिए समाप्त हो जाएं तो फिर आत्मा का कल्याण हो जाएगा और जीव जन्म-मरण की प्रक्रिया से मुक्त भी हो सकता है। अध्यात्म की साधना मुख्यतया मोह को क्षीण करने की साधना होती है। साधना करते-करते कभी चौदहवां गुणस्थान प्राप्त हो जाए और संपूर्ण संवर की स्थिति बन जाए तो फिर मोक्षश्री का वरण हो ही जाता है। इसलिए मोह को ही पुनर्जन्म का आधारभूत तत्त्व कहा जाता है। जैन दर्शन पुनर्जन्मवाद को मानने वाला है। पुनर्जन्म, पाप-पुण्य, मोक्ष आदि न हों तो फिर अध्यात्म की सार्थकता ही सिद्ध नहीं हो सकती। इसलिए जन्म-मरण से मुक्ति के लिए व्यक्ति को धर्म-अध्यात्म की साधना करने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने मंगल प्रवचन के उपरान्त तेरापंथ प्रबोध के आख्यान से सभी को लाभान्वित किया। आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त साध्वीवर्याजी ने उपस्थित जनता को उद्बोधित किया। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में अनेकानेक तपस्वियों ने अपनी-अपनी तपस्या का श्रीमुख से प्रत्याख्यान किया। तेरापंथी सभा (अहमदाबाद) के चिकित्सा सहप्रभारी राकेश सिपाणी ने चिकित्सा संबंधी अपनी अभिव्यक्ति दी। पंजाब से संघबद्ध रूप में पहुंचे श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री के समक्ष उपस्थित होकर अपनी अर्ज रखी।

स्वयं को ही भोगना होता है अपना कर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
15 अगस्त, 2025

महायोगी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि प्राणी सुख भी भोगता है और दुःख का अनुभव भी करता है। जो भी सुख-दुःख होता है, वह अपना-अपना होता है। अपने किए हुए कर्म प्राणी को स्वयं ही भोगना होता है। दूसरे उस कर्म को सहभागी बनकर नहीं भोगते। सहयोग मौके पर कर भी दें तो वह ऊपरी तौर पर होता है। आखिर अपना कर्म स्वयं को ही भोगना होता है। दूसरा कोई कष्ट देता है यह एक निमित्त की बात है। कई बार ऐसी आशंका भी हो जाती है कि उसने मेरा बिगाड़ कर दिया, तंत्र-मंत्र से व्यापार आदि में बाधा पहुँचा दी। यह बात स्थूल दृष्टि से ठीक हो सकती है, परन्तु यदि हम सूक्ष्म दृष्टि में जाएँ, निश्चय की दृष्टि से सोचें और जैनिज्म के कर्मवाद के अनुसार विचार करें तो दूसरा निमित्त भले ही बन जाए, परन्तु आदमी के स्वयं के कर्म ही उसे दुःख देते हैं। इसलिए शास्त्र की वाणी है कि यह जानकर कि सुख और दुःख अपना-अपना होता है, मैं पाप न करूँ, प्रमाद में न जाऊँ, ताकि मुझे भविष्य में दुःख के दिन देखने न पड़ें।

प्राणी जो कुछ करता है उसका पूरा हिसाब रहता है और उसका फल प्राणी को भोगना पड़ता है, चाहे किसी भी जन्म में भोगना पड़े। इस जन्म में कोई ऐसा कार्य न भी किया हो तो पिछले जन्म में किए हुए कर्म अपना फल दे सकते हैं। भगवान महावीर के पूर्व जन्मों को देखें तो उन्हें भी अपने कर्म भोगने पड़े। त्रिपृष्ट वासुदेव बनने के बावजूद भी उन्हें अगले भव में सातवीं नरक में जाना पड़ा।

आदमी की आत्मा यदि कर्मों के बंधन से मुक्त हो जाए और सिद्धत्व को प्राप्त कर ले तो दुःखों से पूर्णतया मुक्ति मिल जाती है। वर्तमान जीवन में भी यदि कषायों को प्रतनु बना दें तो आत्मा बड़ी सुखी हो सकती है। हमारी आत्मा मोहनीय कर्म के सदस्यों जैसे क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष आदि से जकड़ी हुई है। ये आत्मा को कहाँ से कहाँ धकेल देते हैं। आदमी हिंसा, अपराध में चला जाता है। न चाहते हुए भी ऐसे कामों में प्रवृत्त होने का कारण भी राग-द्वेष के भाव हैं।

मानव जन्म मिलना और धार्मिक संस्कार मिलना बड़ी बात है। कई मानव बन गए पर वे धर्म-कर्म नहीं जानते, हिंसा

आदि में रहते हैं। वे इस मानव जीवन में भी पाप-कर्म करके अधोगति में जा सकते हैं। जिसे यह जन्म अच्छे कुल में मिले, धर्म के संस्कार मिलें, साधु-संतों का योग मिले और वह आदमी धार्मिक बन जाए, तो यह जीवन की एक बड़ी उपलब्धि होती है। छोटी उम्र में साधुत्व आ जाना और अंतिम समय तक अखण्ड साधुपन पालना बहुत अच्छी उपलब्धि है।

जीवन में यदि कभी निंदा, विरोध आदि हो जाए तो इनको लेकर न तो दिमाग में तनाव लाना चाहिए, न बैर-विरोध में पड़ना चाहिए और न ही अनावश्यक जवाब देना चाहिए। अच्छा काम करते रहें, दूसरों का भी कल्याण हो—यह भावना और प्रयास होना चाहिए।

आज स्वतंत्रता दिवस है, यह भारत के लिए बहुत गौरवशाली दिन है। आचार्य तुलसी के आचार्यकाल में भारत को आज़ादी मिली थी। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत-आंदोलन चलाया था। आज़ादी के साथ देश में नैतिकता, अहिंसा, ईमानदारी के संस्कार रहें और साम्प्रदायिक सहिष्णुता बनी रहे। स्वतंत्र तो हों पर स्वच्छंद न बनें। भारत में अभी लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था है। इसमें अनुशासन और कर्त्तव्यनिष्ठा का होना आवश्यक है। भारत का भौतिक, आर्थिक विकास भी हो, साथ ही आध्यात्मिकता का भी विकास हो। शिक्षा का अच्छा विकास हो, अच्छे संस्कारों का विकास हो, हमारे आचार-विचार अच्छे रहें, मैत्री भाव रहे और सांप्रदायिक उन्माद न रहे। तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन के अंतिम दिन गुरुदेव ने महासभा व सभाओं से धर्मसंघ से जुड़ी मर्यादाओं के प्रति यथोचित निष्ठा और जागरूकता रखने हेतु कहा। मर्यादाओं का मान-सम्मान रखें, विधान के प्रति जागरूक रहें और अनावश्यक उल्लंघन न हो। पर्युषण में अच्छी धार्मिक आराधना चले और धर्म की प्रभावना होती रहे। मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने 'तेरापंथ प्रबोध' के आख्यान क्रम को आगे बढ़ाया। तत्पश्चात साध्वीवर्या साध्वी सम्बुद्धयशाजी ने समुपस्थित संभागी प्रतिनिधियों एवं श्रद्धालुओं को उद्बोधित किया। महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने 'आचार्यश्री महाश्रमण इंटरनेशनल स्कूल' आदि के संदर्भ में अपनी प्रस्तुति दी। आचार्यश्री की सन्निधि में स्कूल से संबंधित एक डॉक्यूमेंट्री भी प्रदर्शित की गई। अहमदाबाद ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी तथा तदुपरान्त तेरापंथ किशोर मण्डल-अहमदाबाद ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

अभिनिष्क्रमण

संत भीखणजी ने चैत्र शुक्ला नवमी (सं. १७१८) बगड़ी में अभिनिष्क्रमण किया। उनका पहला प्रवास-स्थल था जैतसिंहजी की छतरी। जिस श्मशान भूमि में लोग अंतिम प्रवास करते हैं, उस श्मशान भूमि में आचार्य भिक्षु ने पहला प्रवास किया।

आचार्य रुघनाथजी ने संत भीखणजी से कहा– यह दुःषम काल है। इसमें पूरी साधुता निभ नहीं सकती।

संत भीखणजी ने कहा– दुःषम काल का यह तात्पर्य नहीं है कि उसमें धर्म की पूर्ण साधना नहीं की जा सकती। भगवान् महावीर ने भी यही कहा है– जो शिथिलाचारी और पुरुषार्थहीन होंगे, वे ही ऐसा कहेंगे कि इस काल में शुद्ध चरित्र नहीं पाला जा सकता।

आचार्य रुघनाथजी बोले– भीखणजी! अभी पांचवां आरा है। इस काल में कोई दो घड़ी शुद्ध साधुपन पाल ले तो वह सर्वज्ञ हो जाए।

भीखणजी ने कहा– यदि, दो घड़ी में ही सर्वज्ञता प्राप्त होती है तो इतने समय तक तो मैं श्वास बंद कर भी रह सकता हूं।

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

बारह व्रत का अधिकारी कौन?

बारह व्रती बनने में लिंग, रंग और जाति बाधक नहीं हैं। तत्व की सही समझ और व्रतों के स्वीकरण से व्यक्ति साधक बन सकता है। चार गति, छः काय, नौ तत्व, छः द्रव्य, आठ कर्म और देव-गुरु-धर्म को जानने वाला सम्यक्त्व का अधिकारी बन जाता है। तथा शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा और आस्था के प्रति जागरूक रहने वाला सम्यक्त्व को पुष्ट कर लेता है। यथाशक्ति बारह व्रतों को स्वीकार कर वह पंचम गुणस्थान का अधिकारी बन सकता है। श्रावकाचार की मूल पृष्ठभूमि तत्व ज्ञान और धर्म श्रद्धा है, इसी के आधार पर व्रतों का महल खड़ा किया जा सकता है। तत्वज्ञान की प्रारंभिक जानकारी के अभाव में बारह व्रतों को साधना यथोचित लाभ नहीं देती है।

क्या आप जानते हैं?

धनिया, पुदीना, नारियल आदि की चटनी में यदि टमाटर आदि के बीज साबुत रह जाएँ या पत्ती बिना पीसी रह जाए तो उस चटनी को सचित्त माना जाता है। भले वह प्रक्रिया मिक्सी आदि किसी भी विधा से की गई हो।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह प्रतिदिन 13 द्रव्यों से अधिक खाने का त्याग करें।

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

रोटी के लिए कैसे छोडूं?

एक बहिन बहुत बार स्वामीजी से आहार लेने के लिए प्रार्थना करती थी– कभी मेरे घर भी आप गोचरी के लिए पधारें। एक दिन स्वामीजी उसके घर पर पधारे। वह स्वामीजी से बहुत राजी हुई और आहार देने लगी।

तब स्वामीजी ने पूछा– 'लगता है, तुम्हें हाथ तो धोने पड़ेंगे।' तब वह बोली– 'हाथ तो धोने पड़ेंगे।' तब स्वामीजी ने पूछा– 'हाथ सजीव पानी से धोओगी या गरम पानी से?'

तब वह बोली– 'गरम पानी से धोऊंगी।'

तब स्वामीजी बोले– 'कहां धोओगी?'

तब उसने नाली की ओर संकेत करते हुए कहा– 'यहां धोऊंगी।'

तब स्वामीजी ने कहा– 'यह पानी कहां गिरेगा?'

तब उसने कहा– 'यह नीचे गिरेगा।'

स्वामीजी ने कहा– 'नीचे पानी गिरने से वायुकाय आदि जीवों की हिंसा होगी, इसलिए मैं तुम्हारा आहार नहीं ले सकता।'

तब वह बोली– 'आप तो आहार देखकर ले लें। हम गृहस्थ हैं और अपना कार्य करते हैं, उसमें आपको क्या आपत्ति होती है? हमारी सांसारिक क्रिया हम कैसे छोड़ेंगे?

तब स्वामीजी ने कहा– 'बहिन! तुम्हारी इस कर्म बंधन करने वाली सावद्य क्रिया को भी तुम नहीं छोड़ती हो तो रोटी के लिए मैं अपनी निरवद्य क्रिया को कैसे छोडूं?' यह कह कर स्वामीजी वहां से चले गए।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 अगस्त - 31 अगस्त, 2025

अप्रमाद की साधना में करें उत्थान : आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि पारसकुमारजी ने श्रीमुख से 52 दिन की तपस्या का किया प्रत्याख्यान

कोबा, गांधीनगर।
14 अगस्त, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि अर्हत् वंदना का पाठोच्चारण करते समय एक सूत्र आता है— "उट्ठिए णो पमायए।" जब आदमी अध्यात्म की आराधना के लिए उठ खड़ा हो जाता है, उसमें प्रस्थान कर देता है, तब बीच में या बाद में प्रमाद नहीं करना चाहिए। अप्रमाद का सूर्य उग गया है, अब प्रमाद का बादल आड़े नहीं आना चाहिए। अप्रमाद की साधना में जो उत्थान करता है, मोहनीय कर्म का बादल अप्रमाद को आवृत करने का प्रयास कर सकता है, पर यदि आदमी जागरूक रहे और बादल को दूर करने का प्रयास करे तो बादल हट जाने पर सूर्य का प्रकाश हमें प्राप्त हो सकता है। जैसे पानी के ऊपर यदि शैवाल न हो तो ऊपर की वस्तु दिखाई दे सकती है।

आयारो में संदेश दिया गया है कि उठ गए हो, अब प्रमाद मत करो। कहीं जाने के लिए जब हम तैयार हो जाते हैं और गति प्रारंभ कर देते हैं तो बीच में आलस्यवश गति को रोकना नहीं चाहिए। चलते रहो। साधना के क्षेत्र और अध्यात्म के जगत में मोहनीय कर्म के उदय और विलय का कई बार संघर्ष चलता है। कहीं आत्मा का पुरुषार्थ बलवान होता है तो वह मोहनीय कर्म को दूर कर देता है, और कहीं मोहनीय कर्म प्रबल होता है तो वह आत्मा की आध्यात्मिकता अथवा उसके तेज को मंद कर सकता है।

जीव में कुछ न कुछ प्रकाश तो अल्प रूप में रहता ही है। ज्ञानावरणीय कर्म ज्ञान को आवृत करता है, परन्तु पूर्णतया आवरण नहीं करता। सूक्ष्म जीवों में भी थोड़ा-थोड़ा प्रकाश रहता है। निगोद के जीवों तथा स्थावर कायिक जीवों में भी ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम रहता ही रहता है।

जैन दर्शन और तेरापंथ दर्शन की दृष्टि से अज्ञान दो प्रकार का होता है। पहला अज्ञान है—ज्ञान का अभाव। दूसरा अज्ञान है—मिथ्या दृष्टि के पास जो बोध चेतना है, वही अज्ञान। दोनों में बड़ा अंतर है। ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से जो अज्ञान होता है, वह ज्ञान का अभाव है। दूसरा अज्ञान पात्र के मिथ्या दृष्टि होने के कारण है। उसके पास ज्ञान है, बोध है, फिर भी वह अज्ञान कहलाता है। मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग अज्ञान—ये ज्ञान के अभाव रूप नहीं हैं, बल्कि ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न अज्ञान हैं। इसी प्रकार मिथ्या दृष्टि भी दो प्रकार की होती है—एक मिथ्यादृष्टि मोहनीय कर्म के उदय से और दूसरी मिथ्यादृष्टि मोहनीय कर्म के क्षयोपशम भाव से। उदय भाव त्याज्य है, जबकि क्षयोपशम भाव मिथ्यादृष्टि का गुणरूप है। मिथ्यात्वी के पास जो सही श्रद्धान है, वह उसका क्षयोपशम भाव है।

शास्त्र में सुंदर संदेश दिया गया है कि उठ गए हो, अब प्रमाद मत करो। जगने के बाद आलस्य न करके अपने आपको सामायिक, स्वाध्याय आदि में नियोजित करना चाहिए। कोई त्याग लेने के बाद प्रमादवश नियम भंग नहीं करना चाहिए, अपितु दृढ़ता से पालन करना चाहिए।

पावन पाथेय के पश्चात् आचार्यश्री ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान को आगे बढ़ाया। मुनि पारसकुमारजी ने आचार्यश्री के श्रीमुख से 52 दिनों की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि तेरापंथी महासभा एक महनीय संस्था है और पूज्य गुरुदेव ने इसे शिरोमणि संस्था का दर्जा प्रदान किया है। संस्था के सदस्यों की सकारात्मक सोच, उसकी रचनात्मक प्रवृत्तियों तथा समाजहित के चिंतन के कारण ही यह संस्था अपनी स्थापना के एक सौ वर्षों बाद भी ऊर्जावान बनी हुई है।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में 'संस्था शिरोमणि' जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन के मध्य दिन पुरस्कार एवं सम्मान अर्पण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें भीखमचंद पुगलिया (कोलकाता) को तेरापंथ संघ सेवा सम्मान व सीए सोहनराज चौपड़ा (अहमदाबाद) को आचार्य तुलसी समाज सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया। इस संदर्भ में महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अपनी अभिव्यक्ति दी। प्रशस्ति पत्र का वाचन महासभा के उपाध्यक्ष विजय चौपड़ा तथा फूलचन्द छत्रावत ने किया। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

सोहनराज चौपड़ा की ओर से उनकी धर्मपत्नी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। इस उपक्रम का संचालन महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।